## पत्रिका के लिए सम्पर्क

### मध्यप्रदेश

| | | |
|---|---|---|
| सौसर | - लीलाधर सोमकुवर | 8878577473 |
| | मोरेश्वर रंगारे | 9617145254 |
| पांढुर्णा | - सुभाष सहारे | 9753899561 |
| | राजेन्द्र सोमकुवर | 9893378559 |
| बोरगाव (रेमण्ड) | अशोक कडबे | 9424938454 |
| सिवनी | - पी.सी. टेम्भरे | 9425426500 |
| जबलपुर | - एल.एम.खोब्रागडे | 9685572100 |
| | डोमाराव खातरकर | 9770026154 |
| भोपाल | - राहुल रंगारे | 9893690451 |
| सिहोर | - रवीन्द्र बांगरे | 9425842508 |
| छिन्दवाड़ा | - एस.सी.भाऊरजार | 9893880415 |
| सारणी | - किरण तायडे | 9407282113 |
| गुना | - लक्ष्मणसिंह बौद्ध | 9827309472 |
| दतिया | - आशाराम बौद्ध | 9893997750 |
| मंडला | - अमरसिंग झारीया | 9993881515 |

### छत्तीसगढ़

| | | |
|---|---|---|
| चरोदा (भिलाई) | - मोरश्वर मेश्राम | 9827871848 |
| रायपुर | - सुनील गणविर | 9753232894 |
| राजनांदगाव | - रामप्रसाद नंदेश्वर | 8103907945 |
| बिलासपुर | - हरीश वाहाने | 9424169477 |
| चाम्पा | - संजीव सुखदेवे | 9425575730 |
| सारंगढ़ | - नरेश बौद्ध | 7828173910 |

### उत्तरप्रदेश

| | | |
|---|---|---|
| लखनऊ | - निगमकुमार बौद्ध | 9415750896 |
| मोठ(झांसी) | - महेश गौतम | 9452118038 |
| आगरा | - जितेन्द्र प्रसाद | 9927256608 |
| झांसी | - अमरदीप | 9695529570 |

### महाराष्ट्र

| | | |
|---|---|---|
| नागपुर | - दादाराव वानखेडे | 9423102300 |
| जाफराबाद | - बुद्धप्रिय गायकवाड | 9764538108 |
| अमरावती | - बापू बेले | 9403593773 |
| मोर्शी | - देवेन्द्र खांडेकर | 9370197740 |
| पुणे | - प्रशांत घंघाळे | 9765915686 |
| मूल | - हंसराज कुंभारे | 9763694293 |
| मुम्बई | - राजु कदम | 9224351635 |
| वरोरा | - भाऊराव निरंजने | 7875902211 |
| चंद्रपुर | - रामभाऊ वाहाने | 9421879386 |
| ब्रह्मपुरी | - प्रा. एस.टी.मेश्राम | 9766938647 |

त्रैमासिक
# प्रज्ञा प्रकाश

## अनुक्रमणिका


- संपादकीय ..... 02
- हमें बुद्ध धम्म का पालन दृढ़ निश्चय पूर्वक करना चाहिए! - बाबासाहेब आंबेडकर..... 03
- वेद और गीता मद्रास, 24 मई 1944 - बाबासाहेब आंबेडकर..... 10
- वेद और गीता पुणे, 29 नवम्बर 1944 - बाबासाहेब आंबेडकर..... 11
- क्रान्ति तथा प्रतिक्रान्ति - बाबासाहेब आंबेडकर..... 13
- बुद्ध और उनका धम्म कुलीनों तथा पवित्रों की धम्म -दीक्षा..... 16
- वर्तमान घटनाक्रम..... 21
- न्यायपालिका ..... 35
- समिति द्वारा सम्पन्न कार्यक्रम ..... 38
- समिति के आगामी कार्यक्रम .....39


त्रैमासिक
प्रज्ञा प्रकाश

**नियमित पढ़िए और दूसरों को पढ़ने दें.**
**क्योंकि यह भी एक समाजकार्य है.**

**प्रज्ञा प्रकाश की वार्षिक सदस्यता - रू. 80**

**सदस्यता राशि इस पते पर भेजें**
**हवेश सोमकुवर,**
**सम्पादक**
**'प्रज्ञा प्रकाश' 363, बाबा बुद्धाजी नगर,**
**कामठी रोड, नागपुर-440 017.**

**अगले अंक से 'प्रज्ञा प्रकाश' का मुल्य रू. 20/- होगा। तथा वार्षिक सदस्यता शुल्क रू. 80/- होगा।**

# संपादकीय

भारतीय संविधान की प्रस्तावना में धर्मनिरपेक्ष यह शब्द सन 1976 के बाद (42वे संशोधन के बाद) जोडा गया। धर्मनिरपेक्षता का मतलब है, सर्वधर्म समभाव। डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यह जानते थे कि मानव-मानव के बीच भेद करने वाला धर्म और मानवों के बीच समता सिखाने वाला धर्म, इन दोनों के प्रति समभाव नही हो सकता। इसलिए संविधान निर्मिती के समय प्रारंभ में धर्मनिरपेक्ष यह शब्द संविधान की प्रस्तावना में नही था।

हमारे देश को "भारत" नाम से मान्यता प्राप्त हैं। हमारे संविधान में भी इसी शब्द का प्रयोग किया गया है। परन्तु राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और भारतीय जनता पार्टी के नेता हमारे देश का मान्यता प्राप्त नाम छोडकर उसे हिन्दुस्थान नाम से संबोधित करते है। इतना ही नही तो अन्य नेता और मिडिया में भी हमारे देश को हिन्दुस्थान नाम से ही संबोधित किया जाता है। ऐसा करने के पिछे इन लोगों का षडयंत्र है। इसे भारत वासीयोंने समझने की आवश्यकता है।

राष्ट्रीय स्वयं-सेवक संघ भारत को हिन्द राष्ट्र बनाने का सपना देख रहा है। उसके सरसंघचालक मोहन भागवत ने तो यह कह डाला कि हिन्दुस्थान में रहने वाला हर नागरिक हिन्दु है। जब की वास्तविकता सभी जानते है कि हमारे देश में हिन्दुओं के अलावा अन्य धर्मो के भी लोग रहते है। इसलिए इस देश का हर नागरिक हिन्दु नही हो सकता। कुछ हिन्दु समर्थकों द्वारा यह दलील दी जाती है कि सर्वोच्च न्यायालय ने यह माना है कि हिन्दु धर्म न होकर जीवन जीने की कला है। सभी धर्म, उनकी मान्यता के अनुसार, आदमी को कैसे जीवन जीना चाहिए, यही सिखाते है। इसलिए यह कहा जा सकता है की सभी धर्म जीवन जीने की कला है। अतः जीस प्रकार अन्य धर्म है उसी प्रकार हिन्दु धर्म भी है। भारत के इतिहास के अनुसार भारत में सर्व प्रथम वैदिक धर्म था, उसके बाद बुध्द धम्म और बाद में हिन्दु धर्म का प्रार्दुभाव हुआ है। हिन्दु धर्म के कुछ साधु वैदिक धर्म को सनातन धर्म कहते है और हिन्दुओं को वैदिक धर्म या सनातन धर्म के अनुसार आचरण करने की ताकिद देते है। विषमता यह वैदिक धर्म और हिन्दु धर्म की रीढहै। हिन्दु धर्म के लोगों को हजारों जातीयों में बाटा गया है और उंची जातीयों के लोगों द्वारा निचि जाती के लोगों का शोषण किया जा रहा है। क्या ऐसी विषमतावादी और शोषणकारी व्यवस्था भारत में प्रस्थापित होनी चाहिए, इस पर भारत के प्रत्येक नागरिक ने मानवता की दृष्टी से विचार करने कि आवश्यकता है।

भारत मे गलत तरिके से धन कमाना आसान है उसी प्रकार मुर्ख बनाना भी आसान है। इस कमजोरी का लाभ ब्राम्हण सदियों से ले रहे है। 3 या 4 प्रतिशत होकर बाकी 96 या 97 प्रतिशत पर राज कर रहे है। वेदों मे मानव कल्याण की कोई भी बात नही इसके विपरित उनमे मानव के नुकसान की बात है परन्तु ब्राम्हणों ने लोगों को वेदों की महिमा इस तरह बताई की लोग वेदों को पवित्र मानने लगे अर्थात् लोगों को मुर्ख बनाया गया। तथागत बुध्द ने लोगों को मुर्खता से निकालकर बुध्दीमान बनाया। भारत मे बुध्द धम्म का प्रभाव लगभग दो हजार वर्षों तक रहा। इस काल मे बुध्दीज्म और ब्राम्हणीज्म के बिच संघर्ष होता रहा। आखीर, असत्य की सत्य पर जीत हुई और ब्राम्हणवाद प्रस्थापित होने लगा। भगवत गीता की निर्मिति की गई और लोगों को मुर्ख बनाने का सिलसिला फिर से शुरु हुआ। ब्राम्हणों ने लोगों के बिच पहुंचकर धार्मिक कार्यक्रमों के अवसर पर झुठ को महिमा-मंडीत किया और यह तब तक किया जब तक लोग झुठ को सच मान नही लिया। पिढी दर पिढी लोग झुठ को सच मानते रहे और आज भी मान रहे है क्योंकि झुठी मान्यता की लोगों के मन पर पकड को मजबुत करने का काम लगातार चल रहा है जिसे मोदी सरकार आने पर गति प्राप्त हो चुकी है। लोगों की भावनाओं भडकाकर उन्माद पैदा किया जा रहा है और मानव-मानव के बिच द्वेष पैदा किया जा रहा है। ब्राम्हणी साहित्य मे मनोरंजक कहानियां, भावनाओं को उत्तेजित करने वाली बातें, काल्पनिक बातें, चमत्कारीक बातें और कर्मकांडों मे उलझायें रखने वाली बातों के अलावा और कुछ नही है। भारतीय इसी मे उलझे रहने के कारण तरक्की नही कर पाये जब की 1945 मे तबाह हुआ जापान जैसा छोटा राष्ट्र विकास के शिखर पर है। यही कारण है कि मोदी को जापान से आर्थिक सहायता मांगणी पडी। सभी जानते है कि जापान बौध्द राष्ट्र है और बुध्द धम्म की विचार धारा ही उनकी प्रगती की कुंजी है। अति उत्साही मोदी ने जापान के सम्राट को गीता भेंट की और भारत की सबसे बडी कमजोरी को उस देश को बता

**शेष भाग पृष्ठ 37 पर**

# हमें बुद्ध धम्म का पालन दृढ़ निश्चय पूर्वक करना चाहिए !

**- डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर**

**(धम्मचक्र प्रवर्तन दीक्षाभूमि, नागपुर, दिनांक 15 अक्टूबर 1956)**

कल और आज सुबह बौद्ध दीक्षा लेने का और देने का विधि कार्यक्रम यहां सम्पन्न हुआ उसकी स्थिति के बारे में विचार करने वाले लोगों को कठिनाईयां हुई होंगी। उनके और मेरे विचारों से कल का कार्यक्रम आज और आज का कार्यक्रम कल होना था। हमने यह कार्य हाथ में लिया उसकी आवश्यकता क्यों है और उससे क्या होगा इसका विश्लेषण करना जरूरी है। वह समझ लेने से ही हमारे कार्य का आधार मजबूत होगा। यह समझाने का कार्य पूर्व में ही होना चाहिए था। परन्तु कुछ बातें ऐसी अनिश्चित होती हैं कि वह अपने आप होती हैं। अब इस विधि के बारे में जो होना था वह हो चुका है,परन्तु दिन में ऐसा बदल होने से कोई बहुत बडी त्रुटि नहीं हुई है।

बहुत से लोग मुझे पूछते है कि इस कार्य के लिए आपने नागपुर शहर ही क्यों चूना ? अन्य किसी स्थान पर यह कार्य क्यों नहीं किया ? कुछ लोग कहते हैं कि, आर.एस.एस.- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ- की-बड़ी संख्या यहां होने के कारण उनकी छाती पर हमने यह सभा इस शहर में की है। यह बिलकुल सत्य नहीं है। उसके लिए नागपुर में यह कार्यक्रम नहीं किया गया। हमारा इतना बड़ा कार्य है कि जीवन का एक-एक मिनट भी हमें कम प्रतीत होता है। अपना नाक खुजलाकर दुसरों को अपशकुन करने के लिए मेरे पास समय नहीं है।

इस स्थान को चुनने कारण भिन्न है। जिन्होंने बौद्ध इतिहास का अध्ययन किया है उन्हें समझ में आएगा कि भारत में बुद्ध-धम्म का प्रसार यदि किसी ने किया है तो वह नाग लोग है। नाग लोग आर्यों के बड़े शत्रु थे। आर्य और अनार्यो में लड़ाईयां और बड़े युद्ध हुए। आर्य लोगों ने नाग लोगों को जला दिया। इस प्रकार के उदाहरण पुराण में मिलते है। अगस्त मुनी ने उनमे से केवल एक नाग व्यक्ति को बचाया था। उसी के हम वंशज है। जिन नाग लोगोंने इतना छल सहन किया उन्हें उपर उठने के लिए किसी महापुरुष की आवश्यकता थी, उन्हें वह महापुरुष गौतम बुद्ध मिला। बुद्ध का उपदेश नाग लोगों ने संपूर्ण भारत में फैलाया। ऐसे हम नाग लोग है। ऐसा प्रतीत होता है कि नागपुर और उसके आसपास नाग लोगों की बस्ती थी इसलिए इस शहर को 'नाग-पूर' अर्थात नागों का गांव कहते है। यहांसे लगभग 27 मिलपर नागार्जुन की पहाडी हैं। करीब से बहने वाली जो नदी है वह नाग नदी है। इसका अर्थ यह है कि इस नदी का नाम यहां रहने वाले लोगों के नाम से पड़ा है। नागों की बस्ती से बहने वाली नदी नाग नदी है। यह स्थान चुनने का यह मुख्य कारण है। इसलिए नागपुर चुना है। इसमें किसी को चिढ़ाने का कहीं कोई प्रश्न नहीं है और वैसी भावना भी नहीं है। आर.एस.एस. का कारण मेरे मन में भी नहीं आया। वैसा किसी ने भी अर्थ नहीं निकालना चाहिये।

हो सकता है अन्य कारणों से विरोध लगता हो, परन्तु मैंने यह स्थान विरोध के लिए नहीं चुना। यह मैंने अभी बताया है। मैंने इस कार्य का प्रारंभ किया इसलिए अनेक लोगों ने और समाचार पत्रों ने मेरी आलोचना की है, कुछ आलोचना तीव्र है। उनके विचारो के अनुसार मै मेरी गरीब अस्पृश्य जनता को दिशाभूल कर रहा हूँ। जो आज अस्पृश्य है वह वैसे ही अस्पृश्य रहेगा और जो अधिकार उन्हें अब मिले है वह समाप्त होंगे ऐसा कहकर वह लोगों को बहका रहे हैं। वह हमारे कुछ अज्ञानी लोगों पगडंडी से चलो ऐसा कहते है। हो सकता है हमारे कुछ युवा और वृद्ध लोगों पर उसका परिणाम होता होगा। इसके कारण लोगों के मन में शंका निर्माण हुई होगी, तब उस शंका का निराकरण करना यह

हमारा कर्तव्य है और ऐसी शंका का निराकरण करना हमारे आंदोलन का आधार मजबूत करना है।

पिछली बार हमने मांस नहीं खाना चाहिए इसलिए आंदोलन किया था। उसकी वजह से स्पृश्य लोगों पर बडा संकट आया ऐसा उन्हें लगता था। उन्होंने जिंदा भैस का दूध पिना और भैस मरने के बाद मृत भैसे को हमने कंधो पर उठाकर ले जाना क्या यह विचित्र प्रकार नहीं है? हम उन्हें कहते हैं कि उनकी बूढी मां मरने के बाद वह हमें उसे ले जाने क्यों नहीं देते? मरी हुई भैस देते हैं उसी प्रकार बूढी मां भी देनी चाहिए। उस वक्त कोई व्यक्ति, केसरी समाचार पत्र के माध्यम से, किसी गांव में हर वर्ष 50 जानवर मरते हैं, उनके खाल की, सींगों की, हड्डीयों की, मांस की, पूंछ की और पांव की कुल कींमत 500 रुपये होती है और मृत मांस त्यागने से यह लोग इतनी प्राप्ती नहीं कर पायेंगे, ऐसा प्रचार किया करता था। उसके प्रचार का उत्तर देने की क्या आवश्यकता थी ? परन्तु हमारे लोगों को लगता था कि इस बात का उत्तर हमारे साहेब देते क्यों नहीं, साहेब करते भी तो क्या है ?

एक बार मैं संगमनेर गया था। सभा की समाप्ति के बाद शाम को भोजन की व्यवस्था की गई थी। उस वक्त केसरी के उस संवाददाता ने एक चिट्ठी मेरे पास भेजी और मुझसे पूछा, "आप आपके लोगों को मरे हुए जानवर ले जाने को मना करते है। उनके हालात कितने खराब है ? उनकी औरतों को साडी चोली नहीं है, उनके पास अनाज नहीं है, उनकी खेती नहीं है, उनकी ऐसी अत्यंत गंभीर परिस्थिति होने पर भी उनको हर वर्ष खाल, सींग और मांस से होनेवाली 500 रुपये आमदनी को छोड़ दो ऐसा आप उन्हें बताते हैं क्या यह आपके लोगों का नुकसान नहीं है ?"

मैंने कहा, इसका उत्तर आपको मैं कहाँ दू ? वह यहां बरामदे में दूं या सभा में दूं ? लोगों के सामने ही खुलासा होना अच्छा है। मैंने उस आदमी से पुछा, आपका कहना इतना ही है या और कुछ है ? उस आदमी ने कहा, "मेरा इतना ही कहना है, इसी का उत्तर दिजिए।" मैंने उस आदमी से पुछा आपको कितने लड़के है ? उसने कहा, मेरे पांच लड़के है और मेरे भाई को पांच-सात लड़के हैं। आपका परिवार बड़ा है, तब आपने और आपके रिश्तेदारों ने उस गांवके सभी मरे हुए जानवर ले जाना चाहिए और 500 रुपये का लाभ उठाना चाहिए। यह लाभ आपने अवश्य लेना चाहिये। इसके अलावा मै हर वर्ष आपको 500 रुपये अधिक देने की व्यवस्था करता हूँ। मेरे लोगों का क्या होगा, उन्हें अनाज, कपड़ा मिलेगा या नहीं इसका विचार मै करूंगा। इतना लाभ आप क्यों नहीं लेते ? आप वह काम क्यों नहीं करते ? हमने यह काम किया तो लाभ होगा और आपने किया तो लाभ क्यों नहीं ? ले जाईये न मरे हुए जानवर!

कल मेरे पास एक ब्राह्मण के लड़के ने आकर कहा, "पार्लियामेंट, असेम्बली में आपके लोगों को आरक्षण दिया गया है, उसे आप क्यों छोड रहे हैं ? मैंने उससे कहां आप महार हो जाईये और पार्लियामेंट असेम्बली में आरक्षण लीजिये। नौकरी का पद खाली रहा तो उसे भरा जाता है। उसके लिए ब्राह्मणों के और अन्य लोगों के अनेक आवेदन आते हैं। फिर जिस प्रकार नौकरियों के पद भरे जाते है उसी प्रकार यह आरक्षित पद आप ब्राह्मण लोग महार बनकर क्यों नहीं भरते हैं?

हमारा नुकसान हुआ तो आप क्यों रोते हैं, ऐसा मेरा उनसे प्रश्न है। 'आदमी को इज्जत प्यारी होती है, लाभ प्यारा नहीं होता।' सदाचारी और सद्‌गुणी स्त्री को व्यभीचार में कितना लाभ होता है इसकी जानकारी होती है। हमारी मुंबई में व्यभीचारी स्त्रियों की एक बस्ती है। वह स्त्रियां सुबह 8 बजे सोकर उठने के बाद बाजू के होटल में नाश्ता के लिए जाती है और कहती हैं, (बाबासाहब ने अपनी आवाज बदल कर नकल करते हुए कहा), अरे सुलेमान कीमा की प्लेट और पावरोटी लेकर आ। सुलेमान वह लेकर आता है, साथ में चाय, पाव केक भी लाता है। परंतु मेरी दलित बहनों को सादी चटनी रोटी भी नहीं मिलती फिर भी वह इज्जत के साथ रहती हैं। वह सदाचार से ही रहती हैं।

हम इज्जत के लिए लड़ रहे हैं। मनुष्यमात्र को पूर्णत्व की ओर ले जाने की हम तैयारी कर रहे हैं, उसके लिए जो भी त्याग करना पड़े हम उसके लिए तैयार है। यह समाचार पत्र के लोग (उनकी तरफ मुड़कर) पिछले 40 वर्षों से मेरे पिछे हाथ धोकर पड़े है। आज तक उन्होंने मेरी बहुत आलोचना की है! मै उनसे कहता हूँ, अब तो सोचो, अब तो लड़कपन की भाषा छोड़कर कुछ प्रौढ़ भाषा का इस्तेमाल करो।

हम बुद्ध धम्मीय होने के बाद भी हमारे राजनैतिक

अधिकार मैं प्राप्त करूंगा इसका मुझे पूरा यकीन है। (डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का जयघोष और जोरदार तालियां) मेरे मरने के बाद क्या होगा इसे मैं बता नहीं सकता। इस आंदोलन के लिए बहुत बड़ा काम करना पड़ेगा। हमने बुद्ध धम्म स्वीकार करने के बाद क्या होगा, मुसीबतें आयी तो उनसे कैसे बचना होना, उसके लिए क्या युक्तीवाद और कोशीश करनी होगी इसका मैंने पुरा विचार किया है। मेरी पोटली में सबकुछ है। वह किस प्रकार से रखा है इसकी मुझे पूरी जानकारी है। यह जो अधिकार प्राप्त किए हैं वह मैंने ही मेरे लोगों के लिए प्राप्त किए हैं। जिसने यह अधिकार दिलाये वही उन्हे फिर से दिलायेगा ही! यह अधिकार और सहुलियतें दिलाने वाला मैं ही हूँ और मै फिर से यह सहुलियतें दिलाऊँगा ऐसा मुझे पूरा भरोसा है। इसलिए आपने मुझ पर विश्वास करना चाहिये। विरोधी प्रचार में कुछ तथ्य नहीं इसे मैं सिद्ध कर दूंगा।

मुझे केवल एक बात का आश्चर्य हो रहा है। सब तरफ इतना वाद विवाद हो रहा है, परन्तु किसी ने भी मुझसे यह प्रश्न नहीं किया कि 'मैंने बुद्ध धम्म का ही स्वीकार क्यों किया।' अन्य किसी धर्म का स्वीकार न करते हुये यही धम्म क्यों स्वीकार किया। यह किसी भी धर्मांतर के आंदोलन का मुख्य और महत्वपूर्ण प्रश्न होता है। धर्मांतर करते समय कौन सा धर्म और उसे क्यों स्वीकार करना इसका पुरा परिक्षण कर लेना चाहिये। हमने हिन्दू धर्म छोड़ने का आंदोलन 1935 से येवले में निर्णय लेकर प्रारंभ किया था।"मैंने हिन्दू धर्म में जन्म लिया परन्तु हिन्दू धर्म में मरूंगा नहीं" ऐसी प्रतिज्ञा मै पुर्व में कर चुका था जिसे मैंने कल पुरा कर दिखाया। मुझे अत्याधिक आनंद हुआ है! मैं नर्क से मुक्ति पा चुका हूँ ऐसा मुझे लग रहा है। मुझे कोई अंधभक्त नहीं चाहिये। जिन्हे बुद्ध धम्म का स्वीकार करना है उन्होंने जानकारी के साथ स्वीकार करना चाहिये। उन्हे वह धम्म जचना (मान्य होना) चाहिए।

मनुष्यमात्र के उत्थान के लिए धर्म अति आवश्यक चीज है। मै जानता हूँ कि कार्ल मार्क्स के वचनों से एक पंथ बना है। उसके कहने के अनुसार धर्म कुछ भी नहीं। उन्हें धर्म का महत्व नहीं है। उनको सुबह ब्रेकफास्ट (नाश्ता) मिला, उसमें पाव, मलाई घी, मुर्गे की टांग इत्यादि होना। भरपेट खाना मिला, अच्छी नींद हुई और सिनेमा देखने को मिला तो सब कुछ समाप्त हो जाता है। यही उनका तत्वज्ञान है। मै उनके विचारों को स्वीकार नहीं करता हूँ। मेरे पिताजी गरीब थे इसलिए मुझे इस प्रकार का सुख नहीं मिला। मेरे समान कष्टमय जीवन किसी का भी नहीं रहा। इसलिए मै जानता हूँ कि आदमी का जीवन सुख के अभाव में कितना कष्टमय होता है । आर्थिक उन्नती का आंदोलन आवश्यक है, ऐसा मै मानता हूँ। मै उस आंदोलन का विरोधी नहीं हूँ। आदमी की आर्थिक उन्नति होनी ही चाहिये।

परन्तु मै इसमे एक महत्वपूर्ण अंतर करता हूँ। भैसा, बैल और आदमी इनमें अंतर है। भैसे को और बैल को रोज पशुआहार चाहिए और आदमी को भी अनाज चाहिये। परन्तु दोनों में अंतर यह है कि भैसे को और बैल को मन नहीं, आदमी को शरीर के साथ मन भी है। इसलिए दोनों का विचार होना चाहिये। मन का विकास होना चाहिए, मन सुसंस्कृत होना चाहिए, उसे सुसंस्कृत बनाना चाहिए। जिस देश के लोग आदमी का अनाज के अलावा सुसंस्कृत मन से कोई संबंध नहीं ऐसा कहते है, उस देश या उन लोगों से मुझे संबध रखने की आवश्यकता नहीं। जनता के साथ संबंध रखने के लिए आदमी शरीर जिस प्रकार निरोगी चाहिये उसी प्रकार सुदृढ शरीर के साथ मन भी सुसंस्कृत होना चाहिए।अन्यथा मानव जाति का विकास हुआ ऐसा नहीं कहा जा सकता।

आदमी का शरीर या मन रोगी क्यों होता है? उसका कारण यह है कि या तो उसे शारिरीक पीड़ा होगी या मन में उत्साह नहीं होगा। मन मे उत्साह नहीं तो प्रगति नहीं। उत्साह क्यों नहीं रहता ? उसका पहला कारण है कि आदमी को इस प्रकार रखा जाता है कि उसे ऊपर उठने का अवसर नहीं मिलता या आशा नहीं रहती। ऐसे समय उसमे उत्साह कैसे रह सकता है? वह रोगी ही होता है। जिस आदमी को अपने कार्य का फल मिलता है उसे उत्साह प्राप्त होता है। जब पाठशाला में शिक्षक कहता है कि यह कौन है, यह तो महार है, यह महार प्रथम श्रेणी में कैसे पास हो सकता है ? इसे प्रथम श्रेणी क्यों चाहिए ? तुम्हे तृतीय श्रेणी ही चाहिए, प्रथम श्रेणी तो ब्राह्मण को चाहिए, तब ऐसी अवस्था में उस लड़के में उत्साह कैसे होगा ? उसकी उन्नती कैसे होगी ? उत्साह

निर्माण होने का मूल मन में है। जिसका शरीर और मन स्वस्थ होते है, जो हिम्मतवाला होता है, मै किसी भी परिस्थिति में लढ़कर आगे बढ़ूंगा ऐसा जिसमें विश्वास है, उसी में उत्साह निर्माण होता है और उसी का उत्कर्ष होता है। हिन्दू धर्म में ऐसी विलक्षण तत्वप्रणाली उनके ग्रंथों ने बताई है कि उससे उत्साह निर्माण ही नहीं होता। आदमी को निरुत्साही करनेवाली पद्धति हजारों वर्षोंतक टिकी रही तो अधिक से अधिक बाबू बनकर पेट पालने वाले लोग पैदा होगे। इससे अधिक और क्या हो सकता है ? इन बाबुओंकी रक्षा करने के लिए बड़ा बाबू चाहिये।

आदमी के उत्साह का कारण है, मन। आप मिल के मालिकों के बारे में जानते है। वह मिल में मैनेजर नियुक्त करते है और उनसे मिल का काम करवाते है। यह मिल मालिक किसी न किसी व्यसन के आदी होते हैं। उनके मन का सुसंस्कृत विकास हुआ नहीं होता। हमारे मन में उत्साह निर्माण हो इसलिए हमने आंदोलन किया, तब कहीं हमारी शिक्षा प्रारंभ हुई। मैंने लंगोटी लगाकर शिक्षण लेना प्रारंभ किया। पाठशाला में मुझे पीने को पानी नहीं मिलता था। पाठशाला में बगैर पाणी के मैंने अनेक दिन गुजारे। मुंबई के एल्फिंसटन कॉलेज में भी ऐसी ही स्थिति थी। ऐसी परिस्थिती होगी तो क्या दूसरी अवस्था निर्माण हो सकती है । बाबूगिरीही निर्माण होगी।

मै जब दिल्ली की एक्सिक्युटिव कौंसिल में था तब लार्ड लिनलिथगो वाईसराय थे। मैंने उनसे कहा था, आप सभी सामान्य खर्च तो करते ही है परन्तु साथ मे मुसलमानों की शिक्षा के लिए अलीगढ़ यूनिवर्सिटी को देते हैं।उसी प्रकार बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय को आप तीन लाख रुपये देते है। लेकिन न तो हम हिन्दू हैं और न मुसलमान। हमारे लिए उनकी तुलना में हजार गुना करना चाहिए।हमारे लिए कमसे कम मुसलमानों के बराबर तो कीजिए। तब लिनलिथगों ने बताया कि आप इस संबंध लिखित रूप में लाइये। उनके अनुसार मैंने एक मेमोरेंडम लिखा। उसकी प्रति अब अभी भी मेरे पास है। यूरोपियन लोगों में बड़ी सहानुभूति थी। उन्होंने मेरी बात को स्वीकार किया। परन्तु प्रश्न पैदा हुआ कि यह रकम किस बात पर खर्च करनी चाहिए। उन्हें लगता था कि हमारी लड़कियां शिक्षित नहीं है, उन्हे शिक्षा देनी चाहिए, उनके लिए होस्टल बनाने चाहिए और उस पर यह रकम खर्च करनी चाहिए। हमारी लडकीयों को पढ़ाया, उन्हें सुशिक्षित बनाया भी, तब उनके घर में भिन्न-भिन्न पकवान बनाने के लिए समान कहां है ? अंत में उनकी पढ़ाई का क्या परिणाम निकलेगा ? सरकार ने अन्य बातों पर रकम खर्च की और शिक्षा की रकम रोककर रखी।

इसलिए एक दिन मै लिनलिथगो के पास गया और शिक्षा पर खर्च के बारे में बात की और कहा, आप नाराज नहीं होंगे तो आपसे मै एक प्रश्न पूछता हूँ। क्या मैं अकेला 50 ग्रेजुएट के बराबर हूँ? उन्होंने इसे मान्य किया। फिर मैंने उनसे पूछा, इसका कारण क्या है ? उन्होंने कहा, वह कारण मै जानता नहीं। मैंने कहा कि मेरी विद्वत्ता इतनी बड़ी है कि मैं राजमहल के शिखर पर बैठ सकता हूँ। मुझे ऐसे आदमी चाहिये, क्योंकी वहांसे सब तरफ नजर रखी जा सकती है। हमारे लोगों का संरक्षण करना है तो ऐसे लक्ष्यवेधी लोग निर्माण होने चाहिए। बाबू क्या कर सकता है? मेरे कहने से लिनलिथगो सहमत हुए और उस वर्ष 16 विद्यार्थी उच्च शिक्षा के लिए विलायत भेजे गए। यह बात और है कि, जैसे मटके कुछ पक्के और कुछ कच्चे होते हैं, उसप्रकार उन 16 में से कुछ कच्चे और कुछ पक्के निकले। आगे चलकर राजगोपालाचारी ने उच्च शिक्षा की योजना समाप्त कर दी।

इस देश में हमें हजारों वर्षों तक निरुत्साही बनकर रहना होगा ऐसी परिस्थिति है। यह परिस्थिति जब तक है तब तक हमारी उन्नति के लिए उत्साह निर्माण होना संभव नहीं। इस संबंध में, इस धर्म में रहकर हम कुछ भी नहीं कर सकते। मनुस्मृती में चातुर्यवर्ण बताया गया है। चातुर्यवर्ण व्यवस्था मनुष्यमात्र की उन्नती के लिए बहुत घातक है। मनुसमृति मे लिखा है कि, शुद्रों ने केवल सेवा करनी चाहिए। उन्हें शिक्षा की क्या आवश्यकता है? ब्राम्हणोंने शिक्षा लेनी चाहिए, क्षत्रियोंने शस्त्र धारण करने चाहिए, वैशों ने व्यवसाय करना चाहिये और शुद्रों ने सेवा करनी चाहिये। यह व्यवस्था कौन बदल सकता है ? ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों को कुछ न कुछ फायदा है, परन्तु शुद्रों को क्या फायदा है ? तीन वर्ण के अलावा अन्य जातियों मे क्या उत्साह निर्माण हो सकता है ? चातुर्वर्ण व्यवस्था कुछ साधारण चीज नहीं, वह परंपरा नहीं, वह धर्म है।

हिंन्दु धर्म में समता नहीं। एक बार मै गांधी से मिलने गया था तब उन्होंने कहा था कि वह चातुर्वर्ण को मानते है। मैंने कहां आपके जैसे महात्मा चातुर्वर्ण को मानते है तब यह चातुर्वर्ण कौनसा और कैसा है? (हाथ की उंगलियां एक दुसरे पर आयेगी ऐसा हाथ करके) यह चातुर्वर्ण उलटा या पुलटा, चातुर्वर्ण की शुरुवात किधर से और अंत कहां पर ? गांधीने इन प्रश्नों का उत्तर नहीं दिया, देंगे भी तो क्या ? हमारा जिन लोगों ने नाश किया उनका भी इस धर्म से नाश होगा। यह मै हिन्दू धर्म पर ऐसाही आक्षेप नहीं ले रहा हूँ। हिन्दु धर्म के कारण किसी का भी उद्धार नहीं हो सकता। वह धर्म ही नष्ट धर्म है।

हमारे देश में दूसरों की सत्ता क्यों आयी ? यूरोप में 1945 तक युद्ध जारी था। जितने सेना के जवान मरते थे उतने भरती किए जाते थे। उस समय कोई भी यह नहीं कह सका कि उन्होंने युद्ध में विजय हासिल की। हमारे देश में सबकुछ निराला है। क्षत्रिय मर गये तो हम समाप्त ! यदि हमें शस्त्र धारण करने का अधिकार होता तो यह देश परतंत्र नहीं होता। फिर कोई भी इस देश पर विजय हासिल नहीं कर सकते थे।

हिन्दू धर्म में रहकर किसी का भी कोई उद्धार नहीं हो सकता। हिन्दू धर्म की रचना के अनुसार उँचे वर्ण और जातियों को फायदा है, लेकिन बाकी के लोगों का क्या है ? ब्राह्मण स्त्री प्रसूत होती है तो उसकी नजर हाईकोर्ट के जज का स्थान कहाँ रिक्त है, उस पर होती है। हमारी झाडू लगाने वाली स्त्री जब प्रसूत होती है तब उसकी नजर झाडू लगाने वाले का स्थान कहां रिक्त है , उस पर होती है। ऐसी विचित्र रचना हिन्दू धर्म की वर्ण व्यवस्था ने की है। उसमे विकास कैसे हो सकता है ? केवल बुद्ध धम्म में ही उन्नती हो सकती है। बुद्ध धम्म में 75 प्रतिशत ब्राह्मण थे और 25 प्रतिशत शुद्र आदि थे। परन्तु बुद्ध ने बताया कि, "भिक्षुओं, तुम भिन्न-भिन्न देश और जाति से आये हो। जब नदियां अपने प्रदेश में बहती है तो पृथक-पृथक होती हैं, लेकिन वह जब समुद्र में मिलती है तब पृथक नहीं रहती, वह एक जान और एक समान हो जाती है। बौद्ध संघ यह समुद्र के समान है, इस संघ में सभी एक जैसे और समान हैं। "समुद्र में विलीन होने के बाद गंगा और महानदी के पानी की पहचान करना संभव नहीं है। उसी प्रकार संघ में प्रवेश के बाद उसकी जाति नहीं रह जाती और सभी समान होते है। ऐसी समता बताने वाला केवल एक ही महापुरुष है और वह महापुरुष है, तथागत बुद्ध।

कुछ लोग कहते हैं कि, आपने धर्मांतर के लिए इतनी देर क्यों की? इतने दिन क्या कर रहे थे ? यह प्रश्न महत्वपूर्ण है। धर्म समझाना यह आसान काम नहीं है। वह एक आदमी का काम नहीं है। धर्म के बारे में विचार करने वाला कोई भी आदमी इस बात को समझ सकता है। मुझ पर जितनी जिम्मेदारी है उतनी संसार के अन्य किसी आदमी पर नहीं है। मुझे अधिक उम्र मिली तो मेरा सोचा हुआ कार्य पूरा करूंगा। (बाबासाहेब अमर रहें का जयघोष)

कुछ लोग कहेंगे कि महार बौद्ध होंगे तो क्या होगा ऐसा उन्होंने नहीं कहना चाहिये। मै उन्हें बताता हूँ, ऐसा कहना उनके लिए धोकादायक होगा। बड़े और धनवान लोगों को धर्म की आवश्यकता महसूस नहीं होगी। उनमे से अधिकार सम्पन्न लोगों को रहने के लिए बंगला है, उनकी सेवा करने के लिए नौकर है, उनके पास धन है, मानसम्मान है, ऐसे लोगों को धर्म के संबंध में विचार या चिंता करने की आवश्यक्ता नहीं।

धर्म की आवश्यक्ता गरीबों को है। पिड़ित लोगों को धर्म की आवश्यकता है। गरीब आदमी आशा के साथ जीता है। Hope ! जीवन का मूल आशा में है। आशा ही समाप्त हुई तब जीवन कैसा होगा ? धर्म आशावादी बनाता है और गरिबों को, पिड़ितों को संदेश देता है, "घबराओ नहीं, जीवन आशादायी होगा।" इसलिए गरीब और पिड़ित धर्म के साथ चिपका हुआ रहता है।

जब यूरोप में क्रिश्चन धर्म आया तब रोम और आसपास के देशों की परिस्थिति बहुत खराब थी। लोगों को भरपेट खाना भी नहीं मिलता था। उस समय गरीब लोगों को खिचडी बाढ़ी जाती थी। उस समय क्रिश्चन धर्म के अनुयायी कौन बने ? गरीब और पिड़ित लोग ही बने। युरोप की सब गरीब और निम्न स्तर की जनता क्रिश्चन बनी। गिबन ने कहा कि, क्रिश्चन धर्म भाख मांगने वालोंका है। क्रिश्चन धर्म युरोप मे सबका धर्म कैसे हुआ इसका उत्तर देने के लिये आज गिबन जीवित नहीं, वरना इसका भी उत्तर उसी को देना होता।

कुछ लोग ऐसा कहेंगे कि, बुद्ध धम्म महार-मांग का धम्म है। ब्राह्मण लोग तथागत को 'भे गौतम' याने 'अरे गौतम' ऐसा कहते थे। ब्राह्मण बुद्ध को इस प्रकार चिढ़ाते थे। राम,कृष्ण और शंकर की मूर्तियां विदेशों बिक्री हेतु रखी जाने पर कितनी बिकेगी यह देख सकते है। परन्तु बुद्ध की मूर्ति यदि बिक्री हेतु रखे तो एक भी बचेगी नहीं। (तालियां) घर के अंदर (भारत में) बहुत हो चुका, अब बाहर (संसार मे) कुछ करके बतायें। संसार में प्रसिद्धि है तो केवल बुद्ध की। तब इस धम्म का प्रसार कैसे नहीं होगा? हमारे मार्ग से हम जायेंगे, आप अपने मार्ग से जायें। हमें नया मार्ग मिल चुका है। यह आशा का दिन है, यह उन्नति का और उत्कर्ष का मार्ग है। यह मार्ग नया नहीं, यह कहीं से लाया नहीं गया, यह यहीं का मार्ग है, भारत का ही मार्ग है। इस देश में 2000 वर्षो तक बुद्ध धम्म था। मुझे दुख इस बात का है कि, हमने पूर्व में ही इस धम्म को ग्रहण क्यों नहीं किया। बुद्ध ने बताये हुये तत्व अमर है परन्तु बुद्ध ने वैसा दावा नहीं किया। उसमे कालानुरूप बदल करने की व्यवस्था है। इतनी उदारता अन्य किसी धर्म में नहीं है।

बुद्ध धम्म के पतन का मुख्य कारण मुसलमानों का आक्रमण है। आक्रमण में मुसलमानों ने मुर्तियां तोड़ डाली। यह बुद्ध धम्म पर पहला आक्रमण था। मुसलमानों के आक्रमण से डरकर बौद्ध भिक्षु समाप्त हुए। कुछ भिक्षु तिब्बत गये, कुछ चीन में गये और कुछ कही और चले गए। धम्म की रक्षा के लिए उपासकों की आवश्यकता होती है। वायव्य दिशा के सीमावर्ती प्रांत में एक ग्रीक राजा था। उसका नाम था, मीलींद। यह राजा हमेशा वाद-विवाद करता था। वाद-विवाद करने में उसे रूचि थी। वह हिन्दुओं से कहता था, जो कोई वाद-विवाद करने में सक्षम है वह मुझसे वाद विवाद कर सकते हैं। उसने बहुत लोगों को निरुत्तर किया था।

एक बार उसे बौद्धों के साथ वाद-विवाद करने की इच्छा हुई तब उसने कहां कि यदि कोई बौद्ध वाद-विवाद करने में सक्षम है तो वह आ सकता है। तब बौद्धों ने नागसेन से बौद्धों की ओर से वाद-विवाद करने की विनंती की। नागसेन विद्वान था। वह बौद्ध बनने के पूर्व ब्राह्मण था। नागसेन और मिलिंद के बीच वादविवाद हुआ उसे सारा संसार किताब के रूप में जानता है। उस किताब का नाम 'मिलिंद प्रश्न' है। मिलिंद ने प्रश्न किया था कि धर्म को ग्लानि क्यों आती है ? नागसेन ने अपने उत्तर में उसके तीन कारण बताये थे।

पहला कारण था, कोई धर्म ही अपरिपक्व होता है। उस धर्म के मूलतत्वों में गंभीरता नहीं होती। वह धर्म कालिक होता है, उस धर्म का अस्तीत्व केवल किसी काल तक के लिए होता है।

दूसरा कारण था, धर्म का प्रचार करने वाले लोग विद्वान नहीं है तब धर्म को ग्लानी आती है। ज्ञानी लोगों ने धर्म का ज्ञान बताना चाहिये, धर्म के प्रचारक विरोधीयों से वाद विवाद करने में सक्षम न हो तब धर्म को ग्लानी आती है।

तीसरा कारण था, धर्म और धर्म का तत्वज्ञान विद्वानों के लिए होता है। सामान्य लोगों के लिए मंदिर होते है, जहां जाकर वह अपने श्रेष्ठ विभूती का पूजन करते हैं।

हमने बुद्ध धम्म का स्वीकार करते समय इन कारणों को ध्यान में रखना चाहिए। बुद्ध धम्म के तत्व कालीक या किसी काल तक सिमित है ऐसा कोई भी नहीं कह सकता। आज दो हजार पांच सौ वर्षों के बाद भी संसार बुद्ध के सभी तत्वों को मानता हैं। अमेरिका में बुद्ध धम्म की दो हजार संस्थायें हैं। इंग्लैड में तीन लाख रुपये खर्च कर बुद्ध विहार बनाया गया हैं। जर्मनी में तीन-चार हजार बौद्ध संस्थायें है। बुद्ध के तत्व अमर हैं। फिर भी बुद्ध ने ऐसा दावा नहीं किया कि यह धम्म ईश्वर का दिया हुआ है। बुद्ध ने बताया, मेरे पिता सामान्य आदमी थे, मेरी माता सामान्य स्त्री थी। जब तुम्हे पंसद आये तभी इस धम्म का स्वीकार करो। यह धम्म आपकी बुद्धी के अनुसार स्वीकार करने योग्य लगे तभी आपने उसका स्वीकार करना चाहिए । इतनी उदारता अन्य किसी धर्म में नहीं है।

बुद्ध धम्म का मूल आधार क्या है ? अन्य धर्मों में और बुद्ध धम्म में बहुत अंतर है। अन्य धर्मों में परिवर्तन नहीं हो सकता क्योंकि मनुष्य और ईश्वर के बीच का संबंध वे बताते है। अन्य धर्म बताते है कि, ईश्वर ने सृष्टि का निर्माण किया । ईश्वर ने आकाश, वायु, चन्द्र, सुर्य सब कुछ निर्माण किया। ईश्वर ने हमारे लिए कुछ भी करने को बाकी नहीं रखा, इसलिए ईश्वर की पूजा करनी चाहिये। क्रिश्चन धर्म के अनुसार तो मृत्यु के बाद एक निर्णय का दिन Day of Judgement होता है और उस निर्णय के अनुसार सब

कुछ होता है। ईश्वर और आत्मा इनको बुद्ध धम्म में स्थान नहीं है। बुद्ध ने बताया, संसार में सभी ओर दुःख है, 90 प्रतिशत आदमी दुःख से ग्रस्त है। उस दुःख से पिडित, गरीब आदमी को मुक्त करना यह बुद्ध धम्म का मुख्य कार्य है। कार्ल मार्क्स ने बुद्ध से भिन्न क्या बताया ? बुद्ध ने जो बताया वह आड़े तिरछे मार्ग से नहीं बताया।

भाईयो मैंने जो बताना चाहिए था वह आपको बता दिया है। यह धम्म पूरी तरह से परिपूर्ण है। उस पर कोई लांछन नहीं है। हिन्दु धर्म की ऐसी तत्वप्रणाली है कि उससे उत्साह निर्माण हो ही नहीं सकता। हजारों वर्षों से परसो तक हमारे समाज में ग्रेजुएट या विद्वान पैदा नहीं हो सका। मुझे यह बताने में कोई दिक्कत नहीं कि, मेरी शाला में सफाई करने वाली एक महिला थी, वह मराठी थी और वह मुझे छूती नहीं थी। मेरी मां कहती थी कि बड़े आदमी को मामा कहो, पोष्टमैन को मैं मामा कहता था (हंसी)। बचपन में, शाला में मुझे प्यास लगी थी। मैंने वैसा शिक्षक को बताया। शिक्षक ने मेरे मदत के लिए चपरासी को बुलाया और इसे नल तक ले जाओ ऐसा उसे बताया। हम दोनों नल तक गए, चपरासी ने नल शुरू किया तब मैंने पानी पीया। मुझे शाला में पिने को पानी नहीं मिलता था। आगे चलकर मुझे डिस्ट्रिक्ट जज की नौकरी देने के लिए कहा गया था परन्तु मैंने उसे अपने गले की घन्टी नहीं बनाया। मेरे समाज बंधुओं का कार्य फिर कौन करेगा, यह समस्या मेरे सामने थी, इसलिए मैं नौकरी के बंधन में नहीं बंध पाया।

व्यक्तिगत रूपसे मेरे लिए इस देश की कोई भी चीज प्राप्त करना असंभव नहीं। (तालिया) आपके सर पर वैश्य, क्षत्रिय, ब्राह्मण यह बैठे हैं, उन्हे नीचे कैसे उतारा जाय यह मुख्य प्रश्न है। इसलिए इस धम्म का ज्ञान पूरी तरह तुम्हें देना मेरा कर्तव्य है। मैं किताबें लिखकर तुम्हारी शंकाओं का समाधान करूंगा और तुम्हे पूर्णत्व की स्थिति तक पहुंचाने का पुरा प्रयास करूंगा। आपको मुझपर विश्वास करना होगा।

परन्तु आपकी जिम्मेदारी भी बड़ी है। आपके लिए दूसरों के मन में आदर निर्माण हो, मान-सम्मान की भावना निर्माण हो ऐसी कृति आपने करनी चाहिए। इस धम्म को स्वीकार कर हम गले में बोझ लटका रहे हैं ऐसा मत सोचिये। बुद्ध धम्म की दृष्टि से भारत की भूमि अब शुन्यवत है। इसलिए हमने धम्म का पालन उत्तम तरीके से करने का संकल्प लेना चाहिये। महार लोगों ने धम्म को निंदनीय स्थिती में लाकर खड़ा किया ऐसा नहीं होना चाहिए, इसलिए दृढ़निश्चय करना चाहिये। हमने यदि इसे कर दिखाया तो हम अपने साथ देश का ही नहीं तो संसार का भी उद्धार करेंगे। क्योंकि बुद्ध धम्म से ही संसार का उद्धार होगा। संसार में जब तक न्याय नहीं मिलता तब तक शांति स्थापित नहीं हो सकती।

यह नया मार्ग जिम्मेदारी का है। हमने कुछ संकल्प लिया है, कुछ करने की ठान ली है इसे युवकों ने ध्यान में रखना है। उन्होंने केवल पेट भरने वाले नहीं बनना है। हमारी आमदनी का कम से कम 20 वां हिस्सा इस कार्य के लिए देंगे ऐसा निश्चय करना है। मुझे सबको साथ लेकर चलना है। प्रारंभ में तथागत ने कुछ व्यक्तियों को दिक्षा दी और उन्हें इस धम्म का प्रचार करो ऐसा आदेश दिया। उस प्रकार आगे यश और उसके 40 मित्रोंने बुद्ध धम्म की दीक्षा ली।

यश धनवान घराने से था। तथागत ने उसे धम्म कैसा है यह बताया - "बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय, लोकानुरूंपाय, धम्म आदि कल्याणं, मध्य कल्याणं, पर्यावसान कल्याणं"। उस वक्त की परिस्थिति कि अनुसार तथागत ने अपने धम्म के प्रचार का मार्ग तैयार किया था। अब हमें भी यंत्रणा बनानी होगी। इसीलिए इस कार्यक्रम के बाद हर किसीने हर किसी को दीक्षा देनी है। हर कोई बौद्ध व्यक्ति को दीक्षा देने का अधिकार है, ऐसा मै जाहिर करता हूँ।

"केवल स्वयं आदर्श बौद्ध बनकर कर्तव्य विमुख रहना यह सच्चे बौद्ध का लक्षण नहीं है। धम्म प्रचार के लिए निरन्तर प्रयास करना यही सच्चे एवं आदर्श बौद्ध का कर्तव्य है। बुद्ध धम्म का प्रचार एवं प्रसार करना ही मानवता की सेवा करना है।"

-डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर

# वेद और गीता

- डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर

## (मद्रास, 24 मई 1944)

अध्यक्ष महोदय, भाइयों और बहनों,

मै केवल राजनैतिक होने के कारण वाङ्मय, इतिहास और दर्शन पर प्रभुत्व के साथ बोल नही सकता। परन्तु वाङ्मय, इतिहास और दर्शन का अभ्यास करने के बाद मैने अपना जो मत बनाया उसे मै आपको बताना चाहुगां।

हिन्दुस्थान के इतिहास के बारे मे बहुत सी भ्रांतिया बन चुकी है। बहुत से विद्वान इतिहासकारोंने कहा है कि, हिन्दुस्थान मे राजनिति नही थी। प्राचीन भारतीयों ने केवल तत्त्वज्ञान, धर्म और आध्यात्म्य इन विषयों पर लिखने मे ध्यान दिया था और वह इतिहास से और राजनिति से पुरी तरह अलिप्त थे। ऐसे भी कहा जाता है कि, हिन्दु जीवन और समाज एक विशेष पौलादी चौखट मे ही घूम रहे है और उस चौखट का वर्णन कर दिया तो इतिहासकारों का काम खत्म हो गया। लेकिन हिन्दुस्थान के प्राचीन काल के इतिहास को पढनें के बाद मेरा मत इन विद्वानों से एकदम अलग बन गया है। इस अभ्यास से मुझे ऐसा दिखाई दिया कि विश्व के किसी भी देश मे हिन्दुस्थान के समान अधिक गतिमान राजनिति नहीं है और हिन्दुस्थान यह ऐसा एक देश है जहां जो क्रांति हुई वह संसार के अन्य देशों मे नही हुई।

हिन्दु इतिहास के विद्यार्थीयों ने एक मुलभुत बात, जिसकी इतिहासकारों से स्पष्ट भुल हुई, हमेशा ध्यान मे रखना चाहिए वह यह है कि, प्राचीन हिन्दुस्थान मे हुई बौध्द और ब्राम्हण इनके बिच की लड़ाई। इतिहास के कुछ प्रोफेसरों के मतानुसार वह केवल एक पंथ के बिच की मामुली लड़ाई नही थी। सत्य का अर्थ क्या है इसलिए वह लड़ाई थी ।

बुध्द ने सत्य का अर्थ बहुत ही सरल शब्दों मे बताया था। इंद्रियों के द्वारा समझ मे आये वही सत्य है। दुसरे शब्दों मे कहा जाये कि, कोई अधिकार प्राप्त व्यक्तिने बताई गई वस्तू ही सत्य ऐसा नही है। ब्राम्हणों का कहना है कि, जो वेदों मे है वही सत्य है। बुध्द क्रांतिकारक थे और ब्राम्हण प्रतिगामी, आज हम पर प्रतिगामी लोगों का वर्चस्व है। वेदों को पढने के बाद मुझे बहुत आश्चर्य हुआ कि उसमे जोकर की बकवास के अलावा दुसरा कुछ भी नही। ऐसी किताबों का प्रमाणग्रंथ मानने को आग्रह ब्राम्हणों के जैसे चालाख लोग क्यों करते है? अथर्व वेद में तो केवल जादुई मंत्र है।

यदि ईस्लाम धर्म का इस देश मे आगमन नही हुआ होता तो ब्राम्हण और बौध्दों की बिच की लढाई और अधिक समय तक जारी रहती। संसार के इतिहास मे स्वतंत्रता, समता और बंधुत्व की शिक्षा देने वाला बुध्द ही प्रथम व्यक्ती था। उस शिक्षा का अंत हुआ है। उस शिक्षा की ही हिन्दुस्थान को सर्वाधिक आवश्यकता है। उस शिक्षा का अंत हुआ क्योंकि क्रांति पर प्रतिक्रांति की विजय हुई।

बहुत से लोग भगवद् गीता को बहुत बडा धार्मिक ग्रंथ मानते है। बडे खेद के साथ मुझे यह कहना पड रहा है कि, वैसा मानने लायक मुझे उस किताब मे कुछ भी दिखाई नही दिया। इसके विपरित, इस ग्रंथ से बहुत बडा नुकसान हुआ है। बुध्दी की कसौटी पर सही साबित नही होने वाली बातों को सैध्दांतीक आधार देने का प्रयास उसमे किया गया है।

राजनिति, समाज, राज्यशासन, धर्म, और बुध्दीवाद के संबंध में बुध्द ने जिस क्रांति की शुरुवात की वह बाद मे फलीभुत नही हो सकी। धर्म और राजनिति को एकसाथ कर, चातुर्वर्ण यह केवल सामाजिक व्यवस्था नही, वह एक राजनैतिक तत्वज्ञान है, इसे सिध्द करने के लिए मनुस्मृति लिखी गई।

हमारे सामाजिक और राजनैतिक जीवन का आधार बुध्दीवाद ही होना चाहिए। हर देश मे राजनैतिक नेताओं की कसौटी देखी जाती है। लेकीन, गांधी को देखिए, उनको वैसी कसौटी कोई नही लगाता। वह जो बोलेगें वही सही। दो वर्ष पुर्व गांधी ने कहा था, पाकिस्तान पाप है। सभी कांग्रेस वालो ने उनका समर्थन किया। अब गांधी कहते है, पाकिस्तान पाप नही, मुसलमान जो मांगेंगे उन्हें वह देना चाहिए। और अब कांग्रेस वाले उसका भी समर्थन करते है। हमारे सामाजिक, राजनैतिक और बौध्दीक जीवन मे बुध्दीवाद को किस तरह बहकाया जा सकता है उसका यह उदाहरण है। इस परिस्थिति का यदि अंत नही हुआ तो बहुत बडा संकट आ सकता है।

# वेद और गीता

**- डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर**

**(पुणे, दि.29-11-1944)**

आज भाषण करने की मेरी इच्छा नही थी। किसीने मुझे सर तेजबहादुर सप्रु की योजना पर अभिप्राय देना चाहिए ऐसा कहा। परन्तु उस संबंध मे यहां बोलने की इच्छा नही है। मैंने मद्रास मे गीता के संबंध मे जो बोल चुका हूँ उसके संबंध मे पुणा के ब्राम्हणोंने नाराजी व्यक्त की है। उन्हें उत्तर देना मै जरुरी समझता हुँ। मेरा कहना समझने के लिए पुणा मे यदि आमसभा आयोजित की जाती तो उसमे मैंने अपना वकतव्य (मत, विचार) रखा होता। परन्तु वैसा अवसर प्राप्त नही होने के कारण मै अपना वकतव्य (मत, विचार) इसी समारोह मे रख रहा हूँ।

वेद ईश्वर निर्मित है, अपौरुषेय है, उनकी आज्ञा माननी चाहिये, ऐसा बताया जाता है। परन्तु इस बात का इतिहास मे कोई प्रमाण नही है। ब्राम्हणों के अलावा अन्य किसीने भी वेदों को प्रधानता नही दी और अपना धर्मग्रंथ भी कभी माना नही। वेदों को प्रमाण मानना यह ब्राम्हणों की उत्पत्ति (Theory) है। इसका प्रमाण अश्वलायन गृह्यसूत्र मे प्रचुर मात्रा मे मिलता ह। उस समय ब्राम्हण भी वेदों को प्रमाण ग्रंथ नही मानते थे इसका उसमें स्पष्ट उल्लेख है। सामाजिक मुल्य निर्माण करने के पुर्व जनता पंचायत के निर्णय को स्विकार करती थी। उस समय वेदों का चौथा या पांचवा स्थान था। शबर स्वामी द्वारा जनमेजय के सुत्र पर भाष्य किया है। उसमे पुर्व पक्ष और उत्तर पक्ष रखा है। पुर्व पक्ष मे वेदों का उल्लेख है और वेद के विरोधीयों का पक्ष रखा है। शबर स्वामी ने कहा है कि ब्राम्हण वेदों को नही मानते थे और यह दावा किया है कि वेद की निर्मिति मुर्ख और पागलों का कार्य है। बुध्द ने वेदों को प्रमाण कभी भी नही माना। वेद को प्रमाण मानने वाले धर्म को बुध्द ने झटका दिया। बुध्द धम्म शुद्रों का था और वह वेद को प्रमाण नही मानता था।

मैं गीता को बगैर पढे उस पर टीका करता हूँ, ऐसा आक्षेप लिया जाता है। परन्तु ये आक्षेप झुठ है। पिछले पंधरा वर्षों मे गीता का अभ्यास करने के बाद ही मैने अपने विचार रखना शुरु किया है।

गीता मे कुछ भी विशेष नही है। उसमे मुख्य रुप से तीन बाते बताई गई है - (1) मरना मारना, हिंसा करना क्या पाप है (2) वर्णाश्रम धर्म की जानकारी और (3) भक्ती करने से मोक्ष मिलेगा। गीता का अभ्यास करते समय केवल गीता के किताब को पढने से गीता का अर्थ समझ मे नही आयेगा; उस काल के अन्य वाङ्मय पढकर ही गीता का अर्थ समझना चाहिए।

इस देश के प्राचीन इतिहास के अनुसार लगभग दो हजार वर्ष तक ब्राम्हण धर्म और बुध्द धम्म के बिच विवाद चल रहा था। इस विवाद से जो वाङमय निर्माण हुआ वह धार्मिक स्वरुप का न होकर राजनैतिक स्वरुप का है। देश की सत्ता के केन्द्र पर अपनी हुकूमत बनी रहे इसलिए गीता नामक ग्रंथ का जन्म हुआ।

वेदों मे से थोडासा अनुवाद गीता मे लिया गया है। लेकिन वेदों मे भी ऐसा कौन सा ज्ञान भरा हुआ है? वास्तव मे देखा जाय तो वेद दो ही है। एक ऋग्वेद और दूसरा अथर्ववेद। मैंने वेद अनेक बार पढे है। उनमे समाज के या मानव के उत्थान और नैतिकता के उत्कर्ष के बारे मे कुछ भी नही बताया है। अर्थवेद मे, औरत यदि प्रेम नही करती तो क्या करना चाहिए, दूसरों की औरत को कैसे वश मे किया जाय, संपत्ती की लूट कैसी की जाय इनके बारे मे बताया है और व्याधी तथा मृत्यू इनके संबध मे उल्लेख है। वास्तव मे, वेद जैसे ग्रंथ मे इन विषयों की क्या आवश्यकता थी। वेद के पुरुष सुक्त मे ब्राम्हण से शुद्र तक किसने कैसा व्यवहार करना चाहिए यह दिया गया है। बुध्द का इस संबध मे ही कटाक्ष था और इस दृष्टी से ही उन्होंने चातुर्वर्ण के संबध मे टीका की है। मारना यह क्षत्रीयों का कर्तव्य है ऐसा बताया गया है। एक ने दूसरे को मारना जरुरत हो सकती है परन्तु

कर्तव्य नही हो सकता। गीता के दुसरे अध्याय के 18 और 19 श्लोक मे वेद का आधार लेकर आत्मा अविनाशी है, शरीर बिमारी या अन्य कारणों से नष्ट होगा ही, ऐसा विवरण है। परन्तु जरा सोचिए कि किसी खुन के प्रकरण मे वकिल ने जज को ऐसा बताया कि, साहब, आत्मा अविनाशी है, तब खुन के संबध मे आरोपी को क्यो सजा दे रहे है? एक वकिल का ऐसा कहना कैसा लगेगा?

बुध्द धम्म के तत्वज्ञान के सामने यह दलिल टीक पाना संभव नही था। बुध्द के विचारों से सामाजिक, मानसिक और राजनैतिक क्रांती हुई और शुद्रों को उच्चपद प्राप्त हुआ। उस समय अनेक शुद्र राजा बने इस बात का वर्णन है। ब्राम्हणों की सत्ता जाने के कारण उन्होंने भगवत् गीता के माध्यम से चातुर्वर्ण पध्दती की नीव डाली और अपनी खोई हुई सत्ता फिरसे हासील की।

गीता के पुर्व मे वर्णाश्रम धर्म की नीव कैसी थी इस संबंध मे जैमिनी ने अपने पुर्व मिमांसा ग्रंथ मे लिखा है। वेद पर केवल बुध्द ने ही नही तो चार्वाक जैसे विद्वानों ने भी टीका की है। बुध्द के द्वारा वेद पर किये गये हमले के फल स्वरुप ही शुद्रों का सेवा धर्म समाप्त हुआ और वह शासन कर्ता बने।

सांख्य दर्शन का सहारा लेकर श्रीकृष्ण ने चातुर्वर्ण की चौखट निर्माण की। सांख्यकारों ने त्रिगुण को मान्यता दी है और गीताकारों ने चार गुण चार वर्ण को मान्यता दी है। अब तक किसी भी विद्वान के द्वारा सांख्य कारों और गीताकारों के इस फर्क का मेल नही बिठाया है। श्रीकृष्ण के भगवत् गीताने चातुर्वर्ण को आधार दिया इसलिए चातुर्वर्ण अब तक टीका हुआ है।

भगवत गीता का ऐतिहासीक दृष्टी से अभ्यास करते समय, इस किताब को चार पट्टीया लगाई गई है, ऐसा मुझे नजर आया। मेरा मानना है कि प्रथमतः यह एक कृष्ण के वर्णन का, उसके जातभाईयों ने अर्थात् गवलीयो ने, अर्जून हतबल होने पर श्रीकृष्ण ने उसे युध्द के लिए प्रवृत किया इसलिए उसके गुणगान करने के लिए लोकगीत की रचना थी। उसमे धर्म या कोई तत्वज्ञान नही था। उस वक्त उसमे 60 श्लोक थे। उसके बाद जब यह लोग कृष्ण को ईश्वर मानने लगे तब वह स्तुतिगान, भक्तीमार्ग बन गया। इस प्रकार से कृष्ण को ईश्वर बनाया गया। उसके बाद गीता का रुपांतर होकर वह आज के स्वरुप मे हो गई। इसके लिए मै किसी को दोष नही दे रहा हूँ। परन्तु, जब तक आप इन ग्रंथो को प्रमाण ग्रंथ मानते रहेगे तब तक संसार मे आपका उद्धार नही हो सकता। इस किताब मे शुद्रों की निंदा और अव्हेलना की गई है। उन पर अनेक प्रकार के आरोप लगाये गये है। उनमे नालायकी निर्माण हो, वह हमेशा के लिए दलित रहे ऐसी योजना बनाई गई। ऐसी किताबों को यदि आप हमे धर्मग्रंथ कह कर प्रमाण स्वरुप मानने की जबरदस्ती करते है तो उसे मै कभी भी मान्य नही करुगा। यह मेरा एक जीवनकार्य है। खुद समझकर उसे मुझे मेरे लोगों को समझाना है। निम्नवर्ग को निःसंतान करने वाला, उन्हें हमेशा के लिए पैर तले रखनेवाला और उन्हें योजनाबध्द तरिके से खाई मे ढकलने की कोशीश करने वाला ऐसा विशिष्ट वर्ग संसार के किसी भी कोने मे दिखाई नही देगा।

## धम्मचक्र प्रवर्तन दिन की शुभकामनाएं!

सभी से निवेदन है की, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जयंती के अवसर पर बाबासाहेब की जन्मभूमि महू में दि. 14 अप्रैल 2015 को बड़ी संख्या में उपस्थित होवे।

**-भदन्त नागदिपंकर**

# क्रान्ति तथा प्रतिक्रान्ति

**- डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर**

गतांक से आगे...

## रामायण

यह एक तथ्य है कि महाभारत की ही तरह रामायण के भी एक-एक कर तीन संस्करण तैयार हुए। महाभारत में रामायण के बारे में दो प्रकार के संदर्भ मिलते है। एक प्रसंग में रामायण का तो संदर्भ आया है, किन्तु उसके लेखक का उल्लेख कहीं नही मिलता। दूसरे प्रसंग में वाल्मिकी रामायण का उल्लेख हुआ है, किन्तु इन दिनों जो रामायण उपलब्ध है, वह वाल्मिकी रचित नही है। श्री सी.वी. वैद्य के मतानुसार :

'वर्तमान रामायण वाल्मिकी द्वारा लिखित रामायण नही है, चाहे इसे इसी रुप में महान चिंतक और भाष्यकार कटक ने ही क्यों न स्विकार किया हो। कट्टर से कट्टर विचारक भी इस तथ्य को स्विकार करने में नही हिचकिचाएगा। चाहे कोई वर्तमान रामायण को सरासरी तौर पर ही क्यों न पढ़े, वह उसमें आयी असंगतियों को देखकर पूर्व प्रसंगो में परस्पर संबंधहीनता देखकर या काफी मात्रा में उपलब्ध नूतन, और पुरातन, दोनो प्रकार के विचारों के गठबंधन को देखकर हतप्रभ रह जाएगा। यह बात रामायण के बंगाल या बंबई वाले किसी भी पाठ में देखी जा सकती है। इन सब बातों को देखकर कोई भी इस नतीजे पर अवश्य पहुंचेगा कि वाल्मिकी की रामायण में आगे चलकर बहुत फेर-बदल हुआ।'

महाभारत की ही तरह रामायण की कथावस्तु में भी कालांतर में क्षेपक जुड़ते गए। आरंभ में रामायण की कथा मात्र इतनी ही थी कि रावण ने राम की पत्नी सीता का हरण कर लिया, इसलिए राम और रावण के बीच युद्ध हुआ। अगले संस्करण में इस कथा में कुछ उपदेश भी जुड़ गए। तब एक विशुद्ध ऐतिहासिक काव्य के स्थान पर यह कृति भी उपदेशात्मक बन गई, जिसका उद्देश्य सामाजिक, नैतिक और धार्मिक कर्तव्यों के सही नियमों की शिक्षा देना था। जब इसका तीसरा संस्करण बना तो यह भी महाभारत की ही तरह दंतकथाओं, ज्ञान, शिक्षा, दर्शन तथा अन्य कलाओं और विज्ञानों का भंडार बन गई।

रामायण की रचना कब हुई, इसके बारे में एक सुस्थापित कथन यह है कि राम वाली घटना पांडवो वाली घटना से अधिक पुरानी है, किन्तु रामायण और महाभारत का लेखन-कार्य साथ ही चला होगा। हो सकता है कि रामायण के कुछ अंश महाभारत से पहले लिखे गए हों, किन्तु इस बात में किसी तरह का संदेह नही हो सकता कि रामायण का अधिकांश भाग महाभारत के अधिकांश भाग के लिखे जाने के बाद ही लिखा गया होगा।

## पुराण

इस समय उपलब्ध पुराणों की संख्या अठराह है। शुरु में पुराणों की संख्या इतनी नही थी। परंपरागत मान्यता के अनुसार, और इस मान्यता में संदेह की गुंजाइश नही है, सबसे पहले केवल एक पुराण था। यह भी माना जाता है कि यह पुराण वेदों से भी पुराना था। अथर्ववेद में इस पुराण का उल्लेख है और ब्रम्हांड पुराण के अनुसार यह वेदों से भी पुराना है। यह एक कथा थी, जिसे राजा को शतपथ के लिए जानना आवश्यक था। ब्राम्हण कहता है कि यज्ञ के दसवें दिन अध्वर्यु द्वारा इसे राजा को सुनाने का विधान रहा।

अठारह पुराणों के जन्म की कथा व्यास से संबंधित है। कहते कि व्यास ने ही उस मुल पुराण को काट-छांटकर, अर्थात उसे घटा-बढ़ाकर उससे ही अठारह पुराण बना दिए। इस तरह इन अठारह पुराणों के निर्माण की घटना को पुराणों के विकास का द्वितीय चरण माना जा सकता है। इन अठारह पुराणों में से प्रत्येक पुराण के आरंभ के अंश को जिसे व्यास ने अभिव्यक्त या प्रकाशित किया, आदि पुराण कहते है। मुल कथा व्यास द्वारा रचित है। जब व्यास इन अठारह पुराणों की रचना कर चुके, तब उन्होंने इनको अपने शिष्य रोमहर्ष को सुनाया। रोमहर्ष द्वारा रचित पुराणों का तीसरा संस्करण

बना है। रोमहर्ष के छह शिष्य थे। इनमें से तीन शिष्यों, कश्यप, सावर्णी और वैशम्पायन, ने भी अपने-अपने संस्करण तैयार किए, जिन्हें पुराणों का चौथा संस्करण कहा जा सकता है। ये तीनों संस्करण अलग-अलग इन्हीं तीनों के नाम से जाने जाते है। भविष्य पुराण के अनुसार पुराणों में संशोधन राजा विक्रमादित्य के शासन-काल में हुआ।

अब पुराणों की कथा वस्तु के बारे में विचार करें। प्राचीनकाल से ही पुराण ज्ञान की एक शाखा रहा है। इसे इतिहास से भिन्न माना गया है। इतिहास का अर्थ था किसी शासक राजा से संबंधित प्राचीन घटनाओं का वर्णन। आख्यान से तात्पर्य था, आंखो देखी घटनाओं का मौखिक रुप से कथन। इसी तरह उपाख्यान सुनी हुई कथो के पुनर्कथन को कहते थे। पूर्वजो, प्रकृति और ब्रम्हांड विषयक गीतों को गाथा कहा जाता था।

श्राद्ध और कल्प विषयक प्राचीन कर्मकांडो को कल्पशुद्धि4 कहते थे। ज्ञान की इन शाखाओं से पुराण भिन्न माने जाते थे। पुराण में ये पांच विषय होते थे : 1. सर्ग, 2. प्रति सर्ग, 3. वंश, 4. मन्वंतर और 5. वंशचरित। सर्ग का अर्थ है ब्रम्हांड की रचना, प्रति सर्ग का अर्थ है ब्रम्हांड का विलय। वंश से तात्पर्य है जीवन का क्रम, अर्थात वंशावली। विभिन्न मनुओं के युगों को मन्वंतर कहते थे, विशेष रुप से उन चौदह मनुओं की परंपरा को जिनसे इस पृथ्वी पर सृष्टि का विकास हुआ माना जाता है। वंशचरित से तात्पर्य है, राजा-महाराजाओं की पीढ़ियों का वर्णन।

पुराणों की विषय-वस्तु के क्षेत्र में पर्याप्त विस्तार हुआ लगता है कि क्योंकि आज पुराण जिन रुपों में मिलते है, उनमें उनकी विषय-वस्तु उपर्युक्त पांच विषयों तक ही सीमित नही है। उनमें इन पांच निर्धारित विषयों के अतिरिक्त भी अनके नए विषय सम्मिलित हो गए है। वस्तुतः पुराणों के विषय-क्षेत्र की अवधारणा में ही इतना परिवर्तन हो गया है कि कुछ पुराणों में तो पूर्व निर्धारित विषयों में से किसी का विवेचन मिलता ही नही, उलटे उनमें केवल नए अथवा अतिरिक्त विषयों का विवेचन ही हुआ है। इन अतिरिक्त विषयों में निम्नलिखित विषय सम्मिलित है :

1. स्मृति धर्म- (क) वर्णाश्रम धर्म, (ख) आचार, (ग) अहनिका, (घ) भाष्याभाष्य, (ड.) विवाह, (च) अशौच, (छ) श्राद्ध, (ज) द्रव्यशुद्धि, (झ) पताका, (ट) प्रायश्चित, (ठ) नरक, (ड) कर्म विपाक, और (द) युग-धर्म
2. व्रत धर्म- व्रत रखना, पर्व का पालन।
3. क्षेत्र धर्म- तीर्थ यात्रा, और
4. दान धर्म- दान-पुण्य करना

इनके अतिरिक्त दो विषय और है, जिनके बारे में इन पुराणों में बहुत-कुछ कहा गया है।

पहला विषय किस मत या पंथ विशेष की पुजा-आराधना से संबंधित है। हर पुराण का कोई न कोई इष्ट देवता है और वह पुराण उसी देवता की आराधना पद्धति अपनाने और उसी देवता को अपना इष्ट बनाने पर बल देता है। अठारह पुराणों में से पांच पुराण विष्णु की आराधना पर बल देते है। आठ2 शिव पुजा पर एक3 ब्राम्हण की पुजा पर एक4 सुर्य की पुजा पर दो देवी की पुजा पर और एक गणेश की पुजा पर।

पुराणों की कथा-वस्तु का दुसरा सर्वाधिक प्रिय विषय है, ईश्वर के अवतार। पुराणों में भगवान का वास्तविक स्वरुप क्या है, और ईश्वार ने कौन-कौन से अवतार धारण किए थे, इसमें भेद किया गया है। जहां तक ईश्वर के स्वरुप का प्रश्न है, पुराण कहते है कि ईश्वर की सत्ता तो एक ही है किन्तु उसे दो नामों से जाना जाता है। पर जब ईश्वर मानव या पशु के रुप में अवतार लेता है, तो वह कुछ न कुछ चमत्कार अवश्य दिखाता है। अवतारवाद के बारे में जानने का सर्वाधिक उपयोगी स्त्रोत विष्णु पुराण है, क्योकि केवल विष्णु ने ही समय-समय पर अवतार लेकर अनेक अलौकिक कार्य किए है। पुराणों में अवतारवाद के इसी विषय पर अत्यंत विस्तार से चर्चा मिलती है।

यदि यह कहा जाए तो कोई आश्चर्य की बात नही होगी कि इन्ही नए विषयों के विस्तार से जुड़ जाने के कारण पुराणों के असली स्वरुप को पहचानना कठिन हो गया है।

पुराणों के वास्तविक रचयिता कौन थे, यह प्रश्न भी विचारणीय है, क्योंकि ऐसा लगता है कि रचयिताओं के नाम बदलते रहें है। प्राचीन हिंदुओ में साहित्य सृष्टाओं के दो अलग-अलग वर्ग थे। एक वर्ग ब्राम्हणों का था, तो दूसरा सुतों का। ये सुत ब्राम्हणेतर थे। दोनों वर्गों ने अलग-अलग प्रकार के साहित्य की रचना की। सुतों का एकाधिकार पुराणों पर

था। इन पुराणों की रचना अथवा इनके कथा-वाचन से ब्राम्हणों का कोई संबंध नहीं था। यह केवल सुतों के लिए आरक्षित था और इससे ब्राम्हणों का कोई संबंध नही था। यद्यपि सुतों ने पुराणों की रचना और उनके वाचन का पैतृक अधिकार प्राप्त कर लिया था और यह कार्य उनके लिए निर्धारित हो गया था, किन्तु एक समय ऐसा आया जब ब्राम्हणों ने सुतों के हाथ से यह व्यवसाय छीनकर उस पर अपना एकाधिकार जमा लिया। इस प्रकार पुराणों के रचयिता बदल गए। सुतों के स्थान पर अब ब्राम्हण थे जो इनके रचयिता हो गए।

जब पुराणों पर ब्राम्हणों का वर्चस्व स्थापित हो गया, तभी कदाचित इनके अंतिम संस्करण तैयार हुए है और उनमें नए-नए विषय जोड़ दिए गए। नए-नए विषय जुड़ जाने से इनमें जो परिवर्धन-संशोधन हुए, वे अतभूतपूर्व थे। ब्राम्हणों ने परंपरा से प्राप्त पुराणों में अनेक नए अध्याय जोड़ दिए, पुराने अध्यायों को बदलकर नए अध्याय लिख दिए और पुराने नामों से ही अध्याय रच दिए। इस तरह इस प्रक्रिया से कुछ पुराणों की पहले वाली सामग्री ज्यों की त्यों रही, कुछ की पहले वाली सामग्री लुप्त हो गई, कुछ में नई सामग्री जुड़ गई तो कुछ नई रचनाओं में ही परिवर्तित हो गए।

पुराणों के रचना-काल का निर्धारण टेढ़ी खीर है। ब्राम्हणों ने जिन-जिन इतिहास ग्रंथो की रचना की, उनमें निर्माण-तिथि का कही उल्लेख नही मिलता। पुराण भी इसके अपवाद नही रहे। इसलिए पुराणों के रचना-काल का निर्धारण भी उन अन्य साक्षों के आधार पर ही कीया जा सकता है, जिनसे संबंधीत घटनाओं की तिथियां मान्य हो चुकी है। कौन सा पुराण कब लिखा गया, इस विषय पर उनती बारीकी से अभी तक विचार नहीं हुआ है, जितना अन्य ब्राम्हणवादी साहित्यिक विधाओं पर हो चुका है। विद्वान शोधकर्ताओं ने वैदिक साहित्य पर जितना अधिक ध्यान दिया है, उतना पुराण साहित्य पर नहीं दिया लगता है। मेरी जानकारी के अनुसार अब तक केवल श्री हजारा ने ही पुराणों के काल-निर्धारण के क्षेत्र में किया है। उनके काम का सारांश नीचे दिया जा रहा है :

| | पुराण | रचना-काल |
|---|---|---|
| 1. | मार्कंडेय | सन 200-600 के बीच |
| 2. | वायु | सन 200-500 के बीच |
| 3. | ब्रम्हांड | सन 200-500 के बीच |
| 4. | विष्णु | सन 100-350 के बीच |
| 5. | मत्स्य | कुछ अंश लगभग सन 325<br>कुछ अंश लगभग सन 1100 |
| 6. | भागवत | सन 500-600 के बीच |
| 7. | कूर्म | सन 550-1000 के बीच |
| 8. | वामन | सन 700-1000 के बीच |
| 9. | लिंग | सन 600-1000 के बीच |
| 10. | वराह | सन 800-1500 के बीच |
| 11. | पदम | सन 600-950 के बीच |
| 12. | बृहन्नारदीय | सन 875-1000 के बीच |
| 13. | अग्नि | सन 800-900 के बीच |
| 14. | गरुड़ | सन 850-1000 के बीच |
| 15. | ब्रम्ह | सन 900-1000 के बीच |
| 16. | स्कंद | सन 700 के बाद |
| 17. | ब्रम्ह वैवर्त | सन 700 के बाद |
| 18. | भविष्य | सन 500 के बाद |

पुराणों के रचना-काल का इससे अधिक सटीक निर्धारण फिलहाल संभव नही है। नई खोज से इस अवधि की ऊपरी और निचली, दोनों सीमाओं का पुनर्निर्धारण तो हो सकता है पर इस बात की संभावना बहुत कम है कि इस अवधि में कोई आमूल परिवर्तन हो जाए, अर्थात शताब्दियों का अंतर आ जाए।

उपर्युक्त संक्षिप्त सर्वेक्षण से यब बात साफ हो जाती है कि पुराण साहित्य की रचना बुद्धेतर काल में हुई थी। सर्वेक्षण से एक और महत्वपूर्ण तथ्य सिद्ध होता है कि पुराण साहित्य पुष्यमित्र के नेतृत्व में ब्राम्हणों की विजय के बाद के काल में लिखा गया था। इस सर्वेक्षण से एक बात और सामने आती है, वह यह है कि व्यास ने ही महाभारत की रचना की, व्यास ने ही गीता रची और व्यास ने ही पुराण भी लिखे। महाभारत में अठारह पर्व है, गीता में अठारह अध्याय है और पुराणों की संख्या भी अठारह है। तो क्या यह संख्या संयोग मात्र है? या यह एक सुनियोजित, अर्थात सोची-समझी युक्ति या किसी विद्वत गोष्ठि में हुई सहमति का परिणाम?

# बुद्ध और उनका धम्म

लेखक डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर

## कुलीनों तथा पवित्रों की धम्म-दीक्षा

### चौथा भाग

### जन्मभूमि का आवाहन

### 1. शुद्धोदन से (अन्तिम ) भेंट

1. सारिपुत्त और मौद्गल्यायन की दीक्षा के बाद दो महीने तक भगवान बुद्ध राजगृह में ही रहें।
2. यह सुनकर कि तथागत राजगृह में विराजमान हैं, उनके पिता शुद्धोदन ने संदेश भिजवाया - "मैं मरने से पूर्व अपने पुत्र को देखना चाहता हूँ। दूसरों को उसका धर्मामृत पान करने को मिला है उसके पिता को नहीं, उसके सम्बन्धियों को नहीं।"
3. शुद्धोदन के दरबारियों में से एक का पुत्र कालुदासी ही यह संदेश लेकर गया था।
4. संदेश-वाहक ने आकर कहा - "हे लोक-पूज्य! आप का पिता आपको देखने के लिये उतना ही उत्सुक है जैसे कमलिनी सूर्योदय के लिये ।"
5. तथागत ने पिता की प्रार्थना स्वीकार कर ली और बड़े भिक्षुसंघ को साथ ले पितृ-गृह की और प्रस्थान किया।
6. बुद्ध जगह जगह ठहरते हुए आगे बढ़ रहे थे, लेकिन कालुदायी तेजी से चलकर पहले पहुँच गया ताकि शुद्धोदन को यह सूचना दे सके कि बुद्ध आ रहे है और रास्ते पर है।
7. शीघ्र ही यह समाचार शाक्य जनपद में फैल गया। हर किसी की जबान पर था कि राजकुमार सिद्धार्थ- जो बोधी प्राप्त करने के लिये गृह-त्याग कर चला गया था अब ज्ञान प्राप्त कर वापस कपिलवस्तु आ रहा है।
8. अपने सम्बन्धियों और मन्त्रियों को लेकर शुद्धोदन और महाप्रजापति अपने पुत्र की अगवानी के लिये गये। जब उन्होंने दूर से ही अपने पुत्र को देखा, उसके सौन्दर्य, उसके व्यक्तित्व, उसके तेज का उनके मन पर बड़ा प्रभाव पड़ा। वे मन ही मन बडे खुश हुए। किन्तु उनके पास शब्द न थे कि वे उसे व्यक्त कर सकें।
9. निश्चय से वह उनका पुत्र था, उसकी शक्ल-सूरत वहीं थी। महान् श्रमण उनके हृदय के कितना समीप था और तब भी उनके बीच की दूरी कितनी अधिक थी! वह महामुनि, अब उनका पुत्र सिद्धार्थ नहीं रहा था, अब वह बुद्ध था, सम्यक् सम्बुद्ध था, अर्हंत था, लोक-गूरू था।
10. अपने पुत्र के धार्मिक पद का ध्यान कर शुद्धोदन रथ से उतरा और सर्वप्रथम अभिवादन किया। बोला --"तुम्हें देखे सात वर्ष बीत गये। इस क्षण की हम कितनी प्रतीक्षा करते रहे!"
11. तब शुद्धोदन के सामने सिद्धार्थ विराजमान हुए। राजा आंखे फाड़फाड़ कर अपने पुत्र की ओर देखता रहा। उसकी इच्छा हुई कि उसे नाम लेकर पुकारे किन्तु उसका साहस नहीं हुआ। सिद्धार्थ, वह मन ही मन बोला, सिद्धार्थ अपने पिता के पास लौट आओ, और फिर उसके पुत्र बन जाओ। लेकिन अपने पुत्र की दृढ़ता देखकर उसने अपनी भावनाओं को वश में रखा। शुद्धोदन तथा प्रजापित-दोनों के दोनों निराश हो गये।
12. इस प्रकार अपने पुत्र के ठीक सामने पिता बैठा था -- अपने दुःख में वह सुखी था, अपने सुख में वह दुःखी। उसे अपने पुत्र पर अभिमान था, किन्तु वह अभिमान चूर चूर हो गया जब उसे ध्यान आया कि उसका पुत्र कभी उसका उत्तराधिकारी न बनेगा।
13. "मै तुम्हारे चरणों पर अपना राज्य रख दूं", उसने कहा, "किन्तु यदि मैंने ऐसा किया तो तुम उसे मिट्टी के मोल का भी न समझोगे।"

14. तथागत ने सान्त्वना दी - "मै जानता हूँ राजन् ! तुम्हारा हृदय प्रेम से गद्‌गद् हैं। तुम्हे अपने पुत्र के लिये महान दुःख हैं। लेकिन प्रेम के जो धागे तुम्हें अपने उस पुत्र से बांधे हुए हैं, जो तुम्हें छोड़ कर चला गया, उसी प्रेम के अन्तर्गत तुम अपने सारे मानव-बन्धुओं को बांध लो।

    तब तुम्हे अपने पुत्र सिद्धार्थ से भी बड़े किसी की प्राप्ति होगी, तुम्हे मिलेगा वह जो सत्य का संस्थापक है; तुम्हें मिलेगा वह जो धम्म का मार्ग-दर्शक है और तुम्हे मिलेगा वह जो शान्ति का लाने वाला है। तब तुम्हारा हृदय निर्वाण से भर जायेगा। "

15. जब शुद्धोदन ने अपने पुत्र, बुद्ध के ये वचन सुने वह प्रसन्नता के मारे कांपने लगा। उसकी आंखों में आंसू थे और उस के हाथ जुड़े थे, जब उसने कहा -- "अद्‌भुत परिवर्तन है! संतप्त हृदय शान्त हो गया। पहले मेरे हृदय पर पत्थर पड़ा था, किन्तु, अब मैं तुम्हारे महान् त्याग का मधुर फल चख रहा हूँ। तुम्हारे लिये यही उचित था कि तुम अपनी महान् करूणा से प्रेरित होकर राज्य के सुख-भोग का त्याग करते और धर्म-राज्य के संस्थापक बनते। अब धर्म-पथ के जानकार की हैसियत से तुम सभी को मोक्ष-मार्ग का उपदेश दे सकते हो।"
16. भिक्षु संघ सहित बुद्ध उस उद्यान में ही विराजमान रहे, जबकि शुद्धोदन वापस घर लौट आया।
17. अगले दिन तथागत ने भिक्षा-पात्र लिया और कपिलवस्तु में भिक्षाटन के लिये निकले।
18. बात तुरन्त फैल गई : - जिस नगर में कभी सिद्धार्थ रथ में बैठ कर सवारी के लिये निकलते थे, आज उसी नगर में भिक्षा-पात्र हाथ मे लिये घर-घर विचर रहे हैं। चीवर का रंग भी लाल-मिट्टी के ही समान है और हाथ का भिक्षा-पात्र भी मिट्टी का ही है।
19. इस विचित्र वार्ता को सुना तो शुद्धोदन घबराया हुआ दौड़ा गया ; तुम इस प्रकार मुझे क्यों लजाते हो ? क्या तुम इतना नही जानते कि मै तुम्हे और तुम्हारे संघ को भोजन करा सकता हूँ ?
20. तथागत का उत्तर था - "यह हमारी वंश-परम्परा है। "
21. "यह कैसे हो सकता है? हमारे वंश में कभी किसी एक ने भी भिक्षाटन नहीं किया है।"
22. "राजन! निश्चय से तुम और तुम्हारा वंश क्षत्रियों का वंश है। किन्तु मेरा वंश बुद्धों का वंश है । उन्होंने भिक्षाटन किया है और हमेशा भिक्षा पर ही निर्भर रहे हैं।"
23. शुद्धोदन निरूत्तर था। तथागत कहते रहे -- "किसी को कहीं कुछ खजाना मिले तो उस में जो बहुमूल्य रत्न होगा वह लाकर उसे अपने पिता को ही भेंट करेगा। मैं तुम्हें यह धम्म-निधि अर्पण करता हूं।"
24. और तब तथागत ने अपने पिता को कहा - "यदि तुम अपने आपको इन मिथ्या स्वप्न-जालों से मुक्त करो, यदि तुम सत्य को अंगीकार करो, यदि तुम अप्रमादी रहो और यदि तुम धम्म-पथ पर ही चलो तो तुम्हे अक्षय-सुख प्राप्त होगा।"
25. शुद्धोदन ने निःशब्द रहकर वे शब्द सुने और बोला, "पुत्र ! मैं तुम्हारे कथनानुसार आचरण करने का प्रयास करूंगा।"

## 2. यशोधरा और राहुल से भेंट

1. तब तथागत को शुद्धोदन घरमें लिवा ले गया। परिवार के सभी लोगों ने उन्हें अभिवादन किया। [1]
2. लेकिन राहुल-माता यशोधरा नही आई। जब शुद्धोदन ने सूचना भिजवाई तो उसने कहला भेजाः - "मै किसी योग्य समझी जाऊंगी तो सिद्धार्थ यहीं मुझे मिलने आयेंगे।"
3. अपने सभी सम्बन्धियों से भेंट हो चुकने पर सिद्धार्थ ने पुछा - "यशोधरा कहां है?" उत्तर दिया गया - "उसने आने से इनकार कर दिया है।" सिद्धार्थ तुरन्त उठे और सीधे उसके भवन में गये।
4. सारिपुत्त और मौदगल्यायन को, जिन्हे वे यशोधरा के कमरे में भीतर तक साथ ले गये थे, तथागत ने कहा - "मै तो मुक्त हूँ। लेकिन यशोधरा अभी मुक्त नहीं है। इतने लम्बे अर्से तक मुझे नहीं देखा है, इसलिये वह बहुत दुःखी है। जब तक उसका दुःख आंसुओं के मार्ग से बह न जायेगा, उसका जी भारी रहेगा। यदि वह

तथागत का स्पर्श भी कर ले तो उसे रोकना नहीं।"

5. यशोधरा , सोच-विचार में गहरी डूबी हुई अपने कमरे में बैठी थी। तथागत ने प्रवेश किया तो भक्ति-बाहुल्य से उसका वही हाल था जो किसी लबालब भरे पात्र का हो और जो अपने में समा न सके।
6. वह यह भूल गई कि उसका स्नेहभाजन महामानव बुद्ध है, लोक-गुरू हैं, सत्य का महान् उपदेष्टा है। उसने बड़े जोर से उसके चरण धरे और जोर-जोर रोने लगी।
7. लेकिन जब उसे इसका ध्यान आया कि शुद्धोदन भी वहां आ गया है तो उसे लज्जा आई। वह उठी और बड़ी भक्ति-भावना सहित एक और बैठ गई।
8. शुद्धोदन ने यशोधरा की और से बोलते हुए कहा - "इसका यह व्यवहार कुछ क्षणिक भावना का परिणाम नहीं है। इसने बड़ी गहरी भक्ति का परिचय दिया है। इन सात वर्षो में , जब से तुम इसे छोड़ कर चले गये, जब इसने सुना कि सिद्धार्थ ने अपना सिर मुंडवा लिया है, इसने भी वैसा ही किया; जब इसने सुना कि सिद्धार्थ ने गहनों और सुगन्धित द्रव्यों का परित्याग कर दिया, इसने भी वैसा ही किया; और जब इसने सुना कि सिद्धार्थ एकाहारी हो गये, तब से यह भी मिट्टी के पात्र में एक ही बार आहार ग्रहण करने लगी।
9. "यदि यह क्षणिक भावुकता नहीं है, तो यह सब इसके साहस की ही परिचायक है।"
10. तब सिद्धार्थ ने यशोधरा को उसके महान् पुण्य की याद दिलाई और उस महान् साहस की जिसका परिचय उसने सिद्धार्थ की प्रव्रज्या के समय दिया था। उन्होंने कहा कि जब वे बोधिसत्व की अवस्था में बुद्धत्व प्राप्त करने के लिये प्रयत्नशील थे, उस समय उसकी पवित्रता, उसकी कोमलता तथा उसकी भक्ति ही उनका सबसे बड़ा संबल सिद्ध हुई थी। यह उसीका "कर्म" था और यह महान् पुण्य का परिणाम था।
11. यशोधरा की वेदना वचनों से परे की बात थी। किन्तु उसने जो धीरता और वीरता दिखाई उसने उसके आध्यात्मिक उत्तराधिकार को चार चाँद लगा दिये और उसे भी अनुपम पद प्रदान किया।
12. तब यशोधरा ने सात वर्ष के राहुल को एक राजकुमार की तरह सजाया और बोलीः-
13. "यह श्रमण, जो ब्रह्मा के समान है, तुम्हारे पिता हैं। उनके पास नाश न हाने वाली निधि है जिसे मैंने अभी तक नहीं देखा हैं। उनके पास जा और वह नाश न होने वाली निधि माँग, क्योंकि वह तेरा उत्तराधिकार है।"
14. राहुल बोला --"मेरा पिता कौन है ? मैं तो एक बाबा शुद्धोदन को ही पिता जानता हूँ।"
15. यशोधरा ने बच्चे को गोद में लिया और खिड़की में से दिखाया - "वह देख, वह तेरे पिता हैं, और शुद्धोदन नहीं।" उस समय तथागत भिक्षुसंघ के बीच बैठे भिक्षा ग्रहण कर रहे थे और वहाँ से दूर नहीं थे।
16. तब राहुल उनके पास गया और ऊपर मुंह उठाकर निर्भयतापूर्वक, किन्तु बड़े ही स्नेह-स्निग्ध स्वर में बोला --
17. "क्या तुम मेरे पिता नहीं हो ?" और उनके पास खड़ा ही खड़ा कहने लगा - "श्रमण! तुम्हारी छाया बड़ी सुखकर है!" तथागत निःशब्द रहे।
18. जब भोजन समाप्त हो गया, तथागत ने आशीर्वाद दिया और महल से विदा हुए । राहुल पीछे-पीछे हो लिया और अपना उत्तराधिकार माँगता रहा ।
19. राहुल को किसी ने नही रोका, न स्वयं तथागत ने ही।
20. तथागत ने सारिपुत्त की ओर देखा और कहा - "राहुल उत्तराधिकार चाहता है। मैं उसको यह नाशवान निधि नहीं दे सकता जो अपने साथ चिन्तायें लाती हैं, लेकिन मैं इसे श्रेष्ठ जीवन का उत्तराधिकार दे सकता हूँ जो अपने में एक अक्षय निधि है।"
21. तब राहुल को ही संबोधित करके तथागत बोले - "सोना, चाँदी और हीरे मेरे पास नहीं हैं। किन्तु यदि तू आध्यात्मिक - निधि चाहता है और उसे ले सकने तथा संभाल कर रखने में समर्थ है तो वह मेरे पास बहुत है। मेरी अध्यात्म निधि मेरे धम्म का मार्ग ही है। क्या तू उन के संघ में प्रविष्ट होना चाहता है जो अपना जीवन साधना में व्यतीत करते हैं और जो ऊंचे से ऊंचा आदर्श हैं - ऊंचे से ऊंचा सुख है, और जो प्राप्य है, उसे प्राप्त करने का प्रयास करते हैं ?"
22. राहुल ने दृढ़तापूर्वक कहा -- "प्रविष्ट होना चाहता हूँ।"

23. जब शुद्धोदन ने सुना कि राहुल भी भिक्षु-संघ में शामिल हो गया, उसे बड़ा क्लेश हुआ।

## 3. शाक्यों द्वारा स्वागत

1. जब तथागत अपने शाक्य जनपद में पधारे तो उन्होंने देखा कि उनके जनपदवासी दो भागों में विभक्त हैं -- कुछ अनुकूल हैं, कुछ प्रतिकूल ।
2. इससे उन्हें उस पुराने मतभेद की याद आई, जिसका परिचय शाक्यों ने उस समय दिया था जब कि कोलियों के विरूद्ध युद्ध छेड़ने का प्रश्न शाक्यों के विचाराधीन था और जिस चर्चा में उसने ऐसा महत्वपूर्ण भाग लिया था।
3. जो उस समय उसके विरोधी थे उन्होंने अभी भी उसकी महानता को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया था और उसे साधारण अभिवादन तक नहीं किया था। जो उसके अनुकूल थे, उन्होंने प्रति परिवार एक-एक तरूण उसके संघ में दीक्षित होने के लिए देना तय किया था। इन सबने अब संघ में दीक्षित होकर, तथागत के साथ ही राजगृह जाने का संकल्प किया।
4. जिन परिवारों ने अपने अपने यहां से एक एक पुत्र देने का निश्चय किया था, उनमें एक परिवार शुक्लोदन का भी था।
5. शुक्लोदन के दो पुत्र थे, एक था अनुरूद्ध जो बहुत ही सुकुमार था और दूसरा था महानाम ।
6. तब महानाम अनुरूद्ध के पास गया -- "या तो तुम गृह-त्याग करो, या मै करता हूँ। अनुरूद्ध का उत्तर था - मैं सुकुमार हूँ। मेरे लिए गृहस्थी का त्याग करना कठिन है। तुम त्याग कर दो।"
7. "लेकिन अनुरूद्ध! मुझसे यह तो सुनो कि गृहस्थी में क्या क्या करना पड़ता है ? पहले तो तुम्हें खेत में हल जुतवाना होता है। जब यह हो गया तब खेतों में बीज डलवाना होता है। जब यह हो गया, तब खेतों को पानी से सिंचवाना होता है। जब यह हो गया, तब पानी निकलवाना होता है। जब यह हो गया, तब पौधों की निराई करानी होती है। जब यह हो गया, तो फसल को कटवाना होता है। जब यह हो गया, तो फसल को ढोकर उठवा ले जाना होता है। जब यह हो गया, तो उसकी पूली बंधवाना होता है। जब यह हो गया, तो बैलों से रौंदवाना होता है। जब यह हो गया, तो तिनके पृथक कराना होता है। जब यह हो गया, तो फसल को कोठों में भरवाना होता है। जब यह हो गया, तो फिर अगले वर्ष यही क्रम दोहराना होता है। और यह क्रम प्रत्येक वर्ष चालू रखना होता है।
8. "कामों का तो कोई अन्त नहीं। आदमी के कामों की समाप्ति तो कभी होती ही नहीं। ओह! हमारे काम कब खत्म होंगे ? ओह! हमारे काम कब समाप्त होंगे ? इन पाँचो इन्द्रियों और उनके भोगों के रहते हुए, हम कब आराम से रह सकेंगे ? हाँ, प्रिय अनुरूद्ध कामों का तो कोई अन्त नहीं। आदमी के कामों की समाप्ति तो कभी होती नहीं। "
9. अनुरूद्ध बोला -- "तो गृहस्थी को तुम ही संभालो। मैं ही घर से बेघर होता हूँ।"
10. तब अनुरूद्ध शाक्य अपनी मां के पास गया -- मां, मैं गृह-त्याग कर प्रव्रजित होना चाहता हूँ। मुझे अनुमति दे दो ।"
11. अनुरूद्ध शाक्य के ऐसा कहने पर उसकी मां बोली - "अनुरूद्ध ! तुम दोनों मेरे प्रिय पुत्र हो। तुम दोनों में से मैं किसी में कोई दोष नहीं देखती। मैं जानती हूँ कि मृत्यु आयेगी तो मुझे तुमसे जुदा कर देगी, किन्तु मैं जीते जी तुम्हें प्रव्रजित होने की अनुमति कैसे दे सकती हूं ?"
12. दूसरी बार फिर अनुरूद्ध ने अपनी प्रार्थना दोहराई । दूसरी बार भी उसे वही उत्तर मिला। तीसरी बार फिर अनुरूद्ध ने अपनी मां से प्रार्थना की।
13. उस समय शाक्य जनपद पर भद्दिय शाक्य राज्य करता था। वह अनुरूद्ध शाक्य का मित्र था। अनुरूद्ध की मां ने सोचा कि भद्दिय-शाक्य कभी अपने राज्य को छोड़ कर नहीं जा सकता। इसलिये बोली -- "अनुरूद्ध! यदि शाक्य राजा भद्दिय राज्य का त्याग करे तो तू भी उसके साथ प्रव्रजित हो जा सकता है।"
14. तब अनुरूद्ध भद्दिय के पास पहूंचा और उससे कहा -- "मित्र ! मेरी प्रव्रज्या में तुम बाधक हो रहे हो।"

15. "मित्र ! यदि मै बाधक हूं, तो वह बाधा दूर हो। मैं तुम्हारे साथ हूँ। प्रसन्नतापूर्वक संसार त्याग कर दो। "
16. "प्रिय मित्र! आ, हम दोनों इकट्ठे संसार त्याग करें।"
17. भद्दिय बोला -- "मित्र ! मैं करूँगा।मैं संसार त्याग करने में असमर्थ हूँ। और जो कुछ तुम मुझे करने के लिये कहो, मैं करूँगा। तुम अकेले ही प्रवजित हो जाओ।"
18. "मित्र ! मां ने मुझे कहा है कि यदि तुम प्रव्रजित होओ, तो मैं भी हो सकता हूँ। और तुमने अभी अभी कहा है ' यदि मैं बाधक हूँ, तो वह बाधा दूर हो। मैं तुम्हारे साथ हूँ। प्रसन्नतापूर्वक संसार त्याग कर दो। ' इसलिए मित्र! आओ, हम दोनों इकट्ठे संसार त्याग करें।"
19. तब शाक्य-राजा भद्दिय अनुरूद्ध से बोला - "मित्र ! सात वर्ष तक प्रतीक्षा करो। सात वर्ष की समाप्ति कर हम इकट्ठे प्रव्रजित होंगे ।"
20. "मित्र! सात वर्ष का समय बहुत होता है। मै सात वर्ष प्रतीक्षा नहीं कर सकता ।"
21. भद्दिय ने छः वर्ष, पाँच वर्ष और इस प्रकार घटाते घटाते एक वर्ष प्रतीक्षा करने की बात कही। फिर ग्यारह महीने, इस महीने और इस प्रकार घटाते घटाते पन्द्रह दिन प्रतीक्षा करने की बात कही। अनुरूद्ध का एक ही उत्तर था - "इतना समय बहुत होता है।"
22. तब भद्दिय बोला - "अच्छा मित्र! एक सप्ताह प्रतीक्षा करो। इतने समय में मैं अपने भाइयों और पुत्रों को राज्य सौंप दूं ।"
23. अनुरूद्ध बोला - "सात दिन बहुत नहीं होते। इतने दिन मैं प्रतीक्षा करूँगा।"
24. तब शाक्य राजा भद्दिय, अनुरूद्ध, आनन्द किम्बिल और देवदत्त जैसे कभी वह अपनी चतुरंगिणी सेना सहित उद्यान-क्रिड़ा के लिये साथ साथ जाते थे, उसी प्रकार अब भी वह अपनी चतुरंगिणी सेना को साथ ले घर से निकले। उपाली नाई भी साथ हो लिया। सब मिलाकर उनकी संख्या सात हो गई।
25. कुछ दूर जाने पर उन्होंने अपनी सेना को वापिस लौटा दिया और सीमा पार कर दूसरे जनपद में प्रवेश किया। उन्होने अपने सुन्दर गहने कपड़े उतारे, उनकी गठरी बनाई और उपाली नाई से बोले --"उपाली ! तुम वापिस कपिलवस्तु चले जाओ। तुम्हारे जीने के लिए यह सब पर्याप्त है। हम तथागत की शरण ग्रहण करने जा रहे हैं।" और वे चले गये।
26. वे चले गये और वापिस कपिलवस्तु लौटने के लिए उपाली ने विदा ली।

आईये बुद्धा स्पिरीच्यूल पार्क से लगकर प्लॉट बुक करे और बुद्धमय वातावरण निर्मित करे
Project by : Shivli Bodhi Infrast. PVT. Ltd.
Contact : Manish Bagde- 09370516530, Paras Bagde-09303744268

## ➤ मोदी का विदेश दौरा

जब से केन्द्र मे मोदी सरकार बनी, चाहे सरकार की निति हो या भाजपा के कार्यकलाप, सब मे एक ही उद्देश्य नजर आता है, वह है भारत को हिन्दु राष्ट्र बनाना। भारत की आंतरिक गतिविधिंयों के अलावा विदेश नीति भी हिन्दु निति के रुप मे दिखाई दे रही है। ब्राम्हणवादी जानते है कि संसार के दुसरे धर्मों से हिन्दु धर्म को धोखा नही है। केवल बुध्द धम्म ही हिन्दु धर्म को जड से उखाड कर फेक सकता है। भारत मे ब्राम्हणवादीयों ने बुध्द धम्म को कमजोर करने के लिए दो तरह की नितियां अपनाई है, एक बुध्द धम्म के प्रभाव को कम करना और दूसरी बुध्द धम्म मे ब्राम्हणवाद की मिलावट करना। बाबासाहेब के परिनिवार्ण के बाद इन दो नितियों के तहत प्रतिक्रांति की शुरुवात हुई है। मोदी सरकार आने के बाद यह प्रतिक्रांति चरम सिमा की ओर बढ़ रही है। भारत के अलावा जीन राष्ट्रों मे बुध्द धम्म का प्रचार हुआ है और जो राष्ट्र बौध्द राष्ट्र है उन्हे भी ब्राम्हणवाद से प्रभावित करने का असफल प्रयास किया जा रहा है। विश्व हिन्दु परिषद के प्रचारक अमेरिका से भारत लौट आये है। उन्होंने अनेक बौध्द राष्ट्रों से संपर्क स्थापित किये है और उन राष्ट्रों मे ब्राम्हणवादी विचारधारा फैलाकर बुध्द धम्म का प्रभाव कम करने की कोशीश उनके माध्यम से की जा रही है। उसी प्रकार की कोशीश सरकार का सहारा लेकर मोदी के माध्यम से की जा रही है।

प्रधानमंत्री बनने के बाद मोदी सर्व प्रथम भूतान और नेपाल गये और उसके बाद जापान गये। भूतान और नेपाल मे बुध्द धम्म का अच्छा प्रभाव है और जापान बौध्द राष्ट्र है। उन्होंने दिखावे के लिए बौध्द मंदिरों को भेट दी। उन्होंने भारत मे उद्योग स्थापित करने के लिए आर्थिक मदत मांगी। भारत के बडे उद्योगपतियों का डेलिगेशन भी उनके दौरे के समय जापान गया हुआ था। इन सब के अलावा वह हिन्दु एजेन्डा नही भुले। उन्होंने गंगा की सफाई के आर्थिक मदत मांगी तथा वहां के सम्राट को गीता भेंट की। समतावादी राष्ट्र के प्रमुख को विषमता की शिक्षा देने वाली गीता भेंट करना यह किस उद्देश्य को दर्शाता है, इसे समझना जरुरी है।

## ➤ मोदी राज मे भारत का इतिहास विकृत हो सकता है

इंडियन कांऊसिल ऑफ हीस्टॉरीकल रिसर्च (ICHR) नामक संस्था, जिसका कार्य इतिहास की खोज कर उसे वैज्ञानिक दृष्टी से लिखना है। इस संस्था के अध्यक्ष येल्लप्रगडा सुदर्शन राव को बनाया गया है। राव राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ द्वारा संचालीत अखिल भारतीय इतिहास संकलन समिति के आंध्रप्रदेश शाखा के अध्यक्ष है।

इंडियन कांऊसिल ऑफ हिस्टॉरीकल रिसर्च इस राष्ट्रीय स्तर की संस्था की स्थापना 1972 मे हुई थी। इस संस्था का उद्देश्य ऐसा इतिहास लिखना है जो केवल राष्ट्रीय एकात्मता की दृष्टी से न होकर काल्पनिक आधार पर अंधानुकरण और तत्थ्य हिनता से मुक्त हो। इस संस्था मे अंतर्राष्ट्रीय स्तर के इतिहासकार आर् एस. शर्मा, रोमिला थापर, सतिष चंद्र, अरफान हबीब और बिपिन चंद्र का उल्लेखनिय योगदान रहा है।

बाय़ एस. राव के बारे मे प्रसिध्द इतिहासकार रोमिला थापर ने कहा कि, वह ऐसे इतिहासकार है जिनमे न तो दृष्टी है और न ही वह विद्वान है। उनका कार्य केवल भारत की कथाओं के इतिहास पर है और इस प्रकार का प्रयास भारतीय इतिहास के अध्ययन के महत्वपुर्ण योगदान को कम करने की दिशा मे है। उन्होंने चिता व्यक्त की कि इसका भविष्य के संशोधन पर दुष्परिणाम होगा। इससे साफ होता है कि, नालायक व्यक्ती को इतिहास संशोधन की सर्वोच्च संस्था का मुखीया बना दिया गया है। रोमिला थापर ने लगभग 6 दशक तक भारत के पांरपरिक किताबों का अध्ययन किया। उनका मानना है कि भारत के पांरपरिक किताबों मे समय के साथ लिखान को बढाया गया। इसलिए उन्हें किसी विशेष तारिख पर बनाया गया ऐसा नही कहा जा सकता। उन्हें डर है कि कहीं इन पांरपरिक कथाओं को ऐतिहासीक बताकर उनके घटनाओं की तारिख निश्चित की जा सकती है।

रोमिला थापर मानती है कि, वाय़ एस. राव की नियुक्ती

से इंडियन कांऊसिल ऑफ हिस्टॉरिकल रिसर्च को धोखा है, जो भारतीय जनता पार्टी के शासन के समय तत्कालीन मानव संसाधन मंत्री मुरली मनोहर जोशी द्वारा उत्पन्न किया गया था। 1999 मे सरकार का इंडियन कांऊसिल ऑफ हिस्टॉरिकल रिसर्च के कार्यों मे सिधा दखल था। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के कहने पर इतिहासकार के.एन.पनिकर और सुमित सरकार के शोध ग्रंथो प्रकाशीत करने की रोक लगा दी गई थी। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ द्वारा प्रायोजीत तत्कालीन सरकारने इतिहास के वैज्ञानिक और तार्किक संशोधन पर रोक लगाई थी और इतिहास के शोधकर्ताओं को कम्युनिष्ट कहा गया था। इस अनुभव के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अब भी उसकी पुनरावृत्ति हो सकती है। भारत के सही इतिहास पर खोज कर उसे प्रकाशीत करने की बजाय काल्पनिक और आधारहीन पंरपारिक कथाओं को खासकर रामायण और महाभारत को ऐतिहासीक किताबे बनाने का प्रयास किया जायेगा। इसी प्रकार जिनकी वैज्ञानिक पृष्ठभूमी नही है ऐसी हिन्दु कथाओं प्रमाणित करने की गलत कोशीश की जायेगी और सही इतिहास को विकृत किया जायेगा। इसी कारण अयोग्य होते हुये भी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की विचारधारा के वाय एस. राव को इंडियन कांऊसिल ऑफ हिस्टॉरीकल रिसर्च का अध्यक्ष बनाया गया है।

## ➤ काले धन को रोकने के लिए तथा विदेशों से काला धन भारत मे लाने के लिए सरकार के पास कोई योजना नही

विदेशों से काला धन भारत मे लाने हेतु सर्वोच्च न्यायालय ने स्पेशल इन्वेस्टीगेशन टीम (एस.आई.टी) का गठन करने का आदेश सरकार को दिया गया था। मनमोहन सरकार द्वारा एस.आई.टी.का गठन करना टाल दिया गया था। चुंकी सर्वोच्च न्यायालय द्वारा एस.आई.टी.के गठन के लिए दी गई समय सिमा समाप्त हो रही थी इसलिए मजबुरी वश मोदी सरकार को सरकार गठन होते ही एस.आई.टी.का गठन करना पडा। मोदी सरकार द्वारा अपनी योजना के तहत यह कदम नही उठाया। सर्वोच्च न्यायालय के आदेश का पालन करना उनकी मजबुरी थी इसलिए यह कदम उठाया गया। परन्तु प्रचारीत यह किया गया कि विदेशों से काला धन भारत मे लाने के लिए मोदी सरकार की यह पहली पहल है। मोदी सरकार के सौ दिन पुरे हो गये परन्तु विदेशों से काला धन भारत मे लाने की कोई भी योजना नही बनाई गई। इसी प्रकार काले धन के निर्माण को रोकने के लिए भी मोदी सरकार ने कोई पहल नही की। सरकार की इसे करने की इच्छा भी नही है यह उनकी निति से ही स्पष्ट होता है। इस सरकार की पूंजीपति समर्थक निति है और पूंजीपति ही अक्सर काला धन इकठ्ठा करता है। भारतीय जनता पार्टी ने 2014 के चुनाव मे सर्वाधिक धन खर्च किया है और इस धन की पूर्ति पूंजीपतियों ने की है। जिन्होंने उन्हे मदत की, सरकार उनकी मदतगार होना स्वाभाविक है। जनता ने भाजपा को मोदी ने किए गये वादों के आधार पर मतदान किया है। भारत की जनता भोली है, वह विचार नही करती, विश्वास करती है। इसलिए उसे मुर्ख बनाया जाता है। पूंजिपति चतुर है, नफा-नुकसान के बारे मे सोचता है। इसलिए उसे मुर्ख नही बनाया जाता और मदत के बदले मे मदत की जाती है।

## ➤ शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र मे भारत सरकार उदासीन

शिक्षा से मानव का विकास होता है इसलिए सरकार का दायित्व है कि वह शिक्षा के क्षेत्र मे अधिकाधिक खर्च करे। इसी प्रकार देश के नागरिकों को अच्छी स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध हो इसलिए इस क्षेत्र मे भी सरकार ने अधिक खर्च करना चाहिए। परन्तु इन महत्वपुर्ण क्षेत्रों मे भारत सरकार का योगदान अन्य देशों की तुलना मे बहुत कम है। वर्ल्ड बैंक वर्ल्ड डेवलपमेंट इंडिकेटर्स के निचे दिए गये आकडों से यह स्पष्ट होता है।

**शिक्षा पर खर्च (2012 मे)**

| देश | कुल सरकारी खर्च का प्रतिशत | सकल घरेलु आय का प्रतिशत |
|---|---|---|
| भारत | 11.3 | 3.4 |
| ब्राजील | 14.6 | 5.8 |

| | | |
|---|---|---|
| अर्जेंटीना | 15.3 | 6.3 |
| मेक्सीको | 19.6 | 5.2 |
| दक्षिण आफ्रीका | 20.6 | 6.6 |
| थायलैंड | 31.5 | 7.6 |

**स्वास्थ्य पर खर्च (2011-12 में)**

| देश | कुल सरकारी खर्च का प्रतिशत | सकल घरेलु आय का प्रतिशत | प्रतिव्यक्ती पर सरकारी खर्च (डॉलर में) |
|---|---|---|---|
| भारत | 33.1 | 4.0 | 61 |
| दक्षिण आफ्रीका | 47.9 | 8.8 | 645 |
| मेक्सीको | 51.8 | 6.1 | 618 |
| ब्राजील | 46.4 | 9.3 | 1056 |
| अर्जेंटीना | 69.2 | 8.5 | 995 |
| थायलैंड | 76.4 | 3.9 | 213 |

## ➤ पूंजीपतीयों को लाभ पहुंचाने और जनता की आवाज बंद करने के लिए सरकारी इंटेलीजन्स एजेन्सी का उपयोग

भारत मे आई. बी. नामक सरकारी संस्था जानकारी इकट्ठा करने के लिए सरकारी इटेलिजन्स का काम करती है। इस एजेन्सी से प्राप्त जानकारी के आधार पर सरकार जनहित मे कदम उठाती है। परन्तु फ्रंटलाईन नामक अंग्रेजी पत्रिका मे प्रकाशीत लेख को पढकर ऐसा प्रतित होता है कि आई.बी.आम जनता के हित मे नही परन्तु संघ परिवार और भारतीय जनता पार्टी के हित मे और पूंजीपतियों के हित मे काम कर रही है।

आई.बी की 21 पेज की रिपोर्ट भारतीय जनता पार्टी के चार्टर्ड अंकाउटंट नेता के कार्यालय से लीक होना यह साबित करता है कि आई. बी. भाजपा हित मे काम करती है। इस रिपोर्ट मे जिन गैर सरकारी संगठनों पर आरोप किये गये है उनमे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ तथा भाजपा से संबधित किसी भी गैर सरकारी संगठन का नाम नही है। यह भी साबित करता है कि आई. बी. भाजपा के हित मे ही काम करती है।

इस रिपोर्ट मे उन गैर सरकारी संगठनों के नाम है जिन्होंने जनहित मे बडे पूंजिपतियो द्वारा निर्माण किये जा रहे उद्योगों का विरोध किया और जनभागीदारी से आंदोलन किए। इन उद्योगों के नाम है - परमाणु पावर प्लांट, युरेनियम माईन, कोल फायड पावर प्लांट, जिनेटीकली मोडी फाईड आरगेनिजन्स, मेगा ईडस्ट्रीयल प्रोजेक्ट (पास्को और वेदांत), हाईडल प्रोजेक्टस् (अरुणाचल प्रदेश मे नर्मदा सागर पर), और एक्सट्रेक्टीव इंडस्ट्रिज (तेल, चूना) इन उद्योगों के विरुध्द और जनता के हित मे काम करने वाले गैर सरकारी संगठनों को विदेशों से दान मिलता है जो जनहीत मे खर्च किया जाता है। इन गैर सरकारी संगठनों पर आई.बी.की रिपोर्ट के अनुसार राष्ट्र विरोधी गतिविधीयों मे लिप्त होने का आरोप है। संघ परिवार और भाजपा से संबधित गैर सरकारी संगठनों को भी भरपुर विदेशी दान मिलता है। यह संगठन जनहित मे काम करने का दिखावा करते है परन्तु वास्तव मे वह संघ परिवार के हित मे काम करते है। बडी आश्चर्य की बात है कि जो जनहीत मे काम करते है उन्हे इस देश की इंटेलिजन्स एजेन्सी राष्ट्र विरोधी कहती है और जो जनहित का दिखावा कर अपने उद्देश्य पुर्ती लिए काम करते है उनके बारे मे यह इंटेलिजन्स एजेन्सी चुप रहती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि यह इंटेलिजन्स एजेन्सी जनहित मे नही, संघ परिवार के हित मे काम करती है।

आई.बी.की इस रिपोर्ट के आधार पर उन गैर सरकारी संगठनों के विरुध्द सरकारी कार्यवाही होगी, जन आंदोलन को समाप्त किया जायेगा और उन उद्योगों को शुरु किया जायेगा जिससे पूंजीपतियों को लाभ मिलेगा और आम जनता का अहित होगा।

आई.बी.ने केवल उन्ही गैर सरकारी संगठनों (एन.जी.ओ) के नाम अपनी रिपोर्ट मे दिए है जिनके माध्यम से जन आंदोलन किये जा रहे है जिनका प्रभाव पूंजीपतीयों पर हो रहा है। दूसरे एन जी.ओ.भी है जिन्हें विदेशों से दान स्वरुप करोड़ो रुपये मिलता है। वह जिस कार्य के लिए दान लेते है

उन कार्यों पर दान राशी खर्च नही करते है और अन्य कार्यों पर खर्च करते है। ऐसा ही भारत की सबसे बडी एन.जी.ओ. है, राष्ट्रीय स्वयं सेवक सघं। विभिन्न स्वतंत्र संस्थाओं ने आर् एस.एस.के संबध मे रिपोर्ट मे कहा है कि उसे उसकी विभिन्न विदेशी एजेन्सीयों से अपार धन सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यों के नाम पर मिलता है परन्तु वह उस धन का उपयोग देश मे अराजकता पैदा करने मे करती है।

सबरंग कम्यूनिकेशन और साऊथ एशीया सिटीजन्स वेब नामक दो सस्थाओं ने सन 2002 मे अमेरिका से आर् एस. एस. को मिलने वाले धन के संबध मे 150 से अधिक दस्तावेजों का अध्ययन कर यह पाया कि अमेरिका से अनेक औद्योगीक घरानों से इन्डीया डेवलपमेन्ट एण्ड रिलिफ फंड (आइ.डी.आर् एफ़) नाम के संगठन के माध्यम से आर.एस. एस.को विदेशी धन पहुंचाया जाता है। आई.डी.आर् एफ.नाम से "भारत के सामाजिक कार्य" के नाम पर धन इकट्ठा करती हेतु अमेरिका मे बडे पैमाने पर कार्यक्रम आयोजित करती है और प्राप्त धन मे से लगभग 83 प्रतिशत धन सघं परिवार के विभिन्न संगठनों को देती है। आई.डी. आर. एफ.के आयकर विवरणी का अध्ययन करने के पश्चात यह पाया गया था कि, उसने भारत को मुख्य रुप से जिन संगठनों को धन मुहय्या कराया था, वह है - (1) विकास भारती (बिहार), (2) स्वामी विवेकानंद ग्रामिण विकास संस्था (तमिलनाडू), (3) सेवा भारती (दिल्ली), (4) जनसेवा विद्या क्रेन्द (कर्नाटक), (5) वनवासी कल्याण आश्रम (मध्य प्रदेश), (6) वनवासी कल्याण आश्रम (गुजरात), (7) वनवासी कल्याण आश्रम (नगर हवेली), (8) गीरीवासी वनवासी सेवा प्रकल्प (उत्तर प्रदेश) (9) जी.देशपाडे वनवासी वसतीगृह (महाराष्ट्र)। यह सभी संस्थायें राष्ट्रीय स्वयं सेवक सघं से संबधीत है और उसके साहित्य मे इन संस्थाओं का उल्लेख है। इसी प्रकार आई.डी.आर् एफ.ने जिन 75 भारतीय संगठनों को धन दिया उनमे से 60 संगठन आर् एस.एस.से संबधीत है।

संघ परिवार को धन मुहय्या कराने वाले संगठन संसार के अनेक देशों मे बनाये गये है। यह संगठन एक दूसरे के साथ संबध बनाये हुये है। जिस प्रकार अमेरिका मे आई.डी. आर् एफ है उसी प्रकार इंग्लैंड मे समाज सेवा के नाम पर सेवा इंटरनेशनल धन इकट्ठा कर संघ परिवार को भेजती है। उडिसा मे चक्रवात से नुकसान हुआ था और गुजरात मे भूकंप आया था उस वक्त सेवा इंटरनेशनल ने लोगों को राहत पहुचाने धन भेजा था, आवाज - दक्षिण एशीया वाच लि.के रिपोर्ट के अनुसार सेवा इंटरनेशनल ने इन कार्यो के लिए जो धन भेजा था उसमे से अधिक तर धन संघ परिवार के संगठनों ने ले लिया था। इंग्लैंड के उद्योगपती सेवा इंटरनेशनल को धन इस आशा से भी देते है कि उनका माल भारत मे आ सके।

आई.बी.की रिपोर्ट से यह संकेत मिलते है कि भारत मे पूंजीपति जो भी करे जनता उनके आडे न आये। चाहे जनता का कितना भी नुकसान हो, उन पर कितनी भी आपत्ती आये परन्तु पूंजिपतियों पर कोई भी अंकूश न लगाया जाय। पूंजीपति खुब संपत्ती अर्जित करे और उसमे से कुछ हिस्सा संघ परिवार और भाजपा के मिलता रहे ताकि उनके प्रचार और प्रसार मे कोई कमी नही आ सके, भले ही जनता का चाहे जो नुकसान हो।

## ➤ उत्तर प्रदेश मे सांप्रदायीक तनाव रहा तो भाजपा विजयी होगी - अमित शहा

दंगे के आरोपी भाजपा के अध्यक्ष अमित शहा ने एक चैनल पर इंटरव्यू के दरम्यान यह बात कही कि, यदि उत्तरप्रदेश मे सांप्रदायीक तनाव रहा तो भाजपा विजयी होगी। यह उनका गुजरात का अनुभव हो सकता है। गुजरात मे सांप्रदायीक तनाव निर्माण करने बाद मोदी ने चुनाव जिते थे।

उत्तर प्रदेश के साथ महाराष्ट्र और हरियाणा मे भी उपचुनाव होने वाले है। अमित शहा से इन राज्यों मे भी भाजपा विजयी होगी यह दावा किया गया। इसलिए यह आंशका व्यक्त की जा रही है कि, क्या इन राज्यों मे भी सांप्रदायीक दंगे करवा कर सांप्रदायीक तनाव निर्माण किया जायेगा। उल्लेखनिय है कि, सोनीया गांधी ने यह आरोप लगाया था कि, केन्द्र मे मोदी सरकार बनने के बाद 600 स्थानों पर दंगे करवाये गये थे। इसी प्रकार यह भी उल्लेखनीय है कि, आदित्यनाथ को उत्तर प्रदेश का चुनाव प्रमुख बनाया गया है जिन्होंने आम सभाओं मे और संसद मे

मुसलमानों के विरुध्द आपत्तीजनक बयान दिये है।

## ➤ 'लव जेहाद' के नाम से भागवत जहर फैला रहे है

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसघंचालक मोहन भागवत ने गाजीयाबाद मे कृष्णा डेटंल कॉलेज द्वारा आयोजित संमारोह मे कहा कि, हिन्दु लडकियों को प्रेमजाल मे फंसाकर शादी के बाद धर्म परिवर्तन के लिए दबाव डाला जाता है, इस लव जेहाद का अर्थ हिन्दु लडकियों को समझाना चाहिए ताकि वह फंसेगी नही। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के समाचार पत्र पांचजन्य और आर्गेनायजर के माध्यम से यह खबर फैलाई जा रही है कि, लव जेहाद के पिछे सिमी और लष्कर -ए- तोयबा इन संगठनों का हाथ है। लव जेहाद के मामलों मे सघं परिवार कुछ उदाहरण देता है परन्तु इन उदाहरणों मे भाजपा नेता मुक्तार अब्बास नकवी और शाहनवाज हुसेन के उदाहरण नही दिये जाते।

शादी के बाद धर्म परिवर्तन करने के लिए दबाव डालने के कुछ मामले हो सकते है जिनका निराकरण न्यायीक प्रकिया द्वारा किया जा सकता है। परन्तु संघ परिवार इसे आम बनाने जा रहा है। यदि महिला अपनी मर्जि से धर्म परिवर्तन करती है तो उसे लव जेहाद का रुप नही दिया जा सकता। संविधान मे प्रदत्त इस अधिकार को कोई छिन नही सकता। वास्तविकता तो यह है कि, हिन्दु धर्म के ठेकेदारों को लोग धर्म परिवर्तन कर हिन्दु धर्म को त्याग रहे है इस बात का डर है। इसलिए वह लव जेहाद जैसे फार्मुले इजाद कर रहे और लोगों के मन मे दूसरे धर्मो के प्रति द्वेष निर्माण किया जा रहा है।

## ➤ ब्राम्हणी धर्म की कुप्रथा के कारण 29 लडकियों की जान गई

ब्राम्हणी धर्म की सभी प्रथायें मानव विरोधी है इसलिए उन्हें कुप्रथा ही कहना चाहिए। अनेक वर्षो से चली आ रही परंपरा और अंधविश्वास के कारण लोग उनसे मुक्त नही हो पा रहे है। ऐसी ही एक कुप्रथा बिहार मे प्रचलित है जिसके अनुसार बहनों को अपने भाइयों के दिघायूषी होने के लिए उपवास करना होता है और नदी या नाले मे या तालाब मे स्नान करना होता है। गया जिले के बारडीहा गाव मे लडकियों ने इस प्रथा के अनुसार उपवास किया और तालाब मे स्नान करने गई तब 25 लडकियां उस तालाब मे डुबकर मर गई। इसी प्रकार पटना जिले के जयनदपुर गाव मे भी 4 लडकियां पानी मे डुबकर मर गई।

भारत मे आज भी ब्राम्हणी धर्म के अनुसार कर्मकांड, पुजापाठ, संस्कार और त्योहार किए जाते है जिनसे लोगों को लाभ मिलने की बजाय उन्हें नुकसान ही होता है। परन्तु अंधविश्वास के कारण यह सब किया जा रहा है। इस अंधविश्वास को ब्राम्हण वर्ग भी बढाने का काम कर रहा है। लोगों को बताया जाता है कि, ईश्वर नाम की कोई अदृश्य शक्ति यह करने से उनका कल्याण करेगी। वास्तव मे यह सब करने से नुकसान ही है, लाभ नही है। झूठी आशा और लोभ के कारण लोग यह सब करते है। यह इसलिए भी हो रहा है कि लोग सत्य जानने की कोशीश नही करते। यदि लोगों ने सत्य जान लिया तो इस अंधविश्वास से मुक्त होकर ईश्वर पर विश्वास करने की बजाय अपने सत्कर्म पर विश्वास करने लगेंगे।

## ➤ कानुन मे संशोधन - जुर्म कबुल करें तो सजा माफ होगी

भारत के विभिन्न न्यायालयों मे अनेक प्रकरण लंबित है। इन प्रकरणों की संख्या कम करने के लिए सी.आर् पी.सी. को धारा 265 मे बदलाव किया गया है।

भारतीय दंड विधान की धारा 323,324, 325 के अंतर्गत मारपिट के प्रकरण, धारा 489-अ के अंतर्गत पारिवारीक झगडे के प्रकरण तथा 7 वर्ष तक की सजा वाले जुर्म के आरोपी द्वारा जुर्म कबुल करने पर सजा माफ की जा सकती है। यह माफी अनुसूचित जाति - जनजाति अत्याचार अधिनियम अंतर्गत प्रकरणों मे, भ्रष्टाचार प्रतिबंध कानुन के अंतर्गत प्रकरणों मे, सामाजिक जुर्म और आर्थिक जुर्म के प्रकरणों मे नही मिलेगी। इस बदलाव के प्रचार के लिए पुलिस थानों मे जागृति की जा रही है। इस संबध मे प्रकिया के लिए पिडित, अपराधी, पिडित के वकील और अपराधी के वकील को न्यायालय की अनुमती लेना अनिवार्य होगा।

## ➤ अपराधी प्रवृत्ती के अमित शहा भाजपा के अध्यक्ष बने

सभी जानते है कि अमित शहा पर गुजरात में अपराधीक मामले दर्ज हुये थे। वह गुजरात के गृहमंत्री थे तब सोहराबुद्दीन फर्जी मुठभेड मामले में उन्हें त्यागपत्र देना पडा था। यही नही कुछ अपराधीक मामलों के कारण न्यायालय ने उन्हें गुजरात से तडीपार भी किया था। जब उन्हें तडीपार किया था तब वह उत्तरप्रदेश रह रहे थे। ऐसे अपराधी प्रवृत्ती के व्यक्ती को भाजपा का अध्यक्ष बनाया गया है। यह कोई आश्चर्य की बात नही है क्योंकि भारत की राजनिति में ऐसे ही लोग सफल है।

## ➤ गुजरात में आदिवासी विद्यार्थी नदी मे तैरकर स्कुल जाते है

गुजरात के उदयपुर जिले में लगभग 125 विद्यार्थी रोज हिरण नदी तैरकर स्कुल जाते है। यह नदी 600 मिटर चौडी है। विद्यार्थी अपने साथ पितल की एक गुंडी रखते है जिसे स्थानिय भाषा में गोहरी कहते है। पिछले 70 वर्षों में राजनेताओं से इस नदी पर पुल बनाने का आश्वासन मिल रहा है, परन्तु अब तक पुल नही बना है।

## ➤ राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ द्वारा निर्णय लिया गया कि मोदी सरकार के विरोध मे आंदोलन नही किया जायेगा

भोपाल में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कार्यालय मे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ द्वारा चिंतन बैठक आयोजित की गई थी। इस बैठक मे संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत, विश्व हिन्दु परिषद के नेता उपस्थित थे। इस बैठक में मोदी सरकार की आर्थिक नितियों का विरोध होने लगा तब यह निर्णय लिया गया कि मोदी के किसी भी निर्णय का संघ से जुडी हुई कोई भी संस्था, जैसे स्वदेशी जागरण मंच, भारतीय मजदुर संघ, किसान संघ दो वर्षो तक विरोध नही करेंगे। यदि मोदी सरकार ने कोई गलत निर्णय भी लिया तो भी रस्ते पर आंदोलन करने की बजाय संबंधीत मंत्री से चर्चा भर की जायेगी। सरकार के गलत निर्णय के पिछे सरकार की मजबुरी को समझाने की जिम्मेदारी इन संगठनों की होगी ताकि सरकार के बारे में दुर्भावना पैदा न हो सके।

उपरोक्त निर्णय लेने का कारण कोई भी जानकार व्यक्ती समझ सकता है। वह कारण यह है कि, जब से मोदी ने सत्ता संभाली उन्होंने संघ के एजेन्ड के अनुसार काम करना शुरु कर दिया है। ऐसा निर्णय लेना संघ की रणनिति का भाग है। यदि मोदी सरकार जनविरोधी निर्णय भी लेती है तो राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के कार्यकर्ता उस निर्णय को जनता के हित में है ऐसा प्रचारीत करेंगे, जनता को गुमराह करेंगे क्योंकि वह जानते है कि भारत की अधिक तर जनता अंधविश्वासी है, विचार नही करती और सच्चाई जानने की कोशीश नही करती। अब हर भारतीय की यह जिम्मेदारी है कि सरकार के हर निर्णय को अपनी बुध्दी का उपयोग कर अच्छी तरह समझे।

## ➤ शिक्षक दिन पर मोदी के भाषण का फर्मान

बहुत से लोग प्रसिध्दी पसंद है परन्तु हमारे देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ज्यादा ही प्रसिध्दी पसंद है। जब वह गुजरात के मुख्यमंत्री थे तब उन्होंने अपने प्रसिध्दी के अनेक प्रयोग किए। शिक्षक दिन पर टेलीकान्फरसींग के जरिए विद्यालयों मे भाषण देने का प्रयोग वह गुजरात मे कर चुके है। 5 सितंबर को शिक्षक दिन के अवसर पर शिक्षकों को संबोधित करने की बजाय वह विद्यार्थियों को संबोधित करते है। उपर से शिक्षकों पर स्कुल मे टीवी और जहां बिजली नही है वहां जनरेटर की व्यवस्था करने की सख्ती की गई। शिक्षक दिन शिक्षकों के लिए खुशी का दिन होने की बजाय मुसिबत का दिन बना दिया गया क्योंकि अनेक विद्यालयों में बिजली की व्यवस्था नही है और इतनी अधीक संख्या मे टीवी और जनरेटर भी नही है। यह सब व्यवस्था करने के लिए विद्यालयों में फंड भी नही होता है। सारी मुसीबतों के बावजुद शिक्षकों को 5 सितंबर को शिक्षक दिन की बजाय प्रधानमंत्री भाषण दिन मनाना पडा। अंग्रेजी में कहावत है, King can do no wrong अर्थात् राजा गलत नही कर सकता। शिक्षक दिन की घटना ने इस कहावत को सही

साबित कर दिया। भारत के संदर्भ मे यह कहा जा सकता है कि, मोदी गलत भी कर रहे है तो राष्ट्रीय स्वयं संघ, संघ परिवार और भाजपा के नेता और प्रवक्ता गलत को सही साबित करने की क्षमता रखते है। इनमें से कुछ लोगों को टीवी पर चर्चा के दौरान चिल्लाते हुये हम देख सकते है।

5 सितंबर को मोदी ने भाषण दिया और विद्यार्थियों के साथ संवाद भी किया। इस संबंध मे केवल इतना ही कहा जा सकता है कि कथनी और करनी में अंतर की पंरपरा को जारी रखा जायेगा। आम बजट मे शिक्षा के मद में जितना आवश्यक है उतना आबंटन नही होगा, स्मार्ट सिटी बनेगी परन्तु स्मार्ट विद्यालय नही बनेंगे, शिक्षकों की कमी पुरी नही की जायेगी, कामचलाऊ शिक्षकों से काम चलता रहेगा, निजि विद्यालयों के मुकाबले सरकारी विद्यालयों में शिक्षा का स्तर नही बढेगा, गरिबों के लडके उच्च शिक्षा से वंचित रहेंगे, सरकारी सुविधाओं का लाभ गरीबों को नही मिलेगा, पाठ्यक्रम धर्म निरपेक्षता पर आधारित न होकर हिन्दु धर्म आधारित होगा इत्यादी। मोदी का भाषण सुनाने के लिए 126 करोड रुपये का खर्च किया गया।उनका भाषण देश के 8.5 लाख स्कुलों मे 9.5 करोड बच्चों को सुनाया गया।

## ➤ भारत सरकार जातीवादी और अल्पसंख्यक विरोधी- युरोपिय संसद

स्पेन की अलायन्स ऑफ लिबरल्स एन्ड डेमोक्रेट्स ऑफ युरोप इस संगठन की सदस्य इजास्कुन बिलबाओं बैंडिका ने युरोपिय संसद के उपाध्यक्ष के समक्ष तीन प्रश्न रखे और माँग की कि भारत की विषमता पर ध्यान दिया जाए उसके बाद ही नरेन्द्र मोदी के साथ अनुबंध किया जाए। वह तीन प्रश्न है - (1) भारत मे विषमता के मुद्दे पर युरोपिय संघ भारत सरकार के साथ कौन से कदम उठायेगा? (2) युरोपिय संघ और भारत के बिच मुक्त व्यापार पर चर्चा हो रही है। क्या उसमे भारत के सामाजिक, वांशीक और धार्मिक मुद्दों को महत्व दिया गया? (3) अल्पसंख्यकों से संबधीत भारत की निति के कारण दक्षिण एशीया मे शांति और सुरक्षा को धोखा निर्माण हो सकता है। इसलिए क्या युरोपिय संघ अन्य देशों के साथ चर्चा कर रहा है?

बैंडिका ने लिखा है कि, भारत मे बहुत बडी विषमता है। भारत के अल्पसंख्यकों में बहुत से गरीब है। भारत में जाति आधार पर और धर्म के आधार पर दंगे कराये जाते है। इससे स्वाभाविक रुप से यह प्रश्न निर्माण होता है कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की विषमता, जातीवाद, धर्मवाद, गरीबी समझ मे आती है परन्तु भारत की जनता को क्यों समझ में नही आ रही है? इसका उत्तर भी यह है कि भारत की बहुसंख्यक जनता ब्राम्हणवाद के जाल में पुरी तरह फंस चुकी है, वह भावना आधार पर विचार करती है, बुध्दी के आधार पर नही। इसलिए सत्य और असत्य को पहचान नही पा रही है।

## ➤ अच्छे दिन नही बुरे दिन आने वाले है - भारतीय रिजर्व बैंक

चुनाव प्रचार के समय नरेन्द्र मोदी ने नारा दिया था, 'अच्छे दिन आनेवाले है'। जनता ने भावनावश उस पर विश्वास किया और भाजपा को बहुमत से चुनकर दिया। मोदी की सरकार बनने के बाद भारत की जनता मंहगाई के कारण बुरे दिन का अनुभव कर रही है। भारतीय रिजर्व बैंक ने अपनी वार्षिक रिपोर्ट में यह कहा है कि बुरे दिन रहने वाले है।

जून माह मे खुर्दा मंहगाई दर 7.46 प्रतिशत थी, वह जुलै माह में बढकर 7.96 प्रतिशत हो गई। इसीके परिणाम स्वरुप जुन मे सब्जीयों किंमत 16.48 प्रतिशत बढी थी जो जुलै माह मे 22.48 प्रतिशत तक बढ गई। अतर्राष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की किंमत कम होने के कारण डीजल की किंमतें कम हो गई परन्तु अन्य आर्थिक कारणों से मंहगाई बढ सकती है। जनवरी 2015 तक मंहगाई 8 प्रतिशत और जनवरी 2016 तक 6 प्रतिशत तक नियंत्रण में लाये जाने के आसार है।

भारतीय रिजर्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार मंहगाई बढ सकती है, जिसे जनता भी अनुभव कर रही है। मोदी के आश्वासन पर विश्वास कर अब जनता ठगी हुई महसुस कर रही है।

## ➤ महाराष्ट्र मे अनुसुचित जाती और

## अनुसुचित जनजाति पर अत्याचार के 2068 मामले दर्ज

महाराष्ट्र के गृहमंत्री आर् आर् पाटील ने विधानसभा मे जानकारी दी कि अनुसुचित जाति और अनुसूचित जनजाति पर अत्याचार के जनवरी 2013 से दिसंबर 2013 तक वर्ष भर में 2068 मामले दर्ज किये गए। पुलिस द्वारा दर्ज नही किये मामलो को मिलाया जाय तो यह संख्या दस गुना अधिक होगी। इस अवधी में अनुसूचित जाति पर अत्याचार के 1634 मामले तथा अनुसूचित जनजाति पर अत्याचार के 418 मामले दर्ज किए गए।

जनवरी 2013 प्रारंभ मे 556 मामले पुलीस के पास जाचं के लिए लंबित थे। दिसंबर 2013 से अंब तक 1854 मामलों मे जांच पुरी हो गई और 770 मामलों में पुलीस की जांच पुरी होनी थी।

अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति पर जातिद्वेष के कारण अत्याचार होते है। इसलिए सरकार यदि वास्तव में इन वर्गों पर अत्याचार समाप्त करना चाहती है तो जातिवाद को जड़ से समाप्त करना होगा अर्थात् जाति निर्मुलन करना होगा। उपरी उपाय और कानुनी कार्यवाही इसका हल नही है। अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति पर इस प्रकार के अत्याचार अन्य राज्यों में भी हो रहे है। इसलिए पुरे भारत से जाति का निर्मुलन हो यही एकमात्र उपाय है।

## ➤ बलात्कार रोकना संभव नही - महाराष्ट्र के गृहमंत्री आर् आर् पाटील

महाराष्ट्र के विधान परिषद में गृहमंत्री आर् आर् पाटील ने राज्य मे महिलाओं पर बलात्कार के आंकडे प्रस्तुत किए। वह इस प्रकार है -

| | |
|---|---|
| शादी का प्रलोभन देकर | 42% |
| पडोसी द्वारा | 21% |
| मित्र द्वारा | 18% |
| जमिनदार द्वारा | 1.5% |
| परिचितों द्वारा | 6.4% |
| पैसे के प्रलोभन से | 3% |
| रिश्तेदारों द्वारा | 6.65% |
| पिता और भाई द्वारा | 6.34% |

आर. आर. पाटील ने कहा कि बलात्कार जैसे घृणास्पद कृत्य के बारे में समाज की मानसिकता बदलने की आवश्यक्ता है। इसका मतलब साफ है कि सरकार बलात्कार पर अंकुश नही लगा सकती, जब तक समाज की मानसिकता नही बदली जाती। परन्तु आर् आर् पाटील को यह बताना जरुरी है कि जब तक समाज मे सदाचार प्रस्थापित नही होता बलात्कार जैसी घटनाओं पर रोंक नही लग सकती और मुख्यरुप से सदाचार केवल और केवल बुध्दीज्म से ही प्रस्थापित हो सकता है।

## ➤ अंधविश्वास की चरम सिमा - एक पिताने अपने पुत्री की शादी कुत्ते के साथ करायी

झारखंड की सिमा पर छत्तिसगढ के एक गांव मे एक पिताने अपने पुत्री की शादी एक कुत्ते के साथ करायी। उस लडकी का नाम है मांगली अमन मुंडा। एक भोंदुबाबा ने मांगली के पिता को बताया कि, उसकी 18 साल की पुत्री मांगली पर भुत प्रेत का साया है। उसकी शादी कुत्ते से करनी होगी। यदि ऐसा नही किया तो मांगली के पिता और उसका परिवार बर्बाद हो जायेगा। मांगली के पिताने भोंदुबाबा पर विश्वास किया। उसने गांव से एक कुत्ते को पकडकर लाया और पुरे रस्म रिवाज के साथ मांगली की शादी कुत्ते से करायी। लडकी पिता की मर्जी के आगे असाहाय थी और कुछ कह नही सकी।

ऐसी घटनायें केवल भारत में ही हो सकती है। इस विज्ञानयुग में भारत मे ऐसे अनेक लोग है जो अंधविश्वास के शिकार है। इस अंधविश्वास की जड ब्राम्हणी धर्म है। जब तक भारत के लोग ब्राम्हणी धर्म के चंगुल से मुक्त नही होते और बुध्द के विज्ञानवादी धम्म का स्विकार नही करते तब तक इस प्रकार की घटनायें होती रहेगी।

## ➤ भारत में दलितों पर अत्याचार बडे पैमाने पर बढे

नेशनल क्राईम रेकार्ड ब्युरो के आंकडों के अनुसार सन 2004 से 2013 के बिच हरियाणा में दलितों पर अत्याचारों की संख्या 245 प्रतिशत बढी है। इस अवधी में हरियाणा में दलितों पर अत्याचार के 3198 मामले दर्ज हुए है। 1994 से 2003 के बिच यह संख्या 1305 थी। भारत के अन्य राज्यों मे भी दलितों पर लगातार अत्याचार हो रहे है। उन्हें देखते हुये यह कहां जा सकता है कि देश में दलितों पर अत्याचार जातिद्वेष के कारण होते है। इसलिए यह साबित होता है कि जातीद्वेष बढ रहा है। राज्य सरकारों मे, शासकीय व्यवस्था में और ब्राम्हणी धर्म को मानने वालों में जातिद्वेष है। इसलिए दलितों पर अत्याचार बढ रहे है। दलितों पर अत्याचार समाप्त करने के लिए जाति व्यवस्था को समाप्त करना ही एक-मात्र उपाय है। यह करने के लिए सरकार की बडी ईच्छा शक्ती की आवश्यक्ता है।

## ➤ 2011 तक भारत में 6 करोड 54 लाख 94 हजार 604 झोपडपट्टी धारक

सन 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में 6,54,94,604 झोपडपट्टी धारक है। सन 2001 की जनगणना के अनुसार भारत में 5,23,71,589 झोपडपट्टी धारक थे। इस प्रकार 2001 से 2011 के बिच झोपडपट्टी धारकों की संख्या एक करोड तीस लाख से बढी है। दोनों पार्टीयों की सरकारे एक दुसरे पर दोषारोपण करते है परन्तु दोनों का काम गरिबों के विरोध में ही है। भाजपा के मंत्री वेकंय्या नायडु ने लोकसभा में बताया कि 2001 से 2011 के बिच कांग्रेस के शासन में झोपडपट्टी धारकों की संख्या 1 करोड 30 लाख से बढी है जब की 2001 में झोपडपट्टी धारकों की संख्या 5,23,71,589 थी और उस समय भाजपा की सरकार थी। इस संबंध में वह कुछ नही बोलते। कांग्रेस तथा भाजपा दोंनों की सरकारों ने झोपडपट्टी वासीयोंको अच्छे घर नही दिलाये इसलिए यह संख्या बढती ही जा रही है और जनगणना 2021 की जनगणना में और अधिक होगी।

## ➤ राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के कार्यकर्ता सुनिल जोशी की हत्या के मामले में प्रज्ञा सिंह के विरुध्द चार्जशीट दाखिल

सन 2011 में देवास पुलिस ने आर् एस्.एस्.कार्यकर्ता सुनिल जोशी की हत्या के मामले में साध्वी प्रज्ञा के विरुध्द चार्जशीट दाखील की थी। राष्ट्रीय जांच एजेन्सी - एन्.आई.ए. ने दुबारा जांच कर फिर से साध्वी प्रज्ञा सिंह के विरुध्द विशेष अदालत में चार्ज शीट दाखिल की है। इस चार्ज शीट में देवास पुलिस द्वारा दाखिल आरोपो के अलावा और भी आरोप एन्.आई.ए.ने लगाए गये है। साध्वी प्रज्ञा सिंह ठाकुर इस प्रकरण में अभी जेल में है। उसके अलावा राजेन्द्र चौधरी और लोकेश शर्मा भी इस प्रकरण में आरोपी है।

सभी जानते है कि प्रज्ञा सिंह ठाकुर पर मालेगांव बमकांड में आरोपी है। वह अपने साथी कार्यकर्ता सुनिल जोशी की हत्या में भी आरोपी है। इससे हम सोच सकते है कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के कार्यकर्ता कितने क्रुर होते है। वह बमकांड कर लोगों की हत्या तो करते ही है साथ ही अपने साथी की भी हत्या करते है।

## ➤ राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ भारत का वास्तविक इतिहास बदलना चाहता है।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत ने भारत के इतिहास के पुनर्लेखन की जानकारी दी है। वह भारत का वास्तविक इतिहास बदलकर पुराण पर आधारित इतिहास बनाना चाहते है। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना के सौ साल सन 2025 में पुरे होगें। उस अवसर पर पुराणों पर आधारित इतिहास जारी किया जायेगा। आने वाले 10 वर्षोतक इतिहास लिखान का प्रोजेक्ट चलेगा। इस प्रोजेक्ट को 'पुराण अंतर्गत इतिहास' यह नाम दिया गया है।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का अखिल भारतीय इतिहास संकलन संगठन पुराण अंतर्गत इतिहास इस प्रोजेक्ट पर काम कर रहा है। इस प्रोजेक्ट पर काम करने वाले 100 इतिहास कारों की गुजरात के बनासकांठा में 22 से 24 अगस्त को कार्यशाला आयोजित की गई थी। अखिल

भारतीय इतिहास संकलन संगठन की मदत के लिए आर् एस्.एस्.के कार्यालय केशव कुजं में व्यवस्था की गई है।

आर् एस्.एस्.की इस विध्वंसकारी योजना के अंतर्गत 670 जिलों का स्वतंत्र इतिहास लिखा जायेगा और आदिवासी समाज का भी इतिहास फिर से लिखा जायेगा। प्राचीन समय में ब्राम्हणों ने काल्पनिक, चमत्कारीक और तत्थ्यहिन बातें लोगों के दिलों दिमाग मे डाली थी और जनता को सत्य से दूर रखा था उसका परिणाम भारतीय आज भी भोग रहे है। उसी प्रकार वर्तमान मे असत्य इतिहास लिखकर लोगों की भावनाओं के साथ खिलवाड किया जायेगा। कुल मिलाकर आर् एस्. एस्. को भारत को ब्राम्हणवादी राष्ट्र बनाना है। उसके लिए मोदी सरकार का साधन के रुप मे पुरा उपयोग किया जायेगा। अब हर भारतीय का यह कर्तव्य है कि, इस बदलती हुई परिस्थिति पर खुले दिमाग से विचार करे और निर्णय ले।

## ➤ गुजरात में दलित युवती को जला दिया गया

गुजरात के सुरेन्द्र नगर जिले के सायला गांव में आठ लोगों ने एक दलित युवती से छेडछाड की और बाद में उसे जला दिया। सायला के आंबेडकर नगर में मोतभाई सुनेरा और सात अन्य लागों ने 15 वर्षिय दलित लडकी से छेडछाड की। जब उस लडकी ने विरोध किया तो उसके शरीर पर केरोसिन डालकर उसे जला दिया। युवती गंभीर रुप से जल गई है और उसका इलाज अस्पताल मे चल रहा है।

इस घटना के बाद पुलिस ने घटना की रिपोर्ट तो दर्ज की परन्तु किसी को भी गिरफ्तार नही किया गया। यह खबर है कि गुजरात में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लोगों पर अत्याचार बढे है। इन मे से अधिक तर मामलों में पुलिस रिपोर्ट नही लिखती। इन समुदायों पर हो रहे अन्याय की गुहार लगाने पर उन्हें न्याय नही मिलता। यही गुजरात मॉडल है।

## ➤ रक्षाबंधन पर वैदिक राखी बांधनी चाहिए - ज्योतिषी अनिल वैद्य

रक्षा बंधन के दिन इस वर्ष अपने भाई को सभी मंगल कार्य वाली वैदिक राखी बांधनी चाहिए ऐसी सलाह ज्योतिषी अनिल वैद्य ने दी है। उन्होंने वैदिक राखी बनाने की विधी भी बताई। एक पिले कपडे के छोटे टुकडे में दुर्वा, अक्षता, केशर या हल्दी, शुध्द चंदन और मोहर के अखंड दाने मिलाकर रखे और उस कपडे को सिला दे। उसे लाल धागे से सिलाकर राखी का रुप दे। उन्होंने बताया कि इस राखी मे रखी हुई वस्तुओं से भाई निरोगी, दिर्घायुशी होता है और उसकी सभी दृष्टी से प्रगती होती है और सुखी होता है।

वैसे भी भारत अंधविश्वास से भरा हुआ है और यह एक नया अंधविश्वास पैदा किया जा रहा है। स्वयं वेद में मानव कल्याण की कोई बात नही है तब यह वैदिक राखी कैसे किसी का कल्याण कर सकती है?

## ➤ फिल्मी दुनिया मे भी जातिवाद है

सुप्रसिध्द नाटककार और पटकथा लेखक संजय पवार ने यह कहा कि, फिल्मी दुनिया में अभी भी जातिवाद है। यहां अपनी जाति के व्यक्ती के साथ नजदिकीयां होती है, बाकी लोगों को दूर रखा जाता है। यह बात संजय पवार ने दलित इंडियन चेम्बर ऑफ कॉमर्स द्वारा आयोजित मुलाखात मे बताई।

ब्राम्हणवादीयों ने भारतीयों के मन ऐसी गहरी बात डाल दी कि व्यक्ती का मुल्यांकन उसकी जाति से होता है। निचली जाति का व्यक्ती कितना भी विद्वान हो, कलाकार हो, उंचे पद पर हो, सदाचारी हो परन्तु उसे उसकी जाति के कारण हीन माना जाये। उसी प्रकार उंची जाति का व्यक्ती कितना भी मुर्ख हो गंवार हो, निचले दर्जे को हो और दुराचारी हो फिर भी उसे उसकी जाती के कारण सन्मान दिया जाता है।

## ➤ मोदी के आदेश पर गृह मंत्रालय की 1.5 लाख फाईल नष्ट की गई

प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी के निर्देश पर गृह मंत्रालय की 1.5 लाख फाईले एक महिने से भी कम समय मे नष्ट की गई, जो वर्षों से धुल खा रही थी। इन फाईलों को नष्ट करते वक्त कुछ फाईले ऐसी भी देखी गई जिनका ऐतिहासीक महत्व है,

जैसे लार्ड माउंटबेटन को भारत से इंग्लैंड जाने के लिए 64,000 रुपये दिये गये थे (आज के रुपयें की किंमत के हिसाब से करोडों रुपयें होते है), राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद ने पेन्शन लेने से मना कर दिया था, प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने पगार लेने से मना करने पर उसे आपदा फंड मे जमा कर दिया गया था। इन फाईलों को नष्ट कर दिया गया या उन्हें संभालकर रखा गया इसकी जानकारी फाईले नष्ट करने वाले अधिकारीयों को नही थी। नियम के अनुसार ऐतिहासीक महत्व की फाईलों को नेशनल आरकाईव्ज ऑफ इंडिया के कार्यालय को भेज देनी चाहिए।

## ➤ पिछले 6 वर्षों से आदिवासी विद्यार्थी शिक्षा से वंचित

महाराष्ट्र के चाचापाडा आदिवासी क्षेत्र मे जिला परिषद की शाला में पिछले 6 वर्षों से शिक्षक नही है। बडी आश्चर्य की बात है कि महाराष्ट्र शासन का शिक्षा विभाग इतनी गहरी निंद मे कैसे है?

पिछले 6 वर्षों से इस क्षेत्र की शाला के शिक्षक लापता है। उनके संबंध मे जांच चल रही है जो अब तक पुरी नही हुई है। इस अवधी मे शाला में शिक्षक नियुक्त नही किये गये जिसके कारण आदिवासी छात्र शिक्षा से वंचित है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम तो बना दिया गया है परन्तु इन आदिवासी छात्रों के अधिकार की किसी को फिक्र नही है।

## ➤ गुजरात में गलत इतिहास पढ़ाया जाता है

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की योजना और कार्यकलापों से यह साफ हो चुका है कि वह भारतीय इतिहास का विकृतिकरण करना चाहता है और सही इतिहास को बदलना चाहता है। उसकी प्रयोगशाला कहे जाने वाले राज्य मे भी गलत इतिहास पढाया जा रहा है। उदाहरण के तौर पर, गांधी की हत्या 30 अक्टुबर 1948 में हुई, दुसरे महायुध्द के दौरान जापान ने अमेरिका पर अणुबम से हमला किया था, हिन्दु पर्वत का विभाजन हुआ और एक नया देश निर्माण हुआ उसका नाम इस्लामिक इस्लामाबाद है, सभी दक्षिण भारतीय मद्रासी होते है। मेल टुडे द्वारा किए गए खुलासे मे यह कहा गया है कि इस प्रकार का गलत इतिहास अंग्रेजी माध्यम की कक्षा 6 वी से 8 वी के छात्रों को पढाया जाता है। इस प्रकार के गलत इतिहास की किताबों को गुजरात काऊंसिल ऑफ एजुकेशन रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग और स्टेट बोर्ड फॉर स्कुल टेक्स्टबुक्स ने मंजुरी दी है। गलत इतिहास पढाए जाने की शिकायत पर किताबों में सुधार करने के लिए एक समिति भी बनाई गई थी परन्तु अभी भी वही गलत इतिहास पढाया जा रहा है। इसके अलावा पुर्व भारत में घुटने तक कपडे पहनते है क्योंकि वहां अधिक बारीश होती है, महिलाए भद्दी तरिके से साडी पहनती है, पूर्व भारत के लोग लकडी के घरों मे रहते है इस तरह की गलत बातें समाजशास्त्र में पढाई जाती है। सबसे गलत बात यह है कि स्कुल में बच्चों को रुढीवादी बातें सिखायी जाती है। इस देश की भावी पिढी को बिगाडने की यह साजिश है। वास्तव मे यह आर् एस्.एस्.के एजेन्डे के तहत हो रहा है।

## ➤ शालाओं मे गीता पढ़ाने की वकालत

शालाओं मे गीता को पढाने की वकालत सर्वोच्च न्यायालय के न्यायमुर्ति ए.आर् दवे ने की है। ऐसा करने से उन्होंने ब्राम्हणवादी होने का सबुत पेश किया है। बाबासाहेब के अनुसार गीता में मारकाट और चातुर्वर्ण के वर्णन के अलावा अन्य कोई बात नही लिखी है। यह बातें ब्राम्हणवाद को पोषक है। उसमें मानव कल्याण की कोई भी बात नही लिखी है। शालाओं में गीता का पाठ पढाने की वकालत कर न्यायाधिश महोदय ब्राम्हणवादी पिढी तयार करना चाहते है, यही निष्कर्ष निकाला जा सकता है।

न्या.दवे की बात को आगे बढाते हुए आर् एस्.एस्.के समर्थन और भारतीय विचार केन्द्र के निदेशक पी.परमेश्वर ने तो यहा तक कह डाला कि गीता केवल धार्मिक ग्रंथ ही नही वह प्रेरणादायी और दार्शनिक ग्रंथ है और उसे राष्ट्रीय किताब घोषित करना चाहिए।

न्या.दवे ने कहा कि यदि मै देश का हुक्मरान होता तो कक्षा पहली के पाठ्यक्रम मे ही भगवत् गीता और महाभारत को सम्मिलीत किया होता। आप इसी माध्यम से जीवन जीने कला सिख सकते है। न्या.दवे के यह विचार आर् एस्.एस्.के विचार है। मोदी अब इस देश के हुक्मरान है और आर् एस्.

एस.के प्रचारक है तब न्या.दवे को उनके सपने साकार होने की उम्मीद करनी चाहिए। यदि ऐसा हुआ तो इस देश की बर्बादी ही होगी।

## ➤ भारत की नई शिक्षा निति बनेगी

मानव संसाधन मंत्री स्मृति इरानी ने कहा कि भारत को नई शिक्षा निति की आवश्यकता है। उन्होंने यह अपने मंत्रालय द्वारा 100 दिनों में किए गये कार्यो पर चर्चा करते हुए कहा। उन्होंने कहां कि राष्ट्रीय शिक्षा निति पर जनवरी 2015 से विचार विमर्श शुरु होगा।

अब तक के मोदी सरकार के क्रियाकलापों से और आर् एस.एस.के बयानों से एक बात स्पष्ट होती है कि आने वाली शिक्षा निति ब्राम्हणी शिक्षा निति होगी। जब उनसे पुछा गया कि क्या हिन्दु विचारधारा की किताबें पाठ्यक्रम मे रखी जायेगी तब उन्होंने कहा कि संविधान के प्रावधानों का ध्यान रखा जायेगा। मोदी सरकार के मंत्री और नेता चाहे जो कहे वह वही करेंगे जो आर् एस.एस.के एजेन्डा के तहत है। इस कारण यह निश्चित रुप से कहां जा सकता है नई शिक्षा निति ब्राम्हणवाद पर आधारित होंगी। जहां तक संविधान के प्रावधानों का प्रश्न है, यह चतुर नेता उनकी अपनी सुविधानुसार ही व्याख्या करेंगे।

## ➤ हिन्दु विरोधी महिलाओं पर बलात्कार होने चाहिए - वी. आर. भट

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के समर्थक कन्नड के स्तंभ लेखक वी. आर् भट ने टिप्पणी की है कि हिन्दु विरोधी महिलाओं पर बलात्कार होने चाहिए।

भारत ज्ञान विज्ञान समिती की कर्नाटक विभाग की सचिव प्रभा एन.बेलामंगला ने वैज्ञानिक खोज, रातनिति और धर्म के विषय पर अपने विचार फेसबुक पर लिखे थे। हिन्दु धर्म की प्रथाओं पर उन्होंने टिप्पनी की थी और अपने विचार वैज्ञानिक दृष्टीकोन के होने चाहिए ऐसा लिखा था। उनकी टिप्पणी पढकर वी.आर् भट ने चिडकर अपने फेसबुक पर प्रतिक्रिया दी कि, सनातन हिन्दु धर्म क्या है, क्या आपको उसकी जानकारी है? आपकी मानवता को आग लगे। हिन्दु धर्म के प्रति आप जैसी महिलाओं का दृष्टीकोन बदलने के लिए आपके बाल नोचने चाहिए और आप पर बलात्कार होना चाहिए।' इस प्रतिक्रिया के बाद महिला अधिकारी कार्यकर्ताओं ने भट के विरुध्द पुलिस शिकायत की। लेकिन एक बात गौर करने लायक है कि, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने हमेशा की तरह अपनी चतुराई की भूमिका अदा की और कहां कि, राव का आर् एस. एस. से कोई संबंध नही। धर्मांधता के कारण हिन्दुवादी किस हद तक गीर सकते है इस का यह एक उदाहरण है।

## ➤ मंदिर मे गैर ब्राम्हण और महिला पुजारी का विरोध

महाराष्ट्र मे पंढरपुर हिन्दुओं का बडा तिर्थक्षेत्र है, इस मंदिर मे रहने वाले लोगों ने अशांती फैलाई थी इसलिए सर्वोच्च न्यायालय के निर्देश के बाद मंदिर समिति ने मंदिर के कर्मचारीयों को पुजा की जिम्मेदारी दी थी। इसी दरम्यान मंदिर समिति ने निर्णय लिया था कि, मंदिर मे पूजा के लिए गैर ब्राम्हण और महिला को पुजारी बनाना चाहिए। इस निर्णय के अनुसार भारत भर से आवेदन मंगाये गये और 129 लोगों का साक्षात्कार लिया गया, जिसमें 16 महिलायें थी। इसके बाद वारकरी समुदाय ने मंदिर समिति के निर्णय का विरोध करना शुरु किया और आंदोलन की धमकी दी। इस धमकी के कारण पुजारी की नियुक्ती मंदिर समिति ने रोक दी।

उपरोक्त घटना से यह साबित हुआ है कि, वारकरी समुदाय के मन मे जातिवाद मजबुत जडे बना चुका है। वह चाहते है ब्राम्हण कितना भी दुर्गुणी हो और वह अशांती फैलाने वाला हो तो भी पुजारी ब्राम्हण ही हो, गैर ब्राम्हण और महिला न हो।

## ➤ ग्राम पंचायत ने पुरे वडार समाज को गुंडा समाज कहां और बस्ती खाली करने का फर्मान दिया

महाराष्ट्र मे पत्थर तोडकर घरेलु सामान बनाने वाले घुमंत समाज को वडार कहते है। पत्थरों के सामान का घरेलु

उपयोग कम होने के कारण उन्होंने अब कटलरी बेचने का काम शुरु किया है। महाराष्ट्र के भंडारा जिले में अंबाडी गांव के पास वडार समाज के 27 परिवारोंने बंजर जमिन पर अपनी बस्ती बनाई। अंबाडी के ग्राम पंचायत ने अचानक प्रस्ताव पास किया कि, वडार समाज गुंडा समाज है और उन्हें बस्ती खाली करने की नोटिस भेज दी। घबराये हुये वडार समाज के लोगों ने सामाजिक कार्यकर्ता दीनानाथ वाघमारे को हकीकत बताई। उन्होंने ग्राम पंचायत की सरपंच मंदा भुरे और भंडारा के कलेक्टर से मुलाकात की तब उन वडार समाज के लोगों को राहत मिली।

महाराष्ट्र शासन की यह निति है कि, घुमंतु समाज के लोगोंको स्थायी करना। परन्तु इस समाज के लोग स्वयं स्थाई हो चुके है उन्हें अस्थायी करने का यह प्रयास किया गया। यह लोग निचली जाति के है इसलिए जातिद्वेष के कारण परेशान करने की यह कोशीश हो सकती है।

## ➤ हिन्दु पंरपरा पर आधारित कार्ड का खेल बनाया गया

हिन्दु पंरपरा को दुनिया के लोगों तक पहुचाने के लिए कार्ड का मनोरंजक खेल बनाया गया। इस खेल का नाम महायोध्दा रखा गया है। इन कार्डस् पर हिन्दु परंपरा के अनुसार आदित्य, असुर और राक्षस के बिच युध्द के चित्र बनाये गये है। इस खेल के कार्ड दो सेट में है तथा एक सेट मे 42 कार्ड है। इस खेल के निर्मिती के लिए अमेरिका स्थित कीकस्टारटर ने आर्थिक मदत की है। महायोध्दा कार्ड के सहनिर्माता सागर शंकर ने कहा है कि, यह खेल संसार के लोगों को हिन्दु पंरपरा की जानकारी के लिए बनाया गया है। आनेवाले दिनों में मोबाईल पर यह खेल खेला जा सके उसके लिए प्रयास किया जा रहा है।

हिन्दु पंरपरा मे काल्पनिक और चमत्कारीक कहानियां है जो केवल मनोरंजन के साधन है। उनमें मानव उत्थान की शिक्षा नही है। उस मनोरंजन को संसार के लोगों तक पहुंचाने का यह प्रयास है।

## ➤ संसार मे 33 प्रतिशत बाल विवाह भारत मे होते है

संयुक्त राष्ट्र के 'एंडीग चाइल्ड मॅरेज - प्रोग्रेस एण्ड प्रास्पेक्ट' विषय पर रिपोर्ट मे कहा गया है कि, संसार मे भारत बाल विवाह के मामले मे अग्रणी है। संसार मे 33 प्रतिशत बाल विवाह अकेले भारत मे होते है।

भारत मे बाल विवाह को कानुनी अपराध माना गया है परन्तु कानुन की परवाह नही करते हुये बडी संख्या मे बाल विवाह हो रहे है। ब्राम्हणी धर्म मे महिलाओं को निकृष्ठ माना गया है और इसलिए उनका उत्पिडन होता रहा है और अभी भी हो रहा है। इस धर्म की पंरपरा को लोग छोडना नही चाहते इसलिए कानुन को दर किनार कर बालविवाह हो रहे है। अब तो भारत मे महिलाओं पर बलात्कार की संख्या भी बढ रही है। महिलाओं के प्रति असंवेदनशीलता के कारण यह सब हो रहा है।

## ➤ महाराष्ट्र अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के कर्मचारियों का बैंक लॉग

महाराष्ट्र शासन के अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के प्रति उदासिनता के कारण इन समुदाय के कर्मचारीयों का बॅक लॉग बढता ही जा रहा है। महाराष्ट्र शासन के सिधे भरती वाले पदों का 2 लाख 34 हजार और पदोन्नती वाले पदों का 73 हजार बॅक लॉग है। राज्यशासन के अंतर्गत आने वाले कॉलेज, विश्वविद्यालय, सहकारी संस्था, एस.टी.महामंडल मे अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के 3 लाख 7 हजार पद भरे नही गये है।

अपर मुख्य सचिव, प्रधान सचिव, सचिव जैसे उंचे पदो पर अनुसूचित जाति के केवल चार और अनुसूचित जनजाति के केवल अधिकारी है। राज्य के 6 विभागीय आयुक्तों मे एक भी आयुक्त इन वर्गों का नही है। कुल 50 जिलाधिकारी यों मे अनुसूचित जाति के चार और अनुसूचित जनजाति के दो जिल्हाधिकारी है।

25 मई 2009 के शासन के निर्णय के अनुसार इन वर्गों का बॅक लॉग भरने या पदोन्नती नही देने वाले अधिकारी को 6 माह की सजा और 5 हजार रुपये जुर्माने का प्रावधान किया गया है परन्तु इतना बडा बॅक लॉग होने के बावजुद भी किसी अधिकारी को दंडीत नही किया गया।

अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के कर्मचारीयों की भर्ति नही किये जाने के इस प्रकार के उदाहरण अन्य राज्यों मे भी होगे। इससे यह साबित होता है कि राज्य सरकारें इन वर्गो की प्रगति नही होने देना चाहती है।

## ➤ मध्यप्रदेश मे सर्वाधिक किसानों ने की आत्महत्या

पुरे देश मे किसानों ने आत्म हत्या की उनमे से आधे से अधिक किसान मध्यप्रदेश के है। कृषि राज्यमंत्री संजीव बलीयान के द्वारा राजसभा मे दी गई जानकारी के अनुसार सन 2011 मे देश मे 2444 किसानों ने आत्महत्या की। उसमे 1323 किसान मध्यप्रदेश के है और दुसरे क्रमांक पर महाराष्ट्र मे 608 किसानों ने आत्महत्या की। सन 2012 और 2013 की जानकारी मध्यप्रदेश ने केन्द्र को नही भेजी है।

2012 मे महाराष्ट्र मे 642 और 2013 मे 407 आत्महत्या किसानों ने की। आंध्रप्रदेश मे 2011 मे 303, 2012 मे 178 और 2013 मे 40 किसानों ने आत्महत्या की। कर्नाटक मे 2011 मे 107, 2012 मे 60 और 2013 मे 9 किसानों ने आत्महत्या की। पंजाब मे 2011 मे 81 किसानों ने आत्महत्या की। इस राज्य ने भी मध्यप्रदेश की तरह 2012 और 2013 की जानकारी नही भेजी।

विमारु राज्य बिहार और राजस्थान मे इन तिन वर्षों मे कोई भी आत्महत्या नही हुई। उत्तर प्रदेश मे 2013 मे केवल एक किसान ने आत्महत्या की। गुजरात, हिमाचल प्रदेश, आसाम, गोवा, हरियाणा, जम्मु कश्मीर और झारखंड मे इन तिन वर्षों मे एक भी किसान ने आत्महत्या नही की।

## ➤ भारत मे प्रतिवर्ष लगभग 1 लाख बच्चे लापता होते है

भारत मे हर साल लगभग 1 लाख बच्चे लापता होते है उनमे से 45 प्रतिशत बच्चों की खोज नही हो पाती, इस प्रकार की जानकारी गृह मंत्रालय ने दी है। सन 2013 मे 1 लाख 70 हजार बच्चे लापता हुये थे। इस पर सर्वोच्च न्यायालय ने नाराजगी व्यक्त की थी और सरकार से जवाब मांगा था। परन्तु सरकार इस प्रकार के गंभीर मामले मे अभी भी उदासिन है।

बच्चे लापता होने के मामले भारत की स्थिति पडोसी देशों से बहुत ज्यादा खराब है। पाकिस्तान प्रतिवर्ष लगभग 3 हजार बच्चे लापता होते है। नेशनल क्राईम रेकार्ड ब्युरो के आंकडों के अनुसार भारत में हर 8 वे मिनट में एक बच्चा लापता होता है आम लोगों के बच्चे लापता होते है तो कोई सुध नही लेता परन्तु जब शासन, प्रशासन के लोगों के तथा पूंजीपतियों के बच्चे तो क्या जानकर भी लापता होते है तो हाहाकार मच जाता है।

## ➤ भारत के गुप्तचर सबसे बडे माफीया - ब्रिगे सावंत

शिवाजी इन्टरप्रीन्युअर्स असोसीएशन द्वारा आयोजित रिथीकिंग इंडीयन इकानामी इस विषय पर बोलते हुये ब्रिगेडीयर सुधिर सावंत ने कहां की, भारतीय गुप्तचर सब से बडे माफीया है। माफीया सारे विश्व पर राज करते है, अब वह भारत पर भी राज कर रहे है। उन्होंने बताया कि वह सेना के गुप्तचर विभाग मे काम करते थे इसलिए उन्हें भारतीय गुप्तचरों के बाबत जानकारी है। उन्होंने हैद्राबाद बम कांड का उदाहरण देते हुये कहां कि, जिस दिन हेलिकॉप्टर खरिदी घोटाले पर संसद मे चर्चा होने वाली थी उसी दिन हैद्राबाद मे बमकांड करवाया गया जिसमें घोटाले पर चर्चा होने को बजाय बमकांड पर चर्चा हुई।

" बुद्ध की सामाजिक और नैतिक शिक्षा पर बल देना जरूरी है। मैं इसे इसलिए जोर देकर कहता हूं क्योंकि ध्यान, साधना और अभिधम्म को महत्व दिया जा रहा है। भारतीयों को इस प्रकार से बुद्धीजम बताना हमारे हीत की दृष्टि से घातक है। "

-डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर

# न्यायपालिका

## ➤ पदोन्नती मे आरक्षण मिलेगा

20 जुलई 2014 को सर्वोच्च न्यायालय के संविधान पिठ ने रोहतास भानखर और अन्य विरुध्द भारत सरकार के प्रकरण मे एक महत्वपुर्ण निर्णय दिया। इस निर्णय के अनुसार अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के कर्मचारीयों को पदोन्नती मे आरक्षण मिलेगा। यह निर्णय मुख्य न्यायाधिश आर् एम. लोढा, न्या. जे. एस. खेहर, न्या.जे.चेलोमेश्यर, न्या.ए.के .सिकरी और न्या.आर् एफ़ नरिमन के संविधान खंडपिठ ने दिया।

1996 से एस. विनोद कुमार और अन्य विरुध्द भारत सरकार के प्रकरण मे सर्वोच्च न्यायालय ने अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के कर्मचारीयों को विभागीय परिक्षा मे इन वर्गो को परिक्षा पास करने के लिए दी जाने वाली मार्क्स की छुट को अमान्य किया था। इस निर्णय के आधार पर रोहतास को विभागीय परिक्षा पास करने के लिए मिलने वाली छुट नही दी गई जिसके कारण उसकी पदोन्नती नही हो सकी। उसने निछले 10 वर्षो से न्यायालयीन लढाई जारी रखी और अंत मे उसे अपना अधिकार मिल गया।

## ➤ बालविवाह बलात्कार से अधिक भयानक

बालविवाह बलात्कार से अधिक भयानक है और बालविवाह देश से पुरी तरह समाप्त होना चाहिए ऐसा दिल्ली के मेट्रो पोलिटन न्यायालय ने कहा है। सरकार द्वारा बालविवाह करने वालों पर सख्त कार्यवाही किये बगैर इस समस्या का निदान नही होगा, यह भी न्यायालय ने कहा है।

मेट्रोपोलिटन न्यायालय मे हुंडा से संबधित प्रकरण शुरु है। इस प्रकरण की युवती की शादी 14 वर्ष की उम्र मे सन 2011 मे हुई थी। युवती के माता-पिता तथा उसके सास-ससुर ने गंभीर जुर्म किया है इसलिए न्यायालय ने उन्हें जमकर डाट लगाई। बचपन मे शादी करने से शिक्षा के अवसर कम होते है, युवती का शारीरीक शोषण होता है, लैंगींक बिमारीया होती है और प्रसुति के समय युवती की जान को खतरा होता है, यह जानकारी भी न्यायालय ने दी। न्यायालयने युवती के माता-पिता के विरुध्द अपराध दाखिल करने का निर्देश दिया है। साथ ही युवती के पतिद्वारा प्रतिमाह चार हजार रुपये देने के भी निर्देश दिये है।

## ➤ प्रत्येक केन्द्र की मतगणना को बंद करने का निर्णय क्यो नही लिया गया - सर्वोच्च न्यायालय की केन्द्र सरकार को फटकार

चुनाव संम्पन्न होने के बाद जिन चुनाव केन्द्र पर चुनाव हुआ उन केन्द्रों पर हर उम्मीदवार को कितने वोट मिले इसकी जानकारी मतगणना के बाद मिलती है। इससे विजयी उम्मीदवार को जिन केन्द्रों पर कम वोट मिले वहा के नागरिकों के प्रति द्वेष भावना निर्माण होने की संभावना है। उनके विरुध्द बदले की भावना निर्माण होने की और उन्हें समान सुविधायें नही दी जाने की संभावना व्यक्त करते हुये सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्या.आर् एम. लोढा, न्या. कूरीयन जोसेप और न्या. आर् एप. नरिमन के खंडपिठ ने केन्द्र सरकार से पुछा कि इस बाबत चुनाव आयोग द्वारा लिखे गये पत्र पर कार्यवाही क्यो नही की गई, चुनाव आयोग के केन्द्र पर मतगणना को बंद करने संबंधी सुझाव पर निर्णय लेकर चार हप्ते के भितर उत्तर प्रस्तुत करने के निर्देश सर्वोच्च न्यायालय ने केन्द्र सरकार को दिये है।

सर्वोच्च न्यायालय ने ध्यान दिलाया कि, चुनाव आयोग तज्ञ लोगों मंडल है और उन्हें अच्छा कार्य कैसे संपादन किया जाय इसकी जानकारी होती है। चुनाव आयोग द्वारा केन्द्र सरकार को इस संबध मे 5 वर्ष 10 माह पुर्व पत्र लिखा था। केन्द्र सरकार ने इस बाबत 2011 मे चर्चा की थी। उसके बाद 2013 मे भी चर्चा की थी। परन्तु, इस विषय मे अब तक कोई निर्णय नही लिया गया।

## ➤ कोरे कागज पर सही न करें

राष्ट्रीय ग्राहक समस्या निवारण आयोग ने यह निर्णय दिया है कि, कर्ज वसुली कर्जदार से करनी है या जमानतदार से इस बात का निर्णय लेने का अधिकार कर्ज देने वाली बैंक का है। जब कर्जदार से वसुली नही हो सकती तब जमानतदार से वसुली की जाए ऐसा आदेश आयोग नही दे सकता।

आपने यदि किसी को बैंक से कर्ज लेने के लिए मदत की है और बैंक कर्मचारीयों ने आपकी सही कोरे कागज पर ली है और बैंक ने उस कागज पर आपकों जमानतदार लिखा तो आप कुछ भी करेंगे तो आपको राहत नही मिलेगी। आपसे जमानतदार के रुप में ही कर्ज वसुला जायेगा।

कैनेरा बैंक की अर्जी मंजूर करते हुये राष्ट्रीय मंच के कार्यवाहक अध्यक्ष न्या.जे.एम.मलिक और सदस्य न्या.एस.एम. कांटीकर ने उपरोक्त निर्णय दिया। बैंक को एक ग्राहक से ओवर ड्राफ्ट की रकम वसुल करनी थी। उसके जमानतदार आर् एस. वासन से रकम वसुल करने की कार्यवाही को सही ठहराया।

## ➤ शरियत न्यायालय को कानुनी मान्यता नहीं

सर्वोच्च न्यायालय के न्या.सी.के .प्रसाद की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने यह निर्णय दिया कि, शरीयत न्यायालय द्वारा जारी फतवा और आदेश को कानुनी मान्यता नही है। न्यायालय ने यह माना कि कुछ प्रकरणों मे शरियत द्वारा पारित आदेश से मानवाधिकार उल्लंघन हुआ है और बेकसुर लोगों को सजा दी गई है। कोई धर्म, इस्लाम समेत, बेकसुर लोगों को सजा देने की इजाजत नही देता।

विश्व लोचन मदाम द्वारा दायर जन याचिका मे सर्वोच्च न्यायालय से शरीयत न्यायालय की वैद्यता पर प्रश्न किया गया था जो भारत मे समानांतर न्यायीक व्यवस्था है। इस याचिका पर सुनवाई के बाद सर्वोच्च न्यायालय ने यह निर्णय दिया।

अखिल भारतीय पर्सनल लॉ बोर्ड द्वारा यह दलिल दी गई थी की शरीयत न्यायालय का आदेश मुफ्ती का विचार होता है और वह लोगों पर बंधन नही होता है और उसे अमल मे लाने की बाध्यता नही होती।

जाफरयाब जीलानी, सदस्य, मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड का कहना है कि, शरीयत न्यायालय समानंतर न्यायीक व्यवस्था नही है। वह केवल लोगों के आपसी सहमती से शरीयत के अनुसार झगडे सुलझाते है।

## ➤ आपसी समझौते के बाद भी बलात्कार और खून के गुनाह को समाप्त नही किया जा सकता

पिडित और अपराधी मे समझौता होने के बाद भी बलात्कार और खून के प्रकरणों मे कार्यवाही को खारिज नही किया जा सकता। यदि ऐसा किया गया तो उसका समाज पर विपरित परिणाम होगा, ऐसा सर्वोच्च न्यायालय के न्या.रंजना प्रकाश देसाई और न्या.एन.वी. रमन के खंडपीठ ने निर्णय दिया।

न्यायालय ने यह भी कहां कि, यदि अपराध व्यक्तीगत रुप का है और दोनों पक्षों मे समझौता होने से सार्वजनिक शांती भंग नही हो सकती या सार्वजनिक शांती कायम रखने मे उससे मदत हो सकती है ऐसा जब न्यायालय को लगे तब अपराध निरस्त किया जा सकता है।

अपराधी द्वारा दायर की गई याचिका पर, जिसमे कहा गया है कि, "पिडितों के साथ हमारा समझौता हो गया है तब हमारे विरुध्द लंबित कार्यवाही को समाप्त किया जाए"। सुनवाई कर न्यायालय ने यह निर्णय दिया।

## ➤ न्यायालयों मे लंबित प्रकरणों के अपराधीयों ने आधी सजा काट ली तो उन्हें मुक्त करना चाहिए

सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधिश न्या.आर् एम.लोढा, न्या.कुरीयन जोसेफ और न्या.रोहीटंन एफ़ नरीमन के खंडपीठ ने यह निर्णय दिया कि जिन प्रकरणो मे अपराधीयों ने आधी सजा काट ली उन्हें मुक्त कर देना चाहिए। इस निर्णय से गरिब लोगों को बडी राहत मिलेगी जो जेल से मुक्त होने के लिए अमानत

राशी और बेल बॉड नही भर सकते।

न्यायालय ने कहा, 'न्यायीक अधिकारी (मेजिस्ट्रेट/सेशन जज/ सी जे एम) ऐसे अपराधीयों को चिन्हीत करें जिन्होंने अपने गुनाह की आधी सजा काट ली है। सी.आर् पी.सी.को धारा 436A की प्रक्रिया पुरी कर वह जेल मे ही ऐसे कैदीयों को मुक्त करने का आदेश पारित करें। न्यायीक अधिकारी सप्ताह मे एक दिन अपने कार्यक्षेत्र की जेल को भेंट दे और धारा 436A की प्रक्रिया करे।'

ऐसा अंदाज है कि भारत की जेलों में लगभग 3.81 लाख कैदी है जिनमें से 2.54 के विरुध्द न्यायीक मामलो लंबित है। इनमे से कई कैदी ऐसे है जिनको हुई सजा से अधिक समय तक जेल मे रखा गया इनमे अधिकर कैदी अनुसुचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अल्पसंख्यक समुदाय के होते है जिनकी आवाज सुनी नही जाती।

## ➤ प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री दागीयों को मंत्री मंडल मे शामिल न करे

सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधिश न्या.राजेन्द्रमल लोढा की अध्यक्षता वाली 5 सदस्यीय खंडपिठ ने निर्णय दिया है कि, संविधान की धारा 75(1) मे मंत्रीयों को अपात्र मानने के लिए कोई प्रावधान नही केवल शपथ के आधार पर उसने व्यक्त किए विश्वास के कारण उसने मंत्री चुनते समय ऐसे व्यक्ती का चुनाव नही करना चाहिए जिसके विरुध्द फौजदारी या भ्रष्टाचार के आरोप लगाये हो। यही भारतीय संविधान प्रधानमंत्री से अपेक्षा करता है। बाकी प्रधानमंत्री के विवेक पर छोड दिया गया है। इसी प्रकार की अपेक्षा मुख्यमंत्री से भी की जाती है।

अपने 123 पेज के निर्णय मे सर्वोच्च न्यायालय ने यह कहा है कि यह न्यायालय मंत्रीयों की पात्रता के बारे मे सरकार को निर्देश नही दे सकता क्योंकि वैसा करना संविधान मे दी गई मर्यादा का उल्लंघन करना होगा। न्यायालय ने यह निर्णय मनोज नरुला द्वारा दाखिल जनहित याचिका पर दिया।

न्यायालय ने अपने निर्णय मे अपेक्षा व्यक्त करते हुए कहा है कि, प्रजातांत्रिक रुप से चुनी गई सरकार मे फौजदारी आरोप या जातिविषयक, सामाजिक समस्या, राष्ट्र की संप्रभुता के संबध मे जिन पर आरोप है ऐसे प्रतिनिधीयों का समावेश न हो, यही अपेक्षा की जाती है।

नेशनल इलेक्शन वाच और असोसियेशन ऑफ डेमोक्रेटीक रिफार्म्स इन अंतर्राष्ट्रीय स्तर की संस्थाओं का मानना है कि मोदी सरकार के 45 मंत्रीयों मे दर्जन भर ऐसे मंत्री है जिनके विरुध्द फौजदारी मामले शुरु है। इनमे से उमा भारती पर तो 13 मामले दर्ज है।

शेष पान 2 से

## संपादकीय...

दिया। हमारे देश के हित मे अच्छा तो यह होता कि धन की सहायता मांगने की बजाय मोदी जापान से बुध्दिष्ट विचार धारा की सहायता मांग लेते।

भारत का भविष्य और विकृत करने की भी तयारी चल रही है। गीता को पाठ्यक्रम मे शामिल करने की तयारी चल रही है। ब्राम्हणी विचारधारा के आधार पर भारत का विकास कदापि नही हो सकता। चंद पूंजीवादीयों का आर्थिक और औद्योगीक विकास देश का विकास नही हो सकता। लोकसभा चुनाव के वक्त भारत के मतदाताओं को मोदी द्वारा भ्रष्टाचार समाप्त करेंगें, मंहगाई समाप्त करेंगे, रोजगार देंगे और अच्छे दिन आयेंगे जैसे नारों से लुभाया गया। मोदी सरकार के 100 दिन पुरे हो गये परन्तु इन नारों पर क्रियान्वय होता नजर नही आ रहा है। कुछ लोग जानते है कि, भारत मे जब जब सरकार विफल हुई है जनता का ध्यान बांटा गया ताकि जनता का ध्यान मुल मुद्दों से हट जाय। अब भी यही हो रहा है। मोदी द्वारा दिए गए नारे मोदी सरकार क्रियान्वित करने मे विफल रही तो भारत पाकिस्तान संबंधों को लेकर, बजट मे नई घोषणायें कर, लाल किले से नई घोषणायें कर, नेताओं द्वारा मुसलमानों के विरुध्द भडकीली बयानबाजी कर, लव जेहाद जैसे नये मुद्दों को उलझाकर भारतवासीयोंका ध्यान बांटा जा रहा है। इस पर जनता ने स्वतंत्रता पुर्वक विचार करना चाहिए, समझना चाहिए और जनहीत मे काम हो इसके लिए सरकार को बाध्य करना चाहिए।

# समिति द्वारा सम्पन्न कार्यक्रम

## ❑ अखिल भारतीय धम्मज्ञान परिक्षा - 2014

दिनांक 10 अगस्त 2014 को महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, गुजरात, उत्तरप्रदेश, और, छत्तिसगढ, राज्यों में 81 केन्द्रों पर अखिल भारतीय धम्मज्ञान परिक्षा - 2014 का आयोजन किया गया। इस परिक्षा में 1847परिक्षार्थी उपस्थित थे। निम्नलिखित परिक्षार्थीयों अपने राज्यों मे प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

महाराष्ट्र ..... काजल गुलाब बागेसर, वरोरा ..... जूनियर
..... शालीनी देवानंद भगत, आर्णी ..... सिनियर

मध्यप्रदेश.....सुमनलता, मंडला ..... जूनियर
..... रमाशंकर जाटव, इंदरगढ़..... सिनियर

गुजरात ..... धम्मपाल समाधान इंगळे, अहमदाबाद ..... सिनियर

उत्तरप्रदेश..... प्रशांत आनंद, इलाहाबाद .....जूनियर
..... विनोद कुमार, इलाहाबाद .....सिनियर

छत्तिसगढ ..... सौरभ डोंगरे, रायपुर ..... जूनियर
.....रवि दामले, अंबागड़ चौकी ..... सिनियर

'बुद्ध और उनका धम्म' इस ग्रंथ पर आधारित धम्म ज्ञान परीक्षा - 2014

# समिति द्वारा आगामी कार्यक्रम

## ❑ पुरस्कार वितरण समारोह -

अखिल भारतीय धम्मज्ञान परिक्षा - 2014 का पुरस्कार वितरण समारोह दिक्षाभूमि, नागपुर पर स्टॉल नं.165 और 166 पर दिनांक 2-10-2014 को शाम 5 बजे सम्पन्न होगा। इस कार्यक्रम के अध्यक्ष पुज्य भन्ते आर्य नागार्जुन सुरेई ससाई होंगे। मुख्य अतिथि आयु..एन.जी.कांबळे (आय .पी.एस.रिटा.) और डॉ.निलिमा चौहान होंगे। सभी परिक्षार्थी, सभी केन्द्र प्रभारी, और उपासकों से निवेदन है कि इस कार्यक्रम मे अवश्य उपस्थित होवे।

केन्द्र प्रभारी अखिल भारतीय धम्मज्ञान परिक्षा - 2015 के आवेदन फार्म स्टॉल नं.165 और 166 से प्राप्त कर सकते है।

## ❑ बुध्द धम्म संदेश रैली -

दिनांक 5 अक्टुबर 2014 को बुध्द धम्म संदेश रैली दोपहर 1.00 बजे दिक्षाभूमि, नागपुर से प्रारंभ होगी। इस रैली मे दो वाहनों के माध्यम से मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तेलंगाना, छत्तिसगढ, उडिसा, उत्तरप्रदेश और बिहार राज्यों के गांवों मे और शहरों मे पहुंचकर निरतंर 4 माह तक धम्म प्रचार किया जायेगा। रैली का समापन 31 जनवरी 2015 को धम्मगिरि, काजलवानी, त.सौंसर, जि - छिंदवाडा (म.प्र.) पर होगा।

सभी से निवेदन है कि तन मन धन से सहयोग कर रैली को सफल बनाये।

बुद्ध धम्म संदेश रैली के द्वारा निम्मलिखित कार्यक्रम के अनुसार धम्म प्रचार किया जायेंगा।

### गाडी नं.1

| दिनांक | भ्रमण क्षेत्र | विश्राम |
|---|---|---|
| 5-10-2014 | दीक्षाभुमी, नागपुर, सावनेर, सायखेडा | बोथीया (म.प्र.) |
| 6-10.2014 | चिचोली, टेमणी, सिवनी | मोरडोंगरी (म.प्र.) |
| 7-10-2014 | पांढुर्णा | तिगांव (म.प्र.) |
| 8-10-2014 | मारुड, वाडेगांव, बनगांव, खेडी | आजनगांव (म.प्र.) |
| 9-10-2014 | मुलताई | बैतुल (म.प्र.) |
| 10-10-2014 | सारणी, पाथाखेडा, घोडाडोंगरी, शहापुर | इटारसी (म.प्र.) |
| 11-10-2014 | होशंगाबाद, बुधणी | भोपाल (म.प्र.) |
| 12-10-2014 | भोपाल | भोपाल (म.प्र.) |
| 13-10-2014 | सिहोर, देवास | उज्जैन (म.प्र.) |
| 14-10-2014 | | रतलाम (म.प्र.) |
| 5-10-2014 | | वागीदोरा (राज .) |
| 16-10-2014 | | डुंगरपुर (राज .) |
| 17-10-2014 | | श्यामलाजी (गुज .) |
| 18-10-2014 | | ईडर (गुज .) |
| 19-10-2014 | हिम्मतनगर, विजापुर | मेहसाना (गुज .) |

| | | |
|---|---|---|
| 20-10-2014 | बेचरजी | विरमगांव (गुज .) |
| 21-10-2014 | लखतर | सुरेन्द्रनगर (गुज .) |
| 22-10-2014 | मुल, जोटीला, बमनबोर | राजकोट (गुज .) |
| 23-10-2014 | ढ्रोल | जामनगर (गुज .) |
| 24-10-2014 | गोपमोती | पोरबंदर (गुज .) |
| 25-10-2014 | उपलेता, धोराजी | जूनागड (गुज .) |
| 26-10-2014 | बगरसरा | अमरेली (गुज .) |
| 27-10-2014 | दमनगर, सिहोर | भावनगर (गुज .) |
| 28-10-2014 | पटना, बरवाला, भदीयाड | लिमडी (गुज .) |
| 29-10-2014 | बगोदरा | अहमदाबाद (गुज .) |
| 30-10-2014 | गांधीनगर, नाडीयाड, आनंद | बडोदरा (गुज .) |
| 31-10-2014 | अंकलेश्वर | सुरत (गुज .) |
| 1-11-2014 | सोनगड, निजर, वेल्डा | नंदुरबार (महा.) |
| 2-11-2014 | शडवेल, कोरडे, निजामपुर, पिंपळनेर, साहनाबाद | साक्री (महा.) |
| 3-11-2014 | मालपुर, कासारे, पिंपळनेर, तिक्षे | सताना (महा.) |
| 4-11-2014 | मालेगांव, चांदवड | मनमाड (महा.) |
| 5-11-2014 | आकई, सावरगाव, येवला | कोपरगांव (महा.) |
| 6-11-2014 | काकणठाण, शींगन, पुलतांबा, उंदिरगाव | श्रीरामपुर (महा.) |
| 7-11-2014 | टाकळीभान,नेवासा, प्रवरा संगम | कायगांव (महा.) |
| 8-11-2014 | भेंडाळा, घोडेगांव, तांदुळवाडी, देवळी, नासुर स्टे, | दे.रंगारी (महा.) |
| 9-11-2014 | जांभळा, माळीवाडा, पडेगांव | औरंगाबाद (रांजणगाव) (महा.) |
| 10-11-2014 | दौलताबाद, मावसाला, खुलताबाद, वेरुळ, वाहेगांव | कन्नड (महा.) |
| 11-11-2014 | हिवरखेड, गवताळा, सायगव्हाण, वडगांव जाधव | नागद (महा.) |
| 12-11-2014 | हनुमंतखेडा, बनोटी, गोंदेगांव | पाचोरा (महा.) |
| 13-11-2014 | टोणगांव, भडगांव, पिंपरखेड, कोसादा, बनकुटा | यरंडोल (महा.) |
| 14-11-2014 | जळगांव, पिंपरी, वरुड बु ., पाळधी | भुसावळ (महा.) |
| 15-11-2014 | कुरे, गारखेडा, जामनेर | पहुर (महा.) |
| 16-11-2014 | वाकोद, पडदापुर, अजिंठा, शिवणा, मादीणी, धावडा | मढ(महा.) |
| 17-11-2014 | तरडखेडा, गुंमी, मासरुळ, धामणगांव, डोमरुळ, धाड | पिंपळगांव (रे) (महा.) |
| 18-11-2014 | हिसोडा खु, जळगांव सपकाळ, आन्वा, वाकडी वाडी | हसनाबाद (महा.) |
| 19-11-2014 | जवखेडा, चांदई, राजुर, केदरखेडा, कड पिंपळगांव | आसई (महा.) |
| 20-11-2014 | कोल्हापुर, माहोरा, बोरगांव, हिवरा, हारपाळा | लोणगांव (महा.) |
| 21-11-2014 | डोणगांव, आसरखेडा, देऊळगांव, मांडवा, शेळगांव | पांगरी (महा.) |
| 22-11-2014 | लालवाडी, अंबड, डाकलगांव, दाढेगांव, शिरसगांव | गेवराई (महा.) |
| 23-11-2014 | बीड, राजुरी, घाट सावळी, मैदा वडवणी, कुपा | माजलगांव (महा.) |
| 24-11-2014 | गंगा म्हसाला, ढोलेगांव, पात्री, मानवद रोड | परभणी (महा.) |

| | | |
|---|---|---|
| 25-11-2014 | ब्राम्हणगाव, भोखंड, ताडपागरी, दैठणा, रुमना | गंगाखेड (महा.) |
| 26-11-2014 | राणी सावरगांव, खंडाळी, उजणी, काळेगांव | अहमदपुर (महा.) |
| 27-11-2014 | चाकुर, अजणी, उमरगा, चापुली | लातुर रोड (महा.) |
| 28-11-2014 | माहसळगा, कोळवा, लातुर, काडगाव, कासार जवळा | आंबेजोगाई (महा.) |
| 29-11-2014 | मांजरसुबा, लोखंडी सावरगांव, केज, निकणुर | कुंतलगीरी (महा.) |
| 30-11-2014 | सरम कुंडी, फाटा, वाशी | भुम (महा.) |
| 1-12-2014 | चिंचोली, उलुप, बावी, पाथरुड, अंतरवली, खरडा | जामखेड (महा.) |
| 2-12-2014 | चिंचपुर, जामगांव, आष्टी, कडा, शंरी बु., कुठफळ | अहमदनगर (महा.) |
| 3-12-2014 | टाकळी, धोकेश्वर, आरेफाटा | कल्याण (महा.) |
| 5-12-2014 | पालघर | मुंबई (महा.) |
| 6-12-2014 | मुंबई | मुंबई (महा.) |
| 7-12-2014 | मुंबई | मुंबई (महा.) |
| 8-12-2014 | मुंबई | मुंबई (महा.) |
| 9-12-2014 | खारघर | तळेगांव दाभाडे (महा.) |
| 10-12-2014 | पुणे, नसरापुर | खण्डाळा (महा.) |
| 11-12-2014 | वाई | सातारा (महा.) |
| 12-12-2014 | कराड, कासेगांव, ईस्लामपुर | कोल्हापुर (महा.) |
| 13-12-2014 | सांगली, मिरज | कवठे महाकाळ (महा.) |
| 14-12-2014 | नगज, सांगोळे, पंढरपुर | मोहळ (महा.) |
| 15-12-2014 | सोलापुर | बिजापुर (कर्ना.) |
| 16-12-2014 | कामदगी, सिंदगी, गंगापुर | गुलबर्गा (कर्ना.) |
| 17-12-2014 | सर्गपुर, होमनाबाद, भालकी | बिदर (कर्ना.) |
| 18-12-2014 | वड्डी, मेडरु, जहीराबाद | संगारेड्डी (तेलंगाना) |
| 19-12-2014 | रामचंद्रपुरम | हैद्राबाद (तेलंगाना) |
| 20-12-2014 | जगतीयाल, आरमुर | करीमनगर (तेलंगाना) |
| 21-12-2014 | | निर्मल (तेलंगाना) |
| 22-12-2014 | म्हैसा | भोकर (महा.) |
| 23-12-2014 | धानोरा, बोरगांव, बायफंद, खडकी, येवली, उमरी | पाथरड (महा.) |
| 24-12-2014 | बळेगांव, हदगांव, रुई, धानोरा, हस्तरा, नेवरी, कोळी | मरटगा (महा.) |
| 25-12-2014 | येळेगांव, घोडा, कामठा, येलकी, | सुकळी (महा.) |
| 26-12-2014 | कुरुगाव, सोनी (रे), सिरड, लोहरा, औंधा | हिंगोली (महा.) |
| 27-12-2014 | राहोली, नरसी, (नामदेव), सेणगांव, आदेगांव | केन्द्रा (महा.) |
| 28-12-2014 | हराळ, रिसोड | गोवर्धन कोयाळी (महा.) |
| 29-12-2014 | मालेगांव, पातूर | सिंदखेड (महा.) |
| 30-12-2014 | अकोला, आपातापा, म्हैसांग, मुंगशी, सांवगा, भेटोरी | मुर्तिजापुर (महा.) |
| 31-12-2014 | नागठाना, नागोली, माना, जामठी, | |

| | | |
|---|---|---|
| | राजूरा, कुरुम, बडनेरा | अमरावती (महा.) |
| 1-1-2015 | नवसारी, रेवसा, वलगांव, सावुर | लसनापुर (महा.) |
| 2-1-2015 | आसेगांव, परतवाडा, कंरजगांव, हैदोसपुर | चांदुरबाजार (महा.) |
| 3-1-2015 | बेलोरा, रिध्दपुर, मोर्शी, धनोडी | सेंदुरजनाघाट (महा.) |
| 4-1-2015 | पुसला, सांवगी, मोवाड, हिवरा (पृथ्वीराज) | जाटलापुर लिंगा (महा.) |
| 5-1-2015 | मोवाड, खरसोली, जलालखेडा, नारसिंगी | रोहना (महा.) |
| 6-1-2015 | काटोल, रिधोरा, कोढांळी, गोंडखैरी, वडधामना, वानाडोंगरी | हिंगणा (महा.) |
| 7-1-2015 | नागपुर | नागपुर (महा.) |
| 8-1-2015 | नागपुर | नागपुर (महा.) |
| 9-1-2015 | नागपुर | नागपुर (महा.) |
| 10-1-2015 | नागपुर | नागपुर (महा.) |
| 11-1-2015 | नागपुर | नागपुर (महा.) |
| 12-1-2015 | विद्या नगर, कोराडी | खापरखेडा (महा.) |
| 13-1-2015 | पाटणसावंगी, सावनेर, तिष्टी | नरसाळाखापा (महा.) |
| 14-1-2015 | भागीमाहेरी, रामपुरी, मंगसा | केळवद (महा.) |
| 15-1-2015 | सातनुर, कोदाडोंगरी, सावंगा | पारडसिंगा (म.प्र.) |
| 16-1-2015 | खैरी, लोधीखेडा | ब्राम्हणपिपळा (म.प्र.) |
| 17-1-2015 | बोरगांव, जांभळापाणी, वाघोडा, घोतकी | जाखीवाडा (म.प्र.) |
| 18-1-2015 | रिधोरा, पिंपळा, ढोकडोह, सितापार | शेंबडा (म.प्र.) |
| 19-1-2015 | गांगतवाडा, पंडरी, चिरकुटाघोंदी | बानाबाकोडा (म.प्र.) |
| 20-1-2015 | सत्रापुर, सिंगपुर | मोरघोंदी (म.प्र.) |
| 22-1-2015 | बाळापुर, रायबासा, सावजपानी, भाजीपानी | गोविंदपुर (म.प्र.) |
| 23-1-2015 | अंबाडा, गायखुरी, नांदनवाडी, बंधान | टेमणीकला (म.प्र.) |
| 24-1-2015 | सिराटा, गोरलीखापा, भटेवाडी | चिचखेडा (म.प्र.) |
| 25-1-2015 | भंदारगोंदी, लवाना, गुजरखेडी | दाढीमेटा (म.प्र.) |
| 26-1-2015 | माळेगांव, खैरी, निलकंठ, धावडीखापा, भुली | सौंसर (म.प्र.) |
| 28-1-2015 | जलद प्रचार | |
| 29-1-2015 | जलद प्रचार | |
| 30-1-2015 | जलद प्रचार | |
| 31-1-2015 | जलद प्रचार | |

संपर्क : केशव सोमकुवर 09970616106, बुध्दप्रिय गायकवाड 09763643705

## गाडी नं.2

| दिनांक | भ्रमण क्षेत्र | विश्राम |
|---|---|---|
| 5-10-2014 | दीक्षाभुमी नागपुर, कामठी, कन्हान | देवलापार (महा.) |

| | | |
|---|---|---|
| 6-10-2014 | सिवनी, लखनादौन, धुमा | जबलपुर (म.प्र.) |
| 7-10-2014 | पनागर, सिहोरा, कटनी | रैपुरा (म.प्र.) |
| 8-10-2014 | शाहनगर | पवई (म.प्र.) |
| 9-10-2014 | असोली, सलेहा, नागौद, देवेन्द्र नगर | हिरापुर (म.प्र.) |
| 10-10-2014 | पन्ना | अजयगड (म.प्र.) |
| 1-10-2014 | चित्रकुट | कर्वी (उ.प्र.) |
| 12-10-2014 | मऊ | कोशांबी (उ.प्र.) |
| 13-10-2014 | कटरा, बमरौली | इलाहाबाद (उ.प्र.) |
| 14-10-2014 | रुपपुर, भेंदवाड | बुआपुर (प्रतापगढ) (उ.प्र.) |
| 15-10-2014 | जौनपुर, मिरपुर, मिरगंज | सारनाथ (उ.प्र.) |
| 16-10-2014 | दुरगौति | बमहुर (मोहनिया) (बिहार) |
| 17-10-2014 | | आमादी (बिहार) |
| 18-10-2014 | सासाराम | कुदरा (बिहार) |
| 19-10-2014 | डीहरी, औरंगाबाद | प्लांकी (बिहार) |
| 20-10-2014 | डोभी | बुध्दगया (बिहार) |
| 21-10-2014 | वजीरगंज | नवादा (बिहार) |
| 22-10-2014 | बिहार शरीफ | पटना (बिहार) |
| 23-10-2014 | हाजीपुर, लालगंज | वैशाली (बिहार) |
| 24-10-2014 | छपरा | बलिया (उ.प्र.) |
| 25-10-2014 | | देवरीया (उ.प्र.) |
| 26-10-2014 | | गोरखपुर (उ.प्र.) |
| 27-10-2014 | | खलिलाबाद (उ.प्र.) |
| 28-10-2014 | | सिध्दार्थ नगर (उ.प्र.) |
| 29-10-2014 | | आंबेडकर नगर (उ.प्र.) |
| 30-10-2014 | | बस्ती (उ.प्र.) |
| 31-10-2014 | | गोंडा (उ.प्र.) |
| 1-11-2014 | | लखनऊ (उ.प्र.) |
| 2-11-2014 | लखनऊ | लखनऊ (उ.प्र.) |
| 3-11-2014 | | सितापुर (उ.प्र.) |
| 4-11-2014 | | हरदोई (उ.प्र.) |
| 5-11-2014 | | फिरोजाबाद (उ.प्र.) |
| 6-11-2014 | | आगरा (राज .) |
| 7-11-2014 | | धौलपुर (राज .) |
| 8-11-2014 | ग्वालीयर, गोहद | भींड (उ.प्र.) |
| 10-11-2014 | इटावा | औरय्या (उ.प्र.) |
| 11-11-2014 | भोगनीपुर, पुरवरया, काल्पी | उरई (म.प्र.) |

| | | |
|---|---|---|
| 12-11-2014 | जालौन, मिनोहा | लाहर (म.प्र.) |
| 13-11-2014 | दबोह, भांडेर, इंदरगढ | दतिया (म.प्र.) |
| 14-11-2014 | झांसी | झांसी (म.प्र.) |
| 15-11-2014 | पिछोर | खनियाधाना (म.प्र.) |
| 16-11-2014 | चंदेरी, इसागढ | नईसराय (म.प्र.) |
| 17-11-2014 | मियाना | गुना (म.प्र.) |
| 18-11-2014 | अशोक नगर | मुंगावली (म.प्र.) |
| 19-11-2014 | बिना, खिमलासा | मालथौन (म.प्र.) |
| 20-11-2014 | खुरई | सागर (म.प्र.) |
| 21-11-2014 | करेली | नरसिंहपुर (म.प्र.) |
| 22-11-2014 | हर्रई, अमरवाडा | छिंदवाडा (म.प्र.) |
| 23-11-2014 | परासिया, रावणवाडा, बडकुही, जुन्नारदेव | दमुआ (म.प्र.) |
| 24-11-2014 | आमला, प्रभात पट्टन | तिवरखेड (म.प्र.) |
| 25-11-2014 | वरुड, आष्टी | थार (महा.) |
| 26-11-2014 | बोटोना, पार्डी | कारंजा (घाटगे) (महा.) |
| 27-11-2014 | तळेगांव, तिवसा | सिरसगांव (महा.) |
| 28-11-2014 | जळका, मार्डी, पिंपळखुटा, चांदुर रेल्वे | बग्गी (महा.) |
| 29-11-2014 | नांदगाव, खंडेश्वर, सेलु, चिखली | कंझारा (महा.) |
| 30-11-2014 | दारव्हा, जवळा, आर्णि | तळणी (महा.) |
| 1-12-2014 | पारवा, पांढरकवडा, बोरी, जामनी | मांडवा (महा.) |
| 2-12-2014 | सपल्ली, समरवेली, मांडवी, दुर्गापुर, मुकुटबन, वणी | वरोरा (महा.) |
| 3-12-2014 | निलजाई, सोईट, केळी, माजरा, बोर्डा, पावना | वडगांव (महा.) |
| 4-12-2014 | घुघ्घुस, कोडसी, कोरपना, चनई | जिवती (महा.) |
| 5-12-2014 | मानिकगड, येलापर, गडचांदुर, शेणगांव, पाचगांव, राजरा, कोठारी | बल्लारपुर (महा.) |
| 6-12-2014 | विसापुर, चंद्रपुर, भद्रावती, डिफेन्स, खानगांव, नेरी | भिसी (महा.) |
| 7-12-2014 | चिमुर, शंकरपुर, काम्पा टेम्पा, नागभीड | सिंदेवाही (महा.) |
| 8-12-2014 | मुल, बैम्बाळ, केळझर | सुशी (दाबगांव) (महा.) |
| 9-12-2014 | देवाळा, पोम्भुर्णा, बोरगांव | गोंडपिपरी (महा.) |
| 10-12-2014 | आष्टी, अहेरी | आलापल्ली (महा.) |
| 11-12-2014 | वायगाव | चामोर्शी (महा.) |
| 12-12-2014 | गडचिरोली, पोर्ला | आरमोरी (महा.) |
| 13-12-2014 | कुरखेडा, वडसा | ब्रम्हपुरी (महा.) |
| 14-12-2014 | नांदगांव, मडघाट | लांखादुर (महा.) |
| 15-12-2014 | दिघोरी, पालांदुर | लाखनी (महा.) |
| 16-12-2014 | लाखोरी, सालेभाटा, निलाघोंदी, साकोली | सेंदुरवाफा (महा.) |

| | | |
|---|---|---|
| 17-12-2014 | सौदंड, डव्वा, गोरेगांव | गोंदिया (महा.) |
| 18-12-2014 | गुदमा | आमगाव (महा.) |
| 19-12-2014 | सालेकसा, बोरतलाव | डोंगरगढ(छ.ग.) |
| 20-12-2014 | | राजनांदगाव (छ.ग.) |
| 21-12-2014 | डोंगरगाव | चौकी (छ.ग.) |
| 22-12-2014 | बालोद, दुर्ग | भिलाई (छ.ग.) |
| 23-12-2014 | कुम्हारी | रायपुर (छ.ग.) |
| 24-12-2014 | आरंग | महासमुंद (छ.ग.) |
| 25-12-2014 | बसना, सरायपाली | झारबंद (उडिसा) |
| 26-12-2014 | | बरगढ (उडिसा) |
| 27-12-2014 | | बलांगीर (उडिसा) |
| 28-12-2014 | | सनपुर (उडिसा) |
| 29-12-2014 | | संबलपुर (उडिसा) |
| 30-12-2014 | | झारसुगडा (उडिसा) |
| 31-12-2014 | | रायगड (छ.ग.) |
| 1-1-2015 | धाल, कुदमुरा, उरगा, मानिकपुर, तुलसीनगर, कोरबा | ढोंढ़ीपारा (बुध्द विहार)(छ.ग.) |
| 2-1-2015 | चांपा, बाराद्वार सभेली, सम्ती, आमनडुला, मालखरौदा बडे | रबेली (छ.ग.) |
| 3-1-2015 | डमरा, चन्द्रपुर, सारंगढ, कोसीर | सरधाभाटा (छ.ग.) |
| 4-1-2015 | ओडकावन, हसौद, जैजेपुर, सेंदरी, कांशीगढ, जांजगीर, धारासीव | बुढ़ेना (छ.ग.) |
| 5-1-2015 | तनौद, भुईगांव, भुडपार, हिर्री, कोसीर, ढाबाडी, बोरसी, कोसा | भदौरा (छ.ग.) |
| 6-1-2015 | चिल्हीरी, पंधी, मटियारी, सिपत, पसरा, जलसो, भरारी | बिलासपुर (छ.ग.) |
| 7-1-2015 | मुंगेली | कवर्धा (छ.ग.) |
| 8-1-2015 | लाहोरा, गंडई | दमोह (म.प्र.) |
| 9-1-2015 | मलाजखंड | बैहर (म.प्र.) |
| 10-1-2015 | लामटा | मंडला (म.प्र.) |
| 11-1-2015 | बम्हणी, जामगांव, ठिठोरी, गोकुलठाना | नैनपुर (म.प्र.) |
| 12-1-2015 | केवलारी, उगली, धुरवाडा, खामी | सारसडोल (म.प्र.) |
| 13-1-2015 | कजंई, बहरई, लालबर्रा, पांडेवाणी | बालाघाट (म.प्र.) |
| 14-1-2015 | वारासीवनी, अजानसी, उंमरी, कटंगी | सेलुवा (म.प्र.) |
| 15-1-2015 | खजरी, सिताखोह, मोहगांव, नांदी, तिरोडी | महकेपार (म.प्र.) |
| 16-1-2015 | तुमसर | मोहाडी (महा) |

| | | |
|---|---|---|
| 17-1-2015 | भंडारा, अढ्याळ, | पवनी (महा.) |
| 18-1-2015 | भिवापुर, उमरेड | कुही (महा.) |
| 19-1-2015 | कामठी, पारसिवनी | सालई (महा.) |
| 20-1-2015 | खैरी (पंजाबराव), उमरी, हिंगणा, खापा, | |
| | खुबारा, रिसाळा | बडेगाव (महा.) |
| 21-1-2015 | टेंभुरडोह, सिरोंजी, सुखानी, सिंदेवानी, वैरागड | चंद्रिकापुर (म.प्र.) |
| 22-1-2015 | सोनपुर, धनेगांव, खमारपानी, बिछुआ, | |
| | तनसरा, सिलेवाणी | खापा (म.प्र.) |
| 23-1-2015 | कन्हानपिपळा, रामाकोना, देवी, घडेला, | |
| | बडोसा, घोटनी, लोहांगी | वग्गुबिछवा (म.प्र.) |
| 4-1-2015 | कुड्डम, रानपेठ, कोपरावाडी, सिलोरा | जोबनी (म.प्र.) |
| 25-1-2015 | निमनी, बेरडी | काजळवानी (म.प्र.) |
| 26-1-2015 | सौंसर | सौंसर (म.प्र.) |
| 27-1-2015 | जलद प्रचार | |
| 28-1-2015 | जलद प्रचार | |
| 29-1-2015 | जलद प्रचार | |
| 30-1-2015 | जलद प्रचार | |
| 31-1-2015 | जलद प्रचार | |

# मैं सम्पूर्ण भारत बौद्धमय करूंगा !

## -डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर

पंजी. क्र. 04/17/05/07807/04

# बुध्द धम्म प्रचार समिति के कार्य

शाखा-कार्यालय : प्रज्ञा प्रिन्टर्स, केशव कॉम्पलेक्स, 10 नं. पुलीया, कामठी रोड, नागपुर-17.
9970616106, 9423102300, 9423630821,
9422115487, 9766366288, 9921546275,
9422137540, 9423111353, 9422126482,
9860282936, 9595890302, 9326173755

प्रिय भाईयों और बहनों,

विगत 9 वर्षों से बुध्द धम्म प्रचार समिति बुध्द धम्म का प्रचार और प्रसार कर रही है। समिति के उद्देश्य निम्नानुसार है।

(1) भारत में बुद्ध धम्म का प्रचार करना।
(2) बुद्ध धम्म प्रशिक्षण केन्द्र का निर्माण करना और उसे संचालित करना।
(3) प्रशिक्षित धम्म प्रचारकों के माध्यम से धम्म प्रचार करना ताकि समता, स्वतंत्रता, बंधुत्व और न्याय पर आधारित समाज व्यवस्था स्थापित हो।
(4) संशोधन और विश्लेषण शाखा, अनाथालय, दवाखाना, शैक्षणिक संस्था और कानूनी सलाह केन्द्र स्थापित करना।
(5) बुद्ध धम्म के प्रचार के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम, उत्सव,महोत्सव, सेमिनार, प्रशिक्षण, कार्यशाला इत्यादि आयोजित करना।

समिति के सिमित कार्यकर्ता है परन्तु समिति का कार्य निरंतर चलते रहता है। वर्तमान मे समिति बुध्द धम्म प्रचार का कार्य किस प्रकार कर रही है उसका संक्षिप्त विवरण आपकी जानकारी हेतु दिया जा रहा है।

**1. अखिल भारतीय धम्म ज्ञान परिक्षा**

बाबासाहेब द्वारा लिखित ग्रंथ 'बुध्द और उनका धम्म' पर आधारित अखिल भारतीय स्तर पर हर वर्ष अगस्त माह मे धम्म ज्ञान परिक्षा का आयोजन किया जाता है। आवेदन फार्म और परीक्षा संबंधी जानकारी हर वर्ष धम्मचक्र प्रवर्तन दिन से उपलब्ध कराई जाती है। दीक्षाभूमि, नागपुर पर स्टॉल नं.165, 166 से तथा प्रज्ञा प्रिंटर्स, 10 नंबर पुलिया, कामठी रोड, नागपुर से आवेदन फार्म और परीक्षा संबंधी जानकारी उपलब्ध की जाती है। हर राज्य से सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले परिक्षार्थी को प्रत्येकी 2000 रुपये का पुरस्कार प्रदान किया जाता है और 25 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वालों को प्रमाण पत्र दिया जाता है। इस वर्ष 10 अगस्त 2014 को महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, छत्तिसगढ, उत्तरप्रदेश, और गुजरात राज्यों के लगभग सौ से अधिक केंन्द्रों पर इस परीक्षा का आयोजन किया गया। समिति का उद्देश्य यह है कि, लोगों ने 'बुध्द और उनका धम्म' इस ग्रंथ का अध्ययन करना चाहिये।

**2. प्रशिक्षण शिविर**

आंबेडकरी आंदोलन और बुध्द धम्म का सही-सही ज्ञान कार्यकर्ताओं को होना चाहिये इसलिए समिति द्वारा प्रशिक्षण शिविर आयोजीत किये जाते है। इस वर्ष नागार्जुन महाविहार, रामटेक मे 6 से 10 अप्रैल तक कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया था। इस शिविर मे महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, छत्तिसगढ, आंध्रप्रदेश और गुजरात के कार्यकर्ताओं ने भाग लिया था। राजस्थान के उदयपुर मे 17 से 19 मई तक प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया जिसमें 3 राज्यों के कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। छत्तिसगढ राज्य स्तरीय शिविर 21 और 22 जून को आयोजित किया गया जिसमें 97 कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। गुजरात और दिल्ली के कार्यकर्ताओं द्वारा प्रशिक्षण शिविर आयोजित करने की ईच्छा जाहीर की है। इसलिए निकट भविष्य में इन राज्यों मे प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये जा सकते है।

**3. बुद्ध धम्म संदेश रैली**

पिछले छह वर्षों से भारत के विभिन्न भागों मे रैलीयां आयोजित कर धम्म प्रचार किया गया। पिछले वर्ष 15 अक्टूबर 2013 से 11 फरवरी 2014 तक दो वाहनों के माध्यम से निरंतर 4 माह तक महाराष्ट्र, गुजरात, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, छत्तिसगढ, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, बिहार और राजस्थान के हजारो गांवों और शहरों में कार्यकर्ताओं ने आंबेडकरी विचारधारा तथा बुध्द धम्म पर प्रबोधन किया और साहित्य वितरित किया। समिति का उद्देश्य यह है कि, अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचकर, खासकर गांव के लोगों तक पहुंचकर, उन्हें बाबासाहेब के आंदोलन और बुध्द धम्म को समझायें। हर वर्ष प्रचार का क्षेत्र बढाया जाता है। इस वर्ष कम से कम 10 राज्यों में धम्म प्रचार किया जायेगा। धम्मचक्र प्रवर्तन दिन के बाद 5 अक्तुबर 2014 से दीक्षाभूमि, नागपुर से रैली प्रारंभ होगी और 31 जनवरी 2015 को उसका समापन होगा।

**4. बुद्ध धम्म महोत्सव**

रैली समाप्त होने के तुरंत बाद माघ पुर्णिमा के अवसर पर तिन दिवसीय बुध्द धम्म महोत्सव का भव्य आयोजन नागपुर से 70 कि .मि. स्थित काजलवाणी की धम्मगिरि पर आयोजीत किया जाता है। धम्मगिरि मध्यप्रदेश के छिंदवाडा जिले के सौसर तहसिल मे है। अगला महोत्सव 1,2,3 फरवरी 2015 को आयोजित किया गया है ।

समाज के विभिन्न वर्गोंद्वारा एकसाथ मिलकर विद्वानों से और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से बुध्द और बाबासाहेब के

विचार सुने और जागृत हो, यह इस आयोजन का उद्देश्य है।

**5. साहित्य प्रकाशन**

(1) प्रज्ञा प्रकाश (त्रैमासीक पत्रिका) : बुध्द धम्म प्रचार समिति द्वारा 'प्रज्ञा प्रकाश' नाम की त्रैमासीक पत्रिका 20 मार्च 2010 से प्रारंभ की है जो नियमित रुप से मराठी और हिन्दी भाषा मे प्रकाशीत हो रही है। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के विचार सर्वोत्तम है जिनकी बहुसंख्य लोगों को जानकारी नही है, इसलिए इस पत्रिका मे केवल बाबासाहेब का लिखान और भाषण को छापा जाता है, अन्य किसी के लेख नही छापे जाते। हमारे देश मे ब्राम्हणवादी ताकतें सक्रीय है, इसे सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, शैक्षणिक, धार्मिक, स्वास्थ्य और जीवन के अन्य क्षेत्र मे हो रही घटनाओं से जाना जा सकता है। ब्राम्हणवादी व्यवस्था के शिकार लोगों के लिए वह आईने का काम करती है। इसलिए इस पत्रिका मे 'वर्तमान घटनाक्रम' को विस्तृत रुपसे दिया जाता है। सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दिए गए महत्वपुर्ण निर्णयों की जानकारी भी इस पत्रिका मे दी जाती है।

(2) बुध्द संदेश और 22 प्रतिज्ञा : डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर द्वारा लिखित ग्रंथ, 'बुध्द और उनका धम्म' का संक्षिप्त विवरण और बाबासाहेब द्वारा दी गई बाईस प्रतिज्ञाओं को उदाहरण के साथ देते हुये एक छोटी पाकीट बुक हिन्दी, मराठी और अंग्रेजी भाषा मे प्रकाशित की गई है। यह पाकीट बुक बुध्द धम्म की प्रारंभिक जानकारी के लिए उपयोगी है।

(3) बुध्द संदेश और 22 प्रतिज्ञा की डी वी डी : यह डीवीडी हिन्दी मे बनाई गई है, जिसे देखने और सुनने से बुध्द धम्म को आसानी से समझा जा सकता है। यह प्रश्नोत्तर के रुप में है।

(4) 'भारतीय संविधान के महत्वपुर्ण अंश' : यह पाकीट बुक आम आदमी को संविधान की कुछ जानकारी हो इस उद्देश्य से प्रकाशित की गई है।

(5) डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर द्वारा लिखित 'बुध्द और उनका धम्म' छोटे साईज में हिन्दी, मराठी और अंग्रेजी भाषा में तथा 'बुध्द अथवा कार्ल मार्क्स' हिन्दी भाषा में प्रकाशित किया गया है।

(6) समिति द्वारा हर वर्ष आकर्षक कॅलेंडर छपाया जाता है। इस कॅलेंडर मे बाबासाहेब के आंदोलन का तारिखवार वर्णन और बुध्द तथा बाबासाहेब के विचार होते है।

(7) आयु. वाय.जी.अंभोरे द्वारा लिखित "विपश्यना आणि संमोहनाचा भंडाफोड" (मराठी) समिति के पास उपलब्ध है।

**6. महाराष्ट्र सरकार तथा केन्द्र सरकार द्वारा बाबासाहेब का साहित्य प्रकाशीत करने हेतु स्वाक्षरी अभियान**

महाराष्ट्र सरकार द्वारा बाबासाहेब के राइटींग एण्ड स्पीचेस के 22 खंड प्रकाशित किये गए है। 22 वे खंड में त्रुटीयां है और वह रीप्रिंट होना है। पिछले अनेक वर्षों से बाबासाहेब के लिखान और भाषण के खंड प्रकाशित नहीं हुये है, इसलिए उनके मौलिक विचारों से जनता वंचित है। बाबासाहेब का अप्रकाशित साहित्य राज्य और केन्द्र सरकार द्वारा प्रकाशित किया जाये इसलिए लाखों हस्ताक्षर इकठ्ठा किये जा रहे है, जिन्हे महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री तथा प्रधानमंत्री को प्रतिनिधी मंडल के माध्यम से सौंपा जायेगा और बाबासाहेब का अप्रकाशित साहित्य शीघ्र प्रकाशित हो इस दिशा मे सार्थक कोशीश की जायेगी।

**7. आगमी कार्य**

सिमित कार्यकर्ता और सिमित दानराशी का अधिकतम उपयोग करके समिति उपरोक्त कार्य कर रही है। मध्यप्रदेश सरकार की ओर से भूमि आबंटीत होती है तो, बाबासाहेब की बुध्दीष्ट सेमिनरी की सोच के अनुसार, बुध्द धम्म प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किया जायेगा और संचालित किया जायेगा।

भारत मे समता, स्वतंत्रता, बंधुत्व और न्याय पर आधारित व्यवस्था प्रस्थापित नहीं होने का सबसे बडा रोडा जाति व्यवस्था है। बाबासाहेब चाहते थे जाति जड़ से ही समाप्त हो इसलिए इस संबंध में उन्होंने लिखान किया और आंदोलन चलाया। भारतीय संविधान में नागरिकों को मुलभूत अधिकार दिये गये है परन्तु जब से इस देश में संविधान लागु हुआ तब से अब तक मुलभूत अधिकारों का हनन हो रहा है। इन मुलभूत अधिकारों का हनन होने का मुख्य कारण जाति ही है। संविधान के अनुच्छेद 14 से 17 और 19 से 32 तक को पढे और वास्तविक स्थिति को देखे तो हर कोई इसी निष्कर्ष पर पहुंचेगा। इसलिए जाति निर्मुलन के लिए आंदोलन करना जरुरी है।

बुध्द धम्म प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना और जाति निर्मुलन के लिए आंदोलन यह दो कार्य करना अत्यंत जरुरी है। इन से धम्म का प्रचार और प्रसार करने मे बडी सहायता होगी और भारत बौध्दमय करने मे आसानी होगी।

वर्तमान परिस्थिति में धम्म प्रचार कार्य कठीन है परन्तु मानव कल्याण के लिए उसे करना जरुरी है। यदि हम दृढसंकल्पीत है और विपरीत परिस्थिति में अडिग रहकर निरंतर कार्य करते है तो हम अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकते है। यह मानवता की बहुत बड़ी सेवा होगी और हमारा जीवन सार्थक होगा।